जगत दयावान (रहमत ए आलम)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन परिचय

लेखक : सय्यद सना उल्लाह काज़मी

باسمه الموفق

الحمد لأهله والصلاه على أهلها ، أما بعد

जब किसी इंसान को उसके तुच्छ जीवन में किसी आदरणीय और आदर्श कार्य में योगदान का सौभाग्य प्राप्त होता है तो जो एहसास उस व्यक्ति को होता है उसकी अनुभूति मुझे इन शब्दों को लिखते हुए भली-भांति हो रही है । तमाम तारीफें और प्रशंसा सिर्फ अल्लाह के लिए है के उसने मुझ जैसे को अपने प्यारे और सरकार ए दो आलम नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के जीवन परिचय पर हिंदी पढ़ने वालों के लिए एक छोटी और आसान किताब लिखवाने का सौभाग्य प्रदान करके मेरे जीवन को अर्थ पूर्ण कर दिया । इसके लिए मैं खुदा का जितना शुक्र अदा करूं वह कम है । बस अल्लाह से यही दुआ है कि इस किताब को पढ़ने वालों को नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के बारे में और ज्यादा जानकारी हासिल करने की तौफीक अता फरमाए और मुझ पर इसी तरह अपनी कृपा दृष्टि बनाए

रखें और मुझसे अपने दीन के वास्ते कोई काम ले ले के जिससे मेरा जीवन सफल हो जाए ।

मै यहाँ दो और व्यक्तियों का आभार प्रकट करना चाहूंगा । एक मेरी माँ के जिनकी कोशिश और मेहनत से में इस काबिल हुआ के इतना बड़ा काम अल्लाह ने मेरे ज़रिये करा दिया । और दूसरे वक़्फ़ दारुल उलूम के शैख़ उल हदीस , और जामिया इमाम मुहम्मद अनवर शाह के संचालक हज़रत मौलाना अहमद खिज़र शाह साहब मसूदी के जिनकी खबरगीरी और हर मुश्किल में इमदाद के कारण आज कुछ लिखने और कहने के लायक़ हुआ हूं , अल्लाह इन दोनों शख्सियतों का साया मुझ पर ता देर रखे और अल्लाह अपनी खास कृपा दिर्ष्टि इनपे बनाये रखे । आमीन

सय्यद सना उल्लाह काज़मी

بسم الله الرحمن الرحيم

शुरू अल्लाह के नाम से जो बहुत दयालु और अत्यंत कृपालु है

मुल्क अरब

हमारे मुल्क के पश्चिम में समंदर बहता है । समंदर के एक किनारे पर हिंदुस्तान तथा दूसरे किनारे पर अरब का मुल्क है । अरब की पश्चिम की ओर लाल सागर और उसके पार मिस्र स्थित है । दक्षिण में ओमान तथा

यमन और उनके दक्षिण में हिंद महासागर है । उत्तर में इराक और जॉर्डन की सीमा लगती है, जबकि पूरब में फारस की खाड़ी, कुवैत तथा संयुक्त अरब अमीरात हैं ।

इस्लाम से पूर्व अरब की स्थिति

उस समय अरब के लोग क़बीलों की शक्ल में रहा करते थे । अरब का बड़ा हिस्सा पहाड़ी और रेतीला होने के कारण खेती-बाड़ी ना होने के बराबर थी । इसलिए अरब के अक्सर लोग या तो ऊंट,भेड़,बकरियां आदि जानवर पाल कर, गुजर-बसर करते थे या मुसाफिर क़ाफ़िलों के साथ लूटपाट करके । अगर किसी के हालात बेहतर होते तो वे आस-पास के मुल्कों में जाकर व्यापार करते थे । अरब का केंद्र मक्का शहर था । जहां काबा यानी अल्लाह का घर स्थित है । काबा अल्लाह के एक नबी हज़रत इब्राहिम और उनके बेटे इस्माइल ने ईसा पूर्व अल्लाह के हुक्म से बनाया था । अक्सर अरब के लोग इन्हीं हज़रत इस्माइल की औलाद हैं । अरब के लोगों ने हज़रत इब्राहिम और हज़रत इस्माइल के बताए सच्चे मज़हब को तो भुला दिया, लेकिन उनके बनाए काबा की वे बड़ी इज़्ज़त करते थे । हर साल पूरे अरब से लोग काबे के दर्शन को आते थे । उस समय का अरब समाज हर प्रकार की ख़राबियों से भरा पड़ा था । धार्मिक स्थिति की बात करें तो हर वह चीज जिससे लोगों को थोड़ा फ़ायदा या नुक़सान पहुंचता,उसे पूजने लगते । हर क़बीले के अपने अलग-अलग बुत थे, 360 बुत तो उन लोगों ने

सिर्फ़ काबे में रख छोड़े थे । वह क़ौमें जिनके पास अल्लाह ने गुज़रे ज़माने में, अपने नबियों के जरिए संदेश भेजे थे, यानी यहूदी और ईसाई, अपने नबियों की लाई हुई तालीम के कुछ हिस्सों को भुलाकर और कुछ को अपने फ़ायदों के लिए बदलकर, ख़ुदा की भेजी सच्ची तालीम को एक तरह से नष्ट कर चुके थे । दूसरी ओर सामाजिक हालात यह थे, कि लोग छोटी-छोटी बातों पर एक दूसरे का ख़ून बहाने से नहीं चूकते थे । हल्की-फुल्की गरमा गरमी कब क़बीलों की जंग में बदल जाती, कोई नहीं कह सकता था । जुआ, शराब,चोरी,डकैती जैसे आम बात थी । लड़कियों को पैदा होते ही ज़िंदा ज़मीन में दफ़्न कर देते और नस्ल चलाने के लिए अगर ज़िंदा छोड़ भी देते, तो उनके साथ जानवरों जैसा सलूक करते थे । यह सिर्फ़ अरब के हालात ना थे, बल्कि बाक़ी दुनिया इस से भी बुरे हालात से गुज़र रही थी । इन्हीं कारणों के चलते अल्लाह ने आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम को नबी बनाकर,हम तक अपना कलाम यानी क़ुरआन भेजा, जिसमें एक ओर एक सच्चे खुदा को पाने का रास्ता बताया गया और दूसरी तरफ समाज को सभ्य और प्रगतिशील बनाने के कानून दिए गए ।

नबी ए पाक का ख़ानदान और नसब शरीफ़

मुल्क अरब के शहर मक्का में क़बीला क़ुरैश सबसे ताकतवर और सब क़बीलों का सरदार माना जाता था । आप सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम उसी

क़बीले की एक शाख़ बनु हाशिम से थे । आप स० के परदादा का नाम हाशिम था, उनके नाम पर उनकी औलाद बनु हाशिम कहलाती थी ।

आपके वालिद ए मोहतरम (पिताश्री) का नाम अब्दुल्लाह और वालिदा मोहतरमा (माता श्री) का नाम आमना था । आपके दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब, दादी का फातमा, नाना का वहब और नानी का बिर्रा था ।

वालिद की तरफ से आप का नसब (खानदानी सिलसिला) इस तरह है : मोहम्मद बिन (पुत्र) अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मुनाफ बिन क़ुसे बिन किलाब बिन मुर्रा बिन काब बिन लुई बिन गालिब बिन फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़् बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुद्रिका बिन इलियास बिन मुज़र बिन निज़ार बिन मअद बिन अदनान । यहां तक आपका नसब सही तरीकों से साबित है, इसके बाद इख्तेलाफ़ (मतभेद) होने की वजह से छोड़ दिया जाता है ।

वालिदा की तरफ से आपका नसब यह है : मोहम्मद बिन आमना बिनते (पुत्री) वहब बिन अब्द मुनाफ बिन ज़ुह्रा बिन किलाब बिन मुर्रा । किलाब बिन मुर्रा पर आपके वालीदैन (माता-पिता) का नसब एक हो जाता है । हुजूर पाक स० अपने वालीदैन की इकलौती औलाद थे । आपका ना कोई सगा भाई था और ना कोई बहन ।

"आप स० के चाचा और फूफीयां"

आप स० के 9 चाचा थे :- हारिस, ज़ुबैर,जह्ल,ज़िरार,मुक़व्विम,अबु लहब, अब्बास, हमज़ा ,अबु तालिब । हारिस सबसे बड़े और अब्बास सबसे छोटे थे । आपके सिर्फ दो चाचा हमज़ा और अब्बास इस्लाम लाए ।
आप स० की 6 फूफीयां थीं :- सफ़िया, उमेमा,उम्मे हकीम, बिर्रा, आतिका ।
सिर्फ़ हज़रत सफ़िया का इस्लाम साबित है ।

जन्म से पहले आप की बरकतें

हुज़ूरे पाक स० की वालिदा का बयान है,जब आप स० उनके गर्भ में थे , तो उन्हें स्वप्न में खुशखबरी दी गई,कि तुम इस उम्मत के सरदार को जन्म दोगी,जब वह पैदा हों,तो तुम यह दुआ करना "मैं इनको ए खुदा की पनाह (शरण) में देती हूं" और इनका नाम मोहम्मद रखना ।
और फ़रमाती हैं,कि आपके गर्भ में आने के बाद मैंने एक नूर (रोशनी) देखा,जिससे बसरा शहर (मुल्क शाम का इलाका) के महल,मेरे सामने आ गए । और ये भी, के मैने किसी औरत को कोई गर्भ नही देखा, जो आप स० से हल्का और आसान हो । यानी गर्भावस्था में जो मतली या सुस्ती वगैरा आमतौर से औरतों को रहती है,वो उन्हें नही हुई ।

आप स० की विलादत (जन्म)

इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है,कि आपका जन्म रबी उल अव्वल (इस्लामी महीने का नाम) में,उस साल हुआ, जिसमें असहाब ए फ़ील का क़िस्सा हुआ । यानी जिस साल यमन के बादशाह अबरहा ने, हाथियों के साथ काबे पर हमला किया और अल्लाह ने अबाबील जैसे छोटे परिंदों के ज़रिए उन हाथियों को शिकस्त दी (पराजित किया) । खैर असहाब ए फ़ील के क़िस्से के 50 या 55 दिन बाद रबी उल अव्वल की 8 तारीख़ और सन ईसवी के मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ईसवी, सोमवार के दिन, सुबह सादिक (सवेरे से पहले) के वक्त, अबू तालिब के घर में, आपका जन्म हुआ ।

इधर आप स० दुनिया में तशरीफ़ लाए और उधर मुल्क फ़ारस में किसरा (फ़ारस के बादशाह की उपाधि) के महल में, ज़लज़ला आया, जिससे उसके 14 कगंरे गिर गए, फ़ारस के आतिश कदे (अग्नि कुंड) की,वह आग जो 1000 साल से कभी ना बुझी थी, खुद-ब-खुद ठंडी पड़ गई, जिसका बुझना असल में आतिश परस्ती (अग्नि पूजन) और हर तरह की गुमराही के ख़ात्में का ऐलान था ।

वालिद की वफ़ात (मृत्यु)

आप स० अभी पैदा भी ना हुए थे,के आपके वालिद अब्दुल्लाह को, आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने हुकुम दिया, कि वह मदीना से खजूरे ले आए । अब्दुल्लाह आपको,बीबी आमना के गर्भ में छोड़ कर चले गए, और मदीना में

अपने ननिहाल में बीमार होकर, 25 वर्ष की, आयु में वफ़ात पा गए । यूं वालिद का साया पैदाइश से पहले ही , आपके सर से उठ गया । आपके वालिद ने आपके लिए मीरास (जायदाद) में 5 ऊंट और एक कनीज़ (गुलाम औरत) के सिवा कुछ नहीं छोड़ा, कनीज़ का नाम उम्मे ऐमन था ।

रज़ाअत (दूध पीना) और बचपन

सबसे पहले आप स० को आपकी वालिदा ने और चंद रोज़ बाद अबु लहब (आपका चाचा) की बांदी सोबिया ने दूध पिलाया, उसके बाद यह नेमत क़बीला बनी साद की एक खुशनसीब औरत हलीमा बिनते अबी ज़ुऐब को हासिल हुई ।

अरब के लोगों की आम आदत थी के वे बच्चों को दूध पिलवाने के लिए आसपास के देहात में भेज देते थे । जिससे बच्चों की जिस्मानी सेहत भी अच्छी हो जाती थी और वे खालिस अरबी जुबान भी सीख जाते थे । इसीलिए गांव की औरतें अक्सर शहर में दूध पीने वाले बच्चों को लेने के लिए आया करती थीं ।
हजरत हलीमा का बयान है कि मैं ताईफ़ (मक्का के निकट एक जगह है) से बनी साद की औरतों के साथ दूध पीने वाले बच्चों की तलाश में मक्का को चली, उस साल ताईफ़ में अकाल पड़ा हुआ था । मेरी गोद में एक बच्चा था मगर फ़क्रों फ़ाक़ा (खाने-पीने की कमी) की वजह से इतना दूध ना था जो

उसको काफ़ी हो सके, रात भर वह भूख से तड़पता और हम उसकी वजह से बैठकर रात गुजारते थे । हमारे पास एक ऊंटनी भी थी मगर उसके भी दूध ना था । मक्का के सफर में जिस गधे पर मैं सवार थी वह भी इतना कमजोर था कि सबके साथ नहीं चल सकता था । क़ाफ़ले वाले भी उस से तंग आ गए थे । आखिरकार यह मुश्किल सफर पूरा हुआ मक्का पहुंचे तो रसूल अल्लाह स० को जो औरत देखती और यह सुनती कि आप यतीम हैं तो कोई क़ुबूल ना करती क्योंकि ज़्यादा इनाम (उपहार) की उम्मीद ना थी । उधर हलीमा की क़िस्मत का सितारा चमक रहा था उनके दूध की कमी उनके लिए रहमत बन गई । क्योंकि दूध कम देखकर किसी ने उनको अपना बच्चा देना गवारा ना किया ।
हलीमा फ़रमाती है कि मैंने अपने शौहर (पति) से कहा यह तो अच्छा नहीं लगता कि मैं खाली हाथ लौटूं, इससे तो यही बेहतर है कि मैं इस यतीम को ले चलूं ,मेरे शौहर ने ये बात मान ली और मैं आपको ले आई । फ़िरुदगाह (डेरे) पर लाकर दूध पिलाने बैठी , तो बरकते जाहिर होनी शुरू हुईं,इतना दूध उतरा के आपने और आपके दूध शरीक भाई (हलीमा के बेटे) ने भी खूब पेट भर के पिया और दोनों आराम से सो गए । उधर ऊंटनी को देखा तो उसके थन दूध से भरे हुए थे । मेरे शौहर ने उसका दूध निकाला और हम सब ने खूब अच्छी तरह पेट भर के पिया,और पूरी रात आराम से गुजारी । मुद्दतों बाद यह पहली रात थी कि हम सुकून से रात भर सोए । अब तो मेरा शौहर भी कहने लगा कि तुम तो बड़ा मुबारक बच्चा लाई हो । मैंने कहा मुझे

भी यही उम्मीद थी कि यह बहुत मुबारक लड़का है ।
फिर हम मक्का से रवाना हुए। मैं आपको गोद में लेकर उसी गधे पर सवार हुई मगर इस बार खुदा की कुदरत का यह तमाशा देखती हूं कि अब वो इतना तेज चलता है कि किसी की सवारी उसको नहीं पकड़ सकती मेरे साथ की औरतें हैरानी से कहने लगी कि क्या यह वही है जिस पर तुम आई थी ?
बहरहाल सफ़र पूरा हुआ । हम घर पहुंचे तो अकाल होने के कारण तमाम दूध के जानवर दूध से खाली थे । लेकिन मेरा घर में दाखिल होना था और मेरी बकरियों का दूध से भरना । अब रोज मेरी बकरियां दूध से भरी आती थी और किसी को अपने जानवरों से एक क़तरा भी दूध नहीं मिलता था ।
मेरे क़बीले के लोगों ने अपने चरवाहों (बकरियां चराने वाले) से कहा कि तुम भी अपने जानवर उसी जगह चराया करो जहां हलीमा की बकरियां चरती हैं ,मगर बात यहां जंगल और चरागाह (घास चरने की जगह) की न थी ।
बल्कि यह तो आप स० की बरकत थी । वह भला इस बरकत को कहां से लाते । इसीलिए एक ही जगह चरने के बाद भी उनके जानवर दूध से खाली और मेरी बकरियां भरी हुई आती थीं ।
इसी तरह हम लगातार आपकी बरकते देखते रहे यहां तक के 2 साल पूरे हो गए । और मैंने आपका दूध छुड़ा दिया । आपका शारीरिक विकास और सब बच्चों से अच्छा था । आप 2 साल की उम्र में 4 साल के मालूम होने लगे थे ।
अब हम कायदे के मुताबिक़ आपको आपकी वालिदा के पास लाए मगर

आपकी बरकतों की वजह से आपको छोड़ने का मन नहीं करता था ।
इत्तेफ़ाक़न उस साल मक्का में ताऊन (एक बीमारी) फैल रहा था । हम वबा (फैलने वाली बीमारी) का बहाना करके फिर आपको अपने साथ ले आए ।
आप हमारे पास ही रहे और अपने दूध शरीक भाई अब्दुल्लाह के साथ बाहर जाया करते थे । एक बार दोनों जंगल गए हुए थे कि अब्दुल्ला दौड़ते हांपते घर पहुंचे और अपने बाप से कहा कि मेरे क़ुरैशी भाई (आप स०) को दो सफेद कपड़े वाले आदमियों ने पकड़कर लिटाया और पेट काट दिया । मैं उनको उसी हाल में छोड़ आया हूं । हम दोनों (हलीमा और उनके शौहर) घबराए हुए जंगल की तरफ दौड़े,देखा आप खड़े हैं । मगर भय के कारण आपका रंग उड़ा हुआ है । मैंने पूछा बेटा क्या बात है? फ़रमाया दो शख्स सफेद कपड़े पहने हुए आए और मुझ को पकड़कर लिटाया और पेट काटकर उसमें से कुछ ढूंढ कर निकाला, मालूम नहीं क्या था ।
खैर हम आप को घर ले आए उसके बाद मैं आपको एक काहिन (शैतान की पूजा करने वाला ,भविष्य के बारे में झूठी सच्ची बातें बताने वाला) के पास ले गई । वह आपको देखते ही फ़ौरन अपनी जगह से उठा और आपको अपने सीने पर उठाकर चिल्लाना शुरू कर दिया के अरब के लोगों दौड़ो जो मुसीबत तुम पर भविष्य में आने वाली है उसे दूर करो । जिसकी सूरत यह है इस लड़के को कत्ल कर दो और मुझे भी इसके साथ खत्म कर दो । और अगर तुमने इसे छोड़ दिया तो याद रखना यह तुम्हारे दीन को मिटा देगा और ऐसे धर्म की तरफ तुम्हें बुलाएगा जो तुमने अब तक कभी नहीं सुना ।

हलीमा को यह सुनकर गुस्सा आ गया और आपको उस बदबख्त के हाथ से छुड़ाकर कहा कि तू पागल हो गया है । तुझे खुद अपने दिमाग का इलाज कराना चाहिए । और हलीमा आपको लेकर घर आ गई । लेकिन इस वाक़िए ने उनको इस बात पर आमादा किया कि वो आपको आपकी वालिदा के हवाले कर दें ।

नोट :- इस वाक़िए को शक़्क़ै सदर कहा जाता है । इसकी पूरी तफ़सील आगे आ रही है ।

मक्का पहुंचकर जब हलीमा ने आपको आपकी वालिदा के सुपुर्द किया तो उन्होंने हलीमा से पूछा कि इतनी ख्वाहिश से ले जाने के बाद इस क़दर जल्दी वापस लाने की क्या वजह है ? बार बार पूछने पर हलीमा को सारा किस्सा बयान करना पड़ा । उन्होंने सुनकर फ़रमाया कि बेशक मेरे बेटे की एक ख़ास शान है । और फिर उन्होंने गर्भ के दिनों के हैरतअंगेज (आश्चर्यचकित करने वाले) वाक़िआत सुनाएं ।

शक़्क़ै सदर

शक़्क़ै सदर अरबी शब्द है । जिसका अर्थ सीना चीरना होता है । आप स० के साथ शक़्क़ै सदर का वाक़िआ पूरी जिंदगी में अलग-अलग कारणों से चार बार पेश आया ।

पहला वाक़िआ :- 4 साल की उम्र में ,जब आप हज़रत हलीमा के घर रहते थे । जिसका कुछ बयान पीछे आ चुका है । सीरत ए मुस्तफा नामक पुस्तक में यह वाक़िआ कुछ इस तरह बयान हुआ है । एक दिन आप जंगल में थे कि अचानक दो फ़रिश्ते जिब्राइल और मीकाइल इंसानी शक्ल में सफ़ेद कपड़े पहने हुए बर्फ़ से भरी सोने की एक थाल लेकर प्रकट हुए, और आपका सीना चीर कर दिल निकाला फिर दिल काटकर उसमें से ख़ून के जमे हुए एक या दो टुकड़े निकाले और कहा यह शैतान का हिस्सा है , फिर दिल को उसी थाल में रखकर बर्फ़ के पानी से धोया और धोने के बाद दिल को अपनी जगह रखकर सीने पर टांके लगा दिये ।

कारण :- इस शक़्क़े सदर में आपके दिल से निकाले जाने वाले जमे हुए ख़ून के टुकड़े असल में बुराई और गुनाह का माद्दा (जड़) थे । समझने के लिए कहा जा सकता है कि वह खून के जमे हुए टुकड़े गुनाहों के प्रोग्राम की चिप थे । जिसको अल्लाह ने अपने फ़रिश्तों के ज़रिए नबी ए पाक स० से निकलवा दिया ।

दूसरा वाक़िआ :- 10 साल की उम्र में पेश आया ।

कारण :- क्योंकि इस उम्र में इंसान के अंदर अच्छी बुरी ख्वाहिशें पैदा होना शुरू होती हैं । और अक्सर अच्छाई बुराई को समझ पाना इस आयु में मुश्किल होता है । इसीलिए इंसान बुरी ख्वाहिशों के पीछे लग कर अपनी

ज़िंदगी तबाह कर बैठता है । इन्हीं बुरी ख्वाहिशों को जन्म देने वाले माद्दे को ख़त्म करने के लिए यह शक़्क़ै सदर हुआ ।

तीसरा वाक़िआ :- 40 साल की उम्र में, आपको नुबुव्वत मिलने (नबी के पद की प्राप्ति) और आप पर अल्लाह का कलाम यानी क़ुरआन उतरने से पहले हुआ ।

कारण :- क्योंकि ख़ुदा के कलाम को बर्दाश्त कर पाना हर किसी इंसान के बस में नहीं । इसीलिए आपके दिल में वह ताक़त डालने के लिए जिससे आप खुदा का कलाम बर्दाश्त कर सकें यह शक़्क़ै सदर हुआ ।

चौथा वाक़िआ :- मेराज के वक्त पेश आया यानी जब आप अल्लाह से मुलाक़ात करने आसमान पर गए ।

कारण :- अल्लाह के कलाम को बर्दाश्त कर पाना नामुमकिन है , तो खुद अल्लाह को देख पाना कैसे मुमकिन हो सकता है । इसलिए अल्लाह और हर उस चीज को देखने की ताक़त पैदा करने के लिए जो आपने मेराज में देखी यह शक़्क़ै सदर का वाक़िआ पेश आया ।

आप स० की वालिदा और दादा की वफ़ात

हजरत हलीमा आपको आपकी वालिदा के सुपुर्द करके वापस चली गईं । आप अपनी वालिदा के पास रहते रहे । जब आपकी उम्र 6 साल थी तो

हजरत आमना आपको लेकर अपने मायके मदीना गई हुई थीं , और उम्मे ऐमन भी साथ थीं । एक महीना वहां पर रहे । लौटते वक्त रास्ते में अबवा नामी जगह पर आपकी वालिदा का इंतक़ाल हो गया और क़ाफ़िले वालों ने उनको वहीं पर दफ़्न कर दिया । उम्मे ऐमन आपको लेकर मक्का आईं और आपको आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब के हवाले कर दिया । आपके दादा आप का पालन पोषण करते रहे । यहां तक कि जब आप 8 साल 2 महीने 10 दिन के हुए तो आपके दादा की भी मृत्यु हो गई । मरते समय आपके दादा ने आपको आपके सगे चाचा अबू तालिब के हवाले करके उन्हें आप की परवरिश की ज़िम्मेदारी दी । जिसे अबू तालिब ने अपनी आख़िरी सांस तक पूरी तरह निभाया ।

मुल्क शाम का पहला सफ़र

आप स० अपने चाचा अबू तालिब के घर रहते रहे । उस वक्त अरब में पढ़ाई लिखाई का चलन नहीं था । तो आपने पढ़ना लिखना नहीं सीखा, हां रिवाज के मुताबिक़ व्यापार के तौर तरीक़े ज़रूर सीखे । अबू तालिब आपको बचपन से ही व्यापारिक मामलों में अपने साथ रखते थे । अबू तालिब व्यापार के लिए अक्सर मुल्क शाम जाया करते थे । 12 वर्ष की आयु में अबू तालिब आपको पहली बार मुल्क शाम के लिए साथ में लेकर निकले, रास्ते में तेमा नामी जगह पर पड़ाव डाला ।

आप स० तैमा ही में थे । इत्तेफ़ाक़न वहां से यहूदियों के एक आलिम बुहेरा

राहिब का गुज़र हुआ । आपको देखकर अबू तालिब से पूछा , यह जो लड़का आपके साथ है , आपका क्या लगता है ? अबू तालिब ने कहा यह मेरा भतीजा है । बुहेरा ने कहा कि क्या आप इस पर मेहरबान हैं ? और इसकी हिफ़ाज़त करना चाहते हैं ? अबू तालिब ने कहा, बेशक ।
यह सुनकर बुहेरा ने ख़ुदा की क़सम खाई और कहा के अगर तुम इसको शाम ले गए तो यहूदी इसे क़त्ल कर देंगे । क्योंकि यह ख़ुदा का वह नबी है जो यहूदियों के दीन को मिटा देगा । मैंने इसके अंदर आख़री नबी की हर उस अलामत (पहचान) को पाया है जिसका उल्लेख यहूदियों की किताब तौरात में किया गया है ।
अबू तालिब को बुहेरा के कहने से ख़तरे का अहसास हुआ । इसलिए उन्होंने आपको वहीं से वापस मक्का भेज दिया ।

नोट :- आप स० के आने की खुशखबरी हर ज़माने में हर नबी ने अपनी क़ौम को दी थी । क्योंकि यहूदी अल्लाह के नबी हजरत मूसा की क़ौम हैं । और अल्लाह ने उनको अपनी किताब तौरात से नवाज़ा था । उसी तौरात में आप स० का हुलिया वगैरा सब बयान किया गया था । बुहेरा यहूदियों का आलिम था । और उसने तौरात भी पढ़ी थी । इसीलिए उसमें बयान की गई अलामतों के ज़रिए वह आपको पहचान गया ।

शाम का दूसरा सफ़र

आप स० बहुत ही हस्सास और खुद्दार थे । यूं तो अबू तालिब आपकी हर ज़रूरत पूरी करते और आपको अपनी औलाद से बढ़कर चाहते थे । लेकिन आपके दिल ने यह बात गवारा ना कि के आप अपने चाचा पर बोझ बने । इसीलिए जवान होते ही पहले तो आपने लोगों की बकरियां चरा कर पैसे कमाए फिर व्यापार करने लगे । आप स० बहुत ही इमानदारी से व्यापार करते थे । गाली गलोच लड़ाई झगड़े से दूर रहते और जो वादा करते उसे पूरी तरह निभाते थे । लोगों में आपकी ईमानदारी और सच्चाई का चर्चा था ।

एक वाक़िआ मिसाल के लिए पेश है :- अब्दुल्लाह बिन अबी अलहम्सा ने बयान किया है के आप स० के नबी बनने से पहले मैंने आपसे एक सौदा किया । मेरे ज़िम्में कुछ देना बाकी था । मैंने आपसे कहा कि मैं अभी लेकर आता हूं । इत्तेफ़ाक़ से घर जाकर मैं अपना वादा भूल गया । 3 दिन के बाद याद आया के मैं आप स० से वापसी का वादा करके आया हूं । याद आते ही मैं फ़ोरन उसी जगह पहुंचा जहां आपको छोड़ कर गया था । मैंने आपको उसी जगह इंतज़ार करते हुए पाया । आप स० ने सिर्फ़ इतना फ़रमाया के तुमने मुझे ज़हमत (तकलीफ़) दी, मैं 3 दिन से इसी जगह तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं । आपकी इन्हीं खूबियों के कारण सब आपको अमीन (ईमानदार) सादिक़ (सच्चा) कह कर बुलाते और बहुत इज्जत करते थे ।

उस वक्त मक्का में ख़दीजा नाम की एक मालदार, अक्लमन्द और तजुर्बेकार बेवा औरत थीं । जिन गरीब लोगों को होशियार और विश्वसनीय समझतीं, उन्हें अपना माल देकर व्यापार के लिए जगह-जगह भेजती और फिर मुनाफे में से उन्हें भी हिस्सा देती थीं ।
आप स० की ईमानदारी और सच्चाई का चर्चा उन तक भी पहुंचा था । इसलिए उन्होंने चाहा कि आप स० को अपना माल देकर मुल्क शाम व्यापार करने भेजें । तो ख़दीजा ने आप स० को कहलवाया के आप हमारा माल व्यापार के लिए शाम ले जाएं । हम आपकी सेवा के लिए एक गुलाम भी साथ कर देंगे । और दूसरों को नफ़े में से जितना हिस्सा मिलता है हम आपको उससे ज़्यादा देंगे ।
आप स० इस सफर के लिए तैयार हो गए । और ख़दीजा के गुलाम मैसरा के साथ शाम के लिए रवाना हो गए । वहां पहुंचकर उस माल को बहुत सूझबूझ से ज़्यादा नफ़े के साथ बेचा और शाम से दूसरा माल खरीद कर वापस लौटे । मक्का आकर माल ख़दीजा के हवाले किया । और जब ख़दीजा ने उसे मक्का में बेचा तो दुगना मुनाफा हासिल हुआ ।

शाम के रास्ते में जब आराम करने के लिए आप स० एक पेड़ के नीचे लेटे हुए थे । तो नसतूरा नाम के एक राहिब ने आपको देखा । और आख़री नबी की जो अलामतें थश पहली किताबों में (वह किताबें जो अल्लाह ने अलग-अलग वक्तों में नबियों के ज़रिए लोगों तक पहुंचाई) में लिखी थीं । आप में देखकर आपको पहचान गया । राहिब मैसरा को जानता था । उसने मैसरा

से पूछा, तेरे साथ यह कौन शख्स है ? उसने कहा कि मक्का के रहने वाले, क़बीला कुरैश के एक शरीफ़ नौजवान हैं । राहिब ने कहा, यह भविष्य में नबी बनेंगे ।

हज़रत ख़दीजा से शादी

यूं तो आप स० की खूबियों के बारे में सुन सुनकर हज़रत ख़दीजा के दिल में आपके लिए एक ख़ास अकीदत (आस्था) ने जगह बना ली थी । लेकिन शाम के सफ़र के बाद मैसरा से आपकी सूझबूझ, ईमानदारी और अच्छे व्यवहार का आंखों देखा सारा हाल सुनकर हज़रत ख़दीजा ने ख़ुद चाहा कि अगर आप स० को मंज़ूर हो तो वह आपसे शादी करना चाहती हैं । इसके लिए एक औरत के ज़रिए विवाह का प्रस्ताव भेजा । जो आपने अपने चचा अबू तालिब के मशवरे से क़ुबूल कर लिया । यूं आपकी शादी हज़रत ख़दीजा से हो गई ।
शादी के वक्त आप स० की उम्र 25 साल और हज़रत ख़दीजा की 40 साल थी ।
हज़रत ख़दीजा आपकी सेवा में 24 साल रहीं , 15 साल नबी बनने से पहले और 9 साल नुबुव्वत के बाद ।

आप स० की बाक़ी बीवियां

आप स० ने हज़रत ख़दीजा की जिंदगी में किसी और औरत से विवाह नहीं किया । उनके बाद 11 औरतें आपके निकाह में आईं ।
जिनके नाम ये हैं : सौदा बिनते ज़म्आ , आयशा , हफ़्सा, ज़ैनब बिनते ख़ुज़ेमा , उम्मे सलमा, ज़ैनब बिनते जहश, जुवेरिया, उम्मे हबीबा, सफ़िया , मैमूना । इन 11 में से दो आपके सामने वफात पा गईं, और 9 आप की वफात के वक़्त ज़िंदा थीं ।

हज़रत सौदा : यह पहले सकरान बिन अम्र के निकाह में थीं, हज़रत सकरान पुराने मुसलमानों में थे, उनके इंतकाल के बाद यहआप स० के निकाह में आईं ।

हज़रत आयशा : यह हज़रत अबू बकर की बेटी थीं । 6 बरस की उम्र में आप स० से इनका निकाह हुआ और हिजरत के साल 9 बरस की उम्र में आपकी रुख़सती हुई ।

हज़रत हफ़्सा : यह हज़रत उमर की बेटी थीं । पहले अनीस बिन हुज़ाफ़ा के निकाह में थीं । उनकी शहादत के बाद हुज़ूर ने इनसे शादी कर ली ।

हज़रत ज़ैनब बिनते ख़ुज़ेमा : यह पहले तुफ़ैल बिन हारिस के निकाह में थीं, उसने तलाक दे दी,फिर उसके भाई उबैदा से निकाह हो गया । जब यह भी गज़वा ए बदर में शहीद हो गए तो सन 3 हिजरी में उहद की जंग से 1 माह

पहले आपके निकाह में आईं और सिर्फ़ 2 महीने निकाह में रहकर, वफात पा गईं ।

उम्मे हबीबा : मक्के के एक बड़े सरदार अबू सुफियान की बेटी थीं । पहले अब्दुल्ला बिन जहश के निकाह में थीं । उनसे औलाद भी हुई । यह दोनों मुसलमान होकर हब्श की तरफ़ हिजरत कर गए थे । वहां पहुंचकर अब्दुल्लाह बिन जहश इसाई हो गया और उम्मे हबीबा अपने ईमान पर क़ायम रहीं । उस वक्त आप स० ने नजाशी बादशाह को खत लिखा कि उम्मे हबीबा को आपकी तरफ से विवाह का प्रस्ताव दें, तो नजाशी ने प्रस्ताव पेश किया और खुद ही निकाह का ज़िम्मेदार बना और 400 दीनार (सोने के सिक्के)मेहर भी ख़ुद ही अदा कर दिए ।

हज़रत उम्मे सलमा : इनका नाम हिंदा था । पहले अबू सलमा के निकाह में थीं,जिनसे औलाद भी हुई । उनके इंतकाल के बाद आप के निकाह में आईं ।

हज़रत ज़ैनब बिनते जहश : यह आपकी फूफी उमेमा की बेटी थीं ।
आप स० ने पहले इनका निकाह अपने आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारीसा से करा दिया था । लेकिन इन दोनों की आपस में नहीं बनती थी, क्योंकि हज़रत ज़ैनब क़ुरैश के ऊंचे खानदान से थीं, और हज़रत ज़ैद आजाद किए हुए गुलाम जिनकी उस वक्त के समाज में कोई वैल्यू नहीं थी । नौबत तलाक तक आ गई । आपको इस बात का बड़ा दुख हुआ के आपने हज़रत ज़ैनब का विवाह कराया था, के उनका जीवन सुखमय हो, परंतु

उनका विवाह न चल पाया और अंत में उनको तलाक हो गई ।
आपके दिल में यह विचार आया कि आप उनसे विवाह कर लें, ताकि उनकी दिल जोई भी हो जाए और आपका मन भी गिलानी मुक्त हो जाए ।
लेकिन फिर आप इस कारणवश इस कार्य से रुक गए के अरब की मान्यता के अनुसार मुंह बोला बेटा सगा बेटा समझा जाता था । और हज़रत ज़ैद को आपने बचपन से अपने पास रखकर, उनका पालन पोषण किया था, लोग उनको आपका बेटा कहने लगे थे । और पुत्रवधू से विवाह सही नहीं होता । इस पर अल्लाह ने आपको हुकुम दिया, के आप स० काफिरों की मान्यताओं के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं कर सकते । इस लिए उनकी मान्यता को तोड़िए और ज़ैनब से विवाह कीजिए ।

हज़रत सफिया बिनते हुयई : यह क़बीला बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर के सरदार की लड़की थीं । किनाना इब्न अबी अल हक़ीक़ के निकाह में थी, वह ख़ैबर की लड़ाई में मारा गया और यह क़ैद होकर,आपके पास आईं । आपने इनको आज़ाद कर दिया । यह मुसलमान हो गई और आपके निकाह में आईं ।

हज़रत जुवेरिया बिनते हारिस ख़ज़ाइया : क़बीला बनी अल मुसतलक़ के सरदार हारिस की बेटी थीं । जंग में गिरफ्तार होकर आई थीं, फिर आप ने इनको आज़ाद करके,इन से विवाह कर लिया और इस वजह से इनका तमाम क़बीला आज़ाद हो गया और इनके बाप भी मुसलमान हो गए ।

हज़रत मैमूना बिनते हारिस हिलालिया : यह सबसे आख़री औरत हैं,जिन से आपने विवाह किया ।

एक सवाल और उसका जवाब : बहुत से जाहिल लोग यह सवाल करते हैं कि आप स० ने इतनी शादियां क्यों की ।

इसका जवाब इस तरह है के यह सवाल करने वाले दो तरह के लोग हैं । एक वह जो किसी मज़हब को नहीं मानते और एक वह जो किसी ना किसी मजहब के अनुयाई हैं । तो वह लोग जो किसी मज़हब को नहीं मानते, यानी देहरिये , उनका यह सवाल पूछना बहुत बड़ी बेवकूफी है । क्योंकि वह तो किसी मज़हब को मानते ही नहीं और शादी का कांसेप्ट मज़हब ही की देन है ।
और वे जो किसी मज़हब के अनुयाई हैं । वह भी दो तरह के हैं,या तो वह अपने मजहब का मूल आधार किसी आसमानी किताब को बताते हैं,जैसे यहूदी और ईसाई , या किसी आसमानी किताब को अपना मूल आधार नहीं बताते जैसे हिंदू । यहूदियों और ईसाइयों के लिए जवाब यह है के बाइबल, तौरात में ज़्यादा विवाह करने पर कोई पाबंदी नहीं है । हज़रत सुलेमान की 1000 और हज़रत दाऊद की 100 बीवियों का ज़िक्र उनकी किताबों में मौजूद है ।
और हिंदुओं के धार्मिक ग्रंथों में भी ज़्यादा विवाह करने से मना नहीं किया गया । उनके देवताओं और अवतारों में से सिर्फ राम जी के 1 बीवी थी ।

उनके अलावा सबकी एक से ज़्यादा बीवियां रही हैं । इसका उल्लेख उनके यहां मिलता है ।
तो जब किसी भी धर्म में ज़्यादा बीवियां रखना मना नहीं है,तो आप स० पर यह सवाल उठाना फ़ुज़ुल है ।

जैसा के मालूम हो चुका है कि और धर्मों में विवाह की कोई सीमा नहीं होती । एक व्यक्ति कितने ही विवाह कर सकता है । परन्तु इस्लाम ने एक व्यक्ति को सिर्फ चार विवाह करने तक की अनुमति दी है और साथ ही यह शर्त भी लगाई है कि वह सब के अधिकारों को बराबर पूरा कर सके अगर वह ऐसा ना कर पाए तो उसको एक ही विवाह की इजाज़त होगी ।
जब अल्लाह की तरफ से ये हुकुम आया, तो जिन सहाबा की 4 से अधिक पत्नियां थीं, उन्होंने उन को तलाक दे दी और उन महिलाओं ने,दूसरे व्यक्तियों से विवाह कर लिया । परंतु नबी पाक अपनी पत्नियों को नहीं छोड़ सकते थे । क्योंकि नबी की पत्नी क़ौम की मां हो जाती है और नबी के बाद वो किसी और व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती । इसलिए अगर आप अपनी पत्नियों को छोड़ देते तो उनकी जिंदगी खराब हो जाती । इस कारणवश आपको 4 से ज़्यादा बीवीयां रखने की इजाज़त मिली । मगर इस आदेश के बाद आपने कोई और विवाह नहीं किया ।

आप स० की औलाद

आप स० कि सब औलाद हज़रत ख़दीजा से हुई सिवाय आपके बेटे इब्राहिम के जो आपकी बांदी मारिया क़िबतिया से थे । आप स० के हज़रत ख़दीजा से दो बेटे और चार बेटियां हुईं । बेटों के नाम क़ासिम और ताहिर थे । ताहिर के बारे में यह भी कहा जाता है कि उनका नाम अब्दुल्लाह था । और बेटियों के नाम ज़ैनब, रुक़य्या,फ़ातिमा और उम्मे कुलसूम थे ।
क़ासिम सबसे बड़े उनके बाद ज़ैनब फिर रुक़य्या फिर फ़ातिमा फिर उम्मे कुलसूम फिर अब्दुल्लाह और सबसे छोटे इब्राहिम ।
आप स० की औलाद में हज़रत फ़ातिमा सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं । उनके बारे में आप स० ने फ़रमाया है कि यह जन्नती औरतों की सरदार हैं ।

आपके तीनों बेटे बचपन में ही वफ़ात पा गए । हां हज़रत क़ासिम के बारे में कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि वह इतनी आयु को पहुंच गए थे कि घोड़े वगैरह पर सवार हो सकें ।

इसमें ख़ुदा की कोई बहुत बड़ी हिकमत (लीला) थी, कि आप स० की नस्ल दुनिया में बेटों से नहीं, बल्कि आपकी बेटियों से फैली । एक कारण जो समझ में आता है वह शायद यह हो के दुनिया वाले बेटियों के पैदा होने पर अफ़सोस और शर्म महसूस करते हैं । तो यह उनके लिए सबक़ बन जाए के देखो एक नबी की नस्ल बेटों से नहीं उसकी बेटियों से चली है । बेटीयो में भी सिर्फ़ हज़रत फ़ातिमा की औलाद बाक़ी रही ।

हज़रत ज़ैनब का विवाह अबुल आस बिन अल रबी से हुआ । उनसे एक लड़का और एक लड़की उमामा पैदा हुए । लड़के का थोड़ी उम्र में इंतकाल हो गया और हज़रत उमामा का विवाह हज़रत अली से हज़रत फ़ातिमा की वफ़ात के बाद हुआ लेकिन इनसे कोई औलाद ना हुई ।

हज़रत रुक़य्या का निकाह आप स० के चाचा अबू लहब के बेटे उत्बा और उम्मे कुलसूम का अबू लहब के ही दूसरे बेटे उतैबा से हुआ । लेकिन अभी रुखसती नहीं हुई थी कि क़ुरआन में अबू लहब के बुरे अंजाम का बयान आ गया । तो अबु लहब ने अपने बेटों से आप स० की दोनों बेटियों को तलाक़ दिलवा दी । फिर उम्मे कुलसूम का विवाह हज़रत उस्मान से हुआ । मगर वह बे औलाद ही अल्लाह को प्यारी हो गईं । उनके बाद आप स० ने हज़रत रुक़य्या की शादी भी हज़रत उस्मान से कर दी । उनके एक बेटा अब्दुल्लाह हुआ जिसकी थोड़ी आयु में मृत्यु हो गई ।

रहीं हज़रत फ़ातिमा उनका विवाह अबू तालिब के बेटे हज़रत अली से हुआ । इन के तीन बेटे और एक बेटी पैदा हुई । बेटों के नाम हसन, हुसैन और मोहसिन थे । और बेटी का उम्मे कुलसूम था ।
मोहसिन का बचपन में इंतकाल हो गया और उम्मे कुलसूम के भी कोई औलाद ना हुई ।
सिर्फ इमाम हसन और इमाम हुसैन से आप स० की नस्ल चली । इमाम हसन बड़े और इमाम हुसैन छोटे थे । इनके बारे में आप स० ने फरमाया है

कि यह दोनों जन्नती नौजवानों के सरदार हैं ।
इनसे जो औलाद या नस्ल दुनिया में फैली उनको आले रसूल और सय्यद कहते हैं ।

काबे का नवनिर्माण

जब आपकी उम्र 35 साल हुई । तो उस वक्त क़बीला क़ुरेश ने बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) यानी काबे के नव निर्माण का इरादा किया । क्योंकि मक्का पहाड़ों से घिरा हुआ है । इसलिए बारिशों का पानी मक्का में जमा हो जाता था । जिसके चलते काबे की इमारत गिर गई । तो यूं काबे के नव निर्माण की ज़रूरत पेश आई ।
बहरहाल काबे के निर्माण में हिस्सा लेना हर शख़्स अपने लिए बहुत सौभाग्य की बात समझता था । और सब क़बीलों ने अपने क़स्मतों का फ़ैसला इस बात पर कर रखा था कि कौन काबे के निर्माण में ज़्यादा हिस्सा लेता है । कोई झगड़ा खड़ा ना हो इसलिए निर्माण के कामों को सब क़बीलों में बांट दिया गया । तामीर चलती रही , लेकिन बात जब हजरे असवद (स्वर्ग का वह पत्थर जो अल्लाह ने हजरत इब्राहिम को दिया था) को उठाकर काबे में लगाने की आई, तो हर क़बीले की ख्वाहिश यह थी कि यह सौभाग्य उसे प्राप्त हो । बात ख़ून खराबे तक पहुंचने से पहले क़ौम के कुछ समझदार लोगों ने इरादा किया कि मशवरा करके कोई सुलह की सूरत निकालें । इसके लिए वह सब काबे के पास जमा हो गए । मशवरे में यह बात

तय हुई कि जो शख्स इस दरवाजे में सबसे पहले प्रवेश करके आएगा वहीं इस मामले का फ़ैसला करेगा । उसके हुकुम को हर शख़्स मानेगा । ख़ुदा की क़ुदरत के सबसे पहले आप स० उस दरवाजे से दाखिल हुए । आपको देखकर सब ने एक जवान होकर कहा , कि "यह तो अमीन (ईमानदार) और (सादिक़) सच्चे हैं" । हम इन के फ़ैसले पर राज़ी हैं । आप स० तशरीफ लाए और ऐसा बेहतरीन फ़ैसला किया कि सब खुश हो गए । आपने एक चादर फैला दी,और उसमें अपने हाथ से हजरे असवद उठा कर रख दिया । फिर हुकुम दिया कि हर क़बीले के ख़ास आदमी चादर के किनारे पकड़कर उसे काबे तक ले चलें । जब काबे तक पहुंच गए तो खुद आपने उसे उठाकर काबे में लगा दिया । आपके इस फैसले से जहां क़बीलों की ख़ूनी जंग होने से रुकी वही यह बात भी पता चली कि समाज में आपकी कितनी अहमियत और इज़्ज़त थी ।

नुबुव्वत

अल्लाह ने हर ज़माने में, हर क़ौम में , इंसानों में ही से कुछ बन्दों को यह विशेषता प्रदान की के अल्लाह उन तक फ़रिश्तों के ज़रिए अपने संदेश पहुंचाता, जिन्हें वे लोगों तक सही-सही पहुंचाया करते थे ।

इन लोगों को अरबी में नबी (संदेश पहुंचाने वाला) और इस संदेश पहुंचाने की ज़िम्मेदारी को नुबुव्वत कहा जाता है ।

अल्लाह ने लगभग 124000 नबी भेजे । सबसे पहले हज़रत आदम (वही आदम जो सब इंसानों के बाप हैं,और उनकी बीवी हव्वा सब की मां है) और सबसे आखरी नबी हज़रत मुहम्मद स० हैं । आप के बाद कयामत तक अब कोई नबी नहीं आने वाला, आपका दीन आख़री दीन है ।

आप स० के पास अल्लाह के जो संदेश आए उन्हें अरबी में वही के नाम से जाना जाता है । यह वही दो प्रकार की थी । एक वही जिसको क़ुरआन कहते हैं, और जिस की तिलावत (पाठ) ज़्यादातर मुसलमान करते हैं । दूसरी वही इस पहली वही यानी क़ुरआन की मुश्किल बातों को समझाने और वक्ती ज़रूरत के हुकुम बताने के लिए थी, इसको हदीस कहते हैं ।

नुबुव्वत की प्राप्ति

जैसा कि बताया जा चुका अरब के ज़्यादातर लोग अपने पूर्वज हज़रत इब्राहिम का दीन (धर्म) भुलाकर चांद , सूरज, सितारों और बुतों की पूजा करने में लगे हुए थे ।
धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था बिल्कुल अस्त व्यस्त थी ।
लेकिन इस माहौल में कुछ लोग ऐसे भी थे जो इन सब गलत धारणाओं से दूर रहते, और एक सच्चे खुदा की तलाश में, अपनी कोशिशों में लगे रहते । आप स० भी बचपन से इन सब चीजों से दूर रहे, ना तो आपने कभी बुतों आदि की पूजा की, और ना उन सामाजिक सम्मेलनों में हिस्सा लिया जिनमें

शराब जुआ आदि प्रकार की बुराइयां पाई जाती थीं ।
आप अक्सर कई दिनों के खाने पीने का सामान लेकर, मक्का के पास की पहाड़ी गुफ़ा हिरा में चले जाते, और वहां बैठकर ख़ुदा का ध्यान और अरब के हालात पर सोच विचार करते ।

जब आपकी आयु 40 साल हुई तो अल्लाह ने आपके पास अपने फरिश्ते जिब्राइल के ज़रिए पहला संदेश भेजा और आपको अपना नबी नियुक्त किया ।

संदेश यह था :-

اقرا باسم ربك الذي خلق خلق الانسان من علق اقرا وربك الاكرم الذي علم بالقلم علم الانسان مالم يعلم

अपने उस ईश्वर के नाम से पढ़िए जिसने सृष्टि को रचा । जिसने इंसान को चिपचिपी चीज़ से पैदा किया । पढ़िए ! और आपका ईश्वर सबसे आदरणीय है, जिसने कलम के ज़रिए सिखाया । उसने इंसान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था ।

इस वही के साथ आप पर अपनी क़ौम की शिक्षा और समाज की दशा सुधारने की जिम्मेदारी का बड़ा बोझ आ पड़ा। आपका ह्रदय इस बोझ के भय से कांप गया । आप इसी हालत में घर वापस आए और सारा किस्सा अपनी बीवी हज़रत ख़दीजा को सुनाया । हज़रत ख़दीजा ने आपको काफ़ी

तसल्ली दी और आप को लेकर अपने चचेरे भाई वर्क़ा बिन नौफ़ल के पास गईं । वर्क़ा बिन नौफ़ल अल्लाह की भेजी पिछली किताबों तौरात और इंजील (बाइबल) के आलिम थे । उन्होंने आपसे सारा माजरा सुना तो कहा कि यह वही फ़रिश्ता है जो पिछले नबियों के पास अल्लाह के संदेश लाया करता था । काश मैं उस वक्त तक जिंदा रहूं और तुम्हारा साथ दूं, जब तुम्हारी क़ौम तुमको तुम्हारे घर से निकालेगी । आपने पूछा क्या सच में ऐसा होगा ? वर्क़ा ने कहा, हां जो संदेश और शिक्षा आप लेकर आए हो उसी को लेकर आपसे पहले जो भी आया उसकी क़ौम ने उसके साथ यही किया है । इस क़िस्से के कुछ दिनों बाद ही वर्क़ा की मृत्यु हो गई ।

फिर आपके पास दूसरी वही आई :-

يا ايها المدثر قم فانذر وربك فكبر وثيابك فطهر والرجز فاهجر

ए चादर में लिपटने वाले उठिए और डराइए । और अपने ईश्वर का गुणगान कीजिए । और अपने कपड़े स्वच्छ रखिए । और नापाकी को त्याग दीजिए ।

इस वही के बाद आपको बाक़ायदा लोगों तक ईश्वर के संदेश पहुंचाने के कार्य को शुरू करने का आदेश मिला ।

वही की शिक्षा

वही के ज़रिए आप स० तक जो शिक्षा आई उसे मानने और उसके अनुसार जीवन वयतीत करने को इस्लाम लाना कहते हैं ।
इस्लाम का अर्थ है एक सच्चे ईश्वर के सामने समर्पण करने और उसके हर आदेश का पालन करने का । और जो व्यक्ति ऐसा करता है उसे मुस्लिम या मुसलमान कहते हैं । इस पुस्तक में पूरी इस्लामिक शिक्षा पर चर्चा कर पाना तो संभव नहीं, हां अहम अहम चीजें जरूरत के हिसाब से बताता चलूंगा ।

ईमान

अगर इस्लाम का अध्ययन करें और इसकी मूल शिक्षा की बात करें तो ईमान ही एक ऐसा विषय है जिस के बगैर ना इस्लाम का ही अस्तित्व है और ना मुसलमान का । बल्कि यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इस्लाम आया ही प्राथमिक तौर से ईमान की शिक्षा देने हेतु ।

ईमान अरबी शब्द है जिसका अर्थ यक़ीन करना और मानना होता है ।
अल्लाह और हमारे नबी मुहम्मद स० ने चंद चीज़ें ऐसी बताई हैं जिन पर यक़ीन करना और जिन्हें सच मानना हर मुसलमान और इस्लाम क़ुबूल करने वाले के लिए ज़रूरी है । अब अगर कोई व्यक्ति इस्लाम के हर भाग पर तो अमल करता है जैसे नमाज़ भी पढ़ता है,रोजा भी रखता है,ज़कात भी देता है और हज भी कर चुका है, लेकिन वह उन चीज़ों में से जिन पर ईमान

लाना जरूरी है किसी एक बात को ना माने तो अल्लाह के यहां उसे मुसलमान नहीं समझा जाएगा, भले ही दुनिया उसे मुसलमान कहती रहे ।

तो वह चीज़ें है जिन पर ईमान लाना जरूरी है,कुल 7 हैं और इन्हें ईमान ए मुफ़स्सल कहते हैं ।

امنت بالله وملائكته وكتبه ورسله واليوم الاخر والقدر خيره وشره من الله تعالى و البعث بعد الموت .

मैं ईमान लाया अल्लाह पर,फरिश्तों पर, अल्लाह की तरफ़ से भेजी गई किताबों पर, अल्लाह के सब रसूलों पर, क़यामत के दिन पर, भाग्य पर कि हर अच्छी बुरी चीज अल्लाह की तरफ़ से होती है, और मरने के बाद दोबारा ज़िंदा किए जाने पर ।

1. अल्लाह पर ईमान लाना

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, अल्लाह एक है, अल्लाह ही पूजनीय और ईश्वर बनाने योग्य है, उसके सिवा कोई ईश्वर बनाने योग्य नहीं, ईश्वरता में कोई उसका साझी नहीं, वह बड़ी ताक़त और क़ुदरत वाला है, उसी ने ज़मीन,आसमान, चांद , सूरज, सितारे, हर प्रकार के जीव, जंतु , प्राणियों तथा पेड़,पौधों मतलब पूरी सृष्टि की रचना की है, और वही पूरी सृष्टि का मालिक है,वही मृत्यु देता है और वही जीवन प्रदान करता है, यानी जीवन और मृत्यु उसी के आदेश से होती है, वही हर प्राणी और हर

जीव को रोज़ी देता है, वह ना खाता है,ना पीता है, और ना सोता है, वह खुद-ब-खुद हमेशा से है और हमेशा रहेगा, उसको किसी ने पैदा नहीं किया, उसका ना बाप है ना मां,ना बेटा है ना बेटी, ना बीवी है और ना किसी से उसका कोई रिश्ता नाता है, वह इन सब बंधनों से पवित्र है, सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज नहीं,और उसे किसी चीज़ की आवश्यकता भी नहीं, वह बेमिसाल है यानी उसके जैसा कोई नहीं, वह हर प्रकार की खराबी और कमियों से पवित्र है, वह प्राणियों और जीवो की तरह हाथ, पांव,नाक , कान और शक्ल व सूरत होने से भी पवित्र है,उसने फरिश्तों को पैदा करके सृष्टि की व्यवस्था और ख़ास ख़ास कामों पर उन्हें लगा दिया है, उसने मनुष्यों के मार्गदर्शन हेतु रसूल भेजे,ताकि वे लोगों को सच्चा दीन सिखाएं,अच्छी बातें बताएं और बुरी बातों से रोकें ।

2. फरिश्तों पर ईमान

फरिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें,फरिश्ते ऐसी मखलूक हैं जिन्हें अल्लाह ने नूर (प्रकाश) से पैदा किया है, वह ना मर्द हैं और ना औरत, ख़ुदा की नाफरमानी और गुनाह नहीं करते,जिन कामों पर अल्लाह ने उन्हें नियुक्त कर दिया है उन्हीं में लगे रहते हैं,फरिश्तों की सही तादाद अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता हां क़ुरआन और हदीस से इतना हमें पता चलता है कि तमाम आसमानों और ज़मीनों के इंतजाम अल्लाह ने

फरिश्तों के ज़िम्मे कर रखे हैं और फरिश्ते तमाम इंतज़ाम अल्लाह के आदेश अनुसार पूरे करते रहते हैं ।

चार फरिश्ते बहुत प्रसिद्ध है :-

(1) हज़रत जिब्राइल : जो अल्लाह के संदेश,आदेश और किताबें नबियों के पास लाते थे, बाज़ दफ़ा नबियों की सहायता हेतु तथा खुदा और रसूल के दुश्मनों से लड़ने के लिए भी भेजे गए, और बाज़ दफ़ा अल्लाह ने नाफरमान लोगों पर आज आप भी इन्हीं के ज़रिए भेजा ।

(2) हज़रत मीकाइल : मखलूक को रोज़ी पहुंचाने और बारिश वगैरा के इंतज़ाम पर नियुक्त हैं । और बेशुमार फरिश्ते इनकी मातहती (अधीनता) में काम करते हैं, बाज़ बादलों के इंतज़ाम पर, बाज़ हवाओं के इंतज़ाम पर और कुछ समुंदरों, नदियों,झीलों पर नियुक्त हैं, और इन सब चीज़ों का इंतज़ाम अल्लाह के आदेश अनुसार करते हैं ।

(3) हज़रत इसराफ़ील : कयामत के दिन सूर फूंकेंगे, जिससे पूरी सृष्टि नष्ट हो जाएगी ।

(4) हज़रत इज़राइल : प्राण हरने पर नियुक्त हैं । और इनकी मातहती में भी बेशुमार फरिश्ते काम करते हैं । नेक लोगों की रूह निकालने वाले फरिश्ते अलग और पापियों के प्राण हरने वाले अलग हैं ।

3. किताबों पर ईमान

किताबों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, अल्लाह ने छोटी बड़ी बहुत सी किताबें इंसानों की भलाई और अच्छी,बुरी बातें समझाने के लिए रसूलों के पास भेजीं ।

उनमें से चार किताबें मशहूर हैं :-

(1) तौरात : जो हज़रत मूसा के पास भेजी ।

(2) ज़बूर : जो हज़रत दाऊद को दी ।

(3) इंजील यानी बाइबल : हजरत ईसा के पास भेजी ।

(4) क़ुरआन शरीफ़ : जो हमारे नबी हज़रत मुहम्मद स० को दी गई ।

नोट : क़ुरआन के अलावा सब किताबों में लोगों ने फेरबदल के असली तालीम को नष्ट कर दिया इसलिए क़ुरआन के अलावा अब किसी और किताब पर अमल नहीं किया जाएगा, हां यह ज़रूर कहा जाएगा के यह सब अल्लाह की किताबें हैं ।

4. रसूलों पर ईमान

रसूलों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, रसूल अल्लाह के बन्दे और इंसान होते हैं, अल्लाह उन्हें दूसरे बन्दों तक अपने संदेश पहुंचाने के

लिए मुक़र्रर फ़रमाता है, वे सच्चे होते हैं, कभी झूठ नहीं बोलते, गुनाह नहीं करते,कभी-कभी खुदा के हुक्म से ऐसे करिश्में दिखाते हैं जो इंसानों के बस से बाहर होते हैं , जिन को मौजज़ा कहते हैं, ख़ुदा के संदेश पूरे पूरे पहुंचा देते हैं,उनमें कमी बेशी नहीं करते ना किसी संदेश को छुपाते हैं, कोई इंसान कितनी भी इबादत और कोशिश करके नबी नहीं बन सकता अल्लाह खुद जिसे चाहता है नबी बनाता है । सबसे पहले नबी हज़रत आदम और सबसे आख़री हजरत मोहम्मद स० हैं । आप के बाद कोई नया नबी नहीं आएगा जो नबी होने का दावा करे वह झूठा और इस्लाम से बाहर है ।

नोट : कभी-कभी अल्लाह नबियों के ज़रिए ऐसे करिश्में दिखाता है, जिन्हें कर पाना इंसानों के बस से बाहर होता है । उनको मौजज़ा कहते हैं !
जैसे आप स० ने एक मर्तबा, अल्लाह के हुक्म से उंगली का इशारा कर के , चांद के दो टुकड़े कर दिए थे, एक पूरब और एक पश्चिम में चला गया था, फिर दोनों आकर जुड़ गए ।

मौजज़ा और जादू देखने में एक जैसे लगते हैं, लेकिन इनमें फ़र्क़ है । जादू में तंत्र मंत्र का उपयोग होता है और मौजज़ा सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से होता है,इसमें कोई तंत्र मंत्र नहीं किया जाता ।

मिसाल से समझिए :-

एक बार एक बादशाह के सामने, एक नबी ने अल्लाह का दीन पेश किया । तो उनसे कहा, कि मैं तो ख़ुद ख़ुदा हूं, क्योंकि मेरे पास जादूगरों की फ़ौज है । अगर तुम्हारा रब सच्चा है तो क्या तुम्हारा रब उन को पराजित कर सकता है ।
फिर बादशाह ने अपने 70000 जादूगरो को बुलाया, और उन जादूगरो को जादू करने का हुक्म दिया,उन्होंने तंत्र मंत्र पढ़कर,अपने हाथों की रस्सियों को ज़मीन पर डाल दिया, रस्सियां देखते ही देखते सांप बन गई । अल्लाह ने अपने नबी को उनका असा (हाथ में पकड़ने वाली लकड़ी) ज़मीन पर फेंकने को कहा, असा ज़मीन पर गिरते ही, अल्लाह के हुक्म से बहुत बड़ा अजगर बन गया और जादूगरों के जादू के सांपों को खा गया । यह मौजज़ा देखकर सारे जादूगर ईमान ले आए ।
देखिए जादूगरों ने भी रस्सियों को सांप बनाया था और असा भी अजगर बना था । लेकिन जादूगर जादू जानते थे और यह भी जानते थे कि हमने जो सांप बनाए हैं, वे सिर्फ़ दिखने में सांप है, असल में रस्सी हैं और जो लकड़ी अजगर बन गई है , वह किसी तंत्र मंत्र से नहीं , बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से बनी है ।

5. कयामत पर ईमान

कयामत पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, 1 दिन अल्लाह के हुक्म से हज़रत इसरफ़ील नामक फरिश्ते सूर (सींग जैसी चीज़) में फूंकेंगे,

जिसकी सख़्त और डरावनी आवाज की दहशत से तमाम जानदार मर जाएंगे और दुनिया खत्म हो जाएगी । पहाड़ रुई के गालों की तरह उड़ते फिरेंगे । सितारे टूट कर गिर जाएंगे । मतलब पूरी सृष्टि टूट फूट कर एकदम नष्ट हो जाएगी । कयामत का ठीक-ठीक वक्त तो अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता,हां अल्लाह ने अपने नबी के ज़रिए ऐसी कुछ निशानियां बताई हैं जिनको देखकर कयामत का क़रीब आना मालूम हो सकता है । यह निशानियां बड़ी किताबों में तफ़सील के साथ ज़िक्र की गई हैं । यहां सब को बयान कर पाना संभव नहीं, इसलिए चंद का ज़िक्र किया जा रहा है ।

दुनिया में गुनाह ज़्यादा होने लगेंगे, लोग मां बाप की नाफरमानीया और उन पर सख़्तियां करने लगेंगे, अमानत में खयानत होने लगेगी, गाने और नाच रंग की ज्यादती हो जाएगी, नई नस्ल पुरानी को बुरा भला कहने लगेगी, अज्ञानी और कम ज्ञान वाले लोग पेशवा बन जाएंगे, चरवाहे वगैरह छोटे लोग बड़ी ऊंची ऊंची इमारतें बनाने लगेंगे, ना काबिल लोगों को बड़े बड़े ओहदे मिलने लगेंगे ।

6. तक़दीर पर ईमान

तक़दीर पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, अल्लाह के पास हर हो चुकी,हो रही, और होने वाली अच्छी बुरी बात का लेखा-जोखा है,कुछ भी उसके लेखे जोखे से बाहर नहीं ।

नोट : तक़दीर दो तरह की है ;

1 : जिसे बदला नहीं जा सकता, जैसे मृत्यु के जब, जहां, जैसे लिखी जा चुकी है वैसे ही आएगी ।

2 : जो कर्म पर आधारित है, जैसा कर्म वैसा फल । अच्छे कर्मों से अच्छा और बुरे कर्मों से बुरा भाग्य बनता है ।

7. दोबारा ज़िंदा किए जाने पर ईमान

मरने के बाद दोबारा ज़िंदा किए जाने पर ईमान लाने का मतलब यह है कि हम मानें, कयामत में सब कुछ ख़त्म हो होने के बाद , अल्लाह के हुक्म से हज़रत इसरफील फिर सूर फूकेंगे , तो हर चीज़ फिर से प्रकट हो जाएगी । सब इंसान भी ज़िंदा हो जाएंगे । फिर एक बड़े मैदान में सबको अल्लाह के सामने पेश करके उनका हिसाब लिया जाएगा । अच्छे और बुरे कर्मों के आधार पर लोगों को स्वर्ग और नर्क में भेजा जाएगा, जिसमें वे हमेशा रहेंगे ।

नोट : ईमान के बारे में यहां जो कुछ बताया गया, वह पूरी तफ़सील के साथ बड़ी किताबों में बयान किया गया है । हर मुस्लिम के लिए ईमान की पूरी तफ़सील जानना ज़रूरी है, इसलिए या तो खुद किताबों से पढ़ें, या दीनी इल्म रखने वालों से ईमान की तफ़सील पूछें ।

पहले मुसलमान होने वाले

आप स० की लाई हुई तालीम को औरतों में सबसे पहले आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा ने, बालिग मर्दों में क़ुरैश के मशहूर सौदागर और आप स० के दोस्त हज़रत अबू बकर ने, कम आयु वालों में चाचा अबू तालिब के बेटे हज़रत अली ने, और गुलामों में आपके आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद ने कुबूल किया ।

इसके बाद आप स० और हज़रत अबू बकर ने मिलकर चुपके चुपके क़ुरैश के ऐसे लोगों को जो तबीयत के नेक और समझ के अच्छे थे,इस्लाम की बातें समझाना शुरू की । बड़े बड़े नामी लोगों में से 5 आदमी यानी हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुल रहमान बिन ओफ़, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास और हजरत तलहा हज़रत अबू बकर के समझाने से मुसलमान हुए ।
आहिस्ता आहिस्ता यह चर्चा और लोगों के कानों तक भी पहुंचा और मक्का में मुसलमानों की तादाद बढ़ने लगी । उन में चंद गुलाम भी थे,जैसे हज़रत बिलाल, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत खबाब बिन अर्त और हज़रत सुहेब । क़ुरैश के चंद नेक मिज़ाज नौजवान भी पहले इस्लाम लाने वालों में से थे , जैसे हज़रत अरक़म, हज़रत सईद बिन ज़ैद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन और हज़रत उबैदा ।
यह असर मक्का के बाहर भी फैलने लगा । और क़ुरैश के सरदारों को भी इस नई तालीम की सुनगुन हो गई । एक तो अज्ञानता दूसरे बाप दादाओं के मज़हब के प्रति प्रेम, दोनों ऐसी चीजें थीं कि क़ुरैश के सरदारों को इस नए

दीन पर बड़ा गुस्सा आया । जो लोग मुसलमान हो चुके थे वे सरदार उनको तरह तरह से सताने लगे । मुसलमान पहाड़ों के दर्रों और ग़ारों में छिपकर नमाज पढ़ते और अल्लाह का नाम लेते थे ।
3 साल तक यूं ही छुप छुप कर और चुपके चुपके आप स० बुत परस्ती के खिलाफ प्रवचन करते और लोगों को सही दीन का पाठ पढ़ाते रहे । जो नेक और समझदार होते, वे इस्लाम क़ुबूल कर लेते और जो ना समझ और हठधर्म होते, वे ना मानते, बल्कि उल्टे दुश्मन हो जाते ।
उस ज़माने में काबे के पास एक गली थी । जिसमें एक बड़े सच्चे और जानिसार मुसलमान हज़रत अरक़म का घर था । यह घर इस्लाम का पहला मदरसा था । आप स० अक्सर यहां तशरीफ़ रखते थे, और मुसलमानों से मिलकर, अल्लाह की बात और अल्लाह के जो संदेश (क़ुरआन की आयतें) आते, उन्हें पढ़कर सुनाते और उनके ईमान को मज़बूत बनाते थे । जो लोग इस दीन का शौक रखते थे, वे यहीं आकर आप स० से मिलते और इस्लाम क़ुबूल करते थे ।

आम तबलीग़ (ईमान का खुला प्रचार)

3 वर्ष बाद, अल्लाह ने आपको को हुकुम दिया कि अब खुल्लम-खुल्ला अल्लाह का नाम बुलंद करें और निडर होकर बुत परस्ती की मुखालफत करें और हमारे बन्दों को सही दीन यानी इस्लाम की बातें बताएं और उन्हें खुदा का कलाम सुनाएं ।

आप स० को जब अल्लाह की तरफ़ से यह हुकुम हुआ, तो आपने मक्के की एक पहाड़ी पर जिसका नाम सफ़ा था, खड़े होकर क़ुरैश को आवाज़ दी । अरब के दस्तूर के मुताबिक़ इस आवाज़ को सुनकर क़बीले के सारे आदमियों का जमा हो जाना ज़रूरी था, इसलिए मक्का के बड़े-बड़े सरदार इस पहाड़ी के नीचे आकर जमा हो गए ।
आप स० ने उनसे पूछा, अगर मैं तुमसे कहूं कि इस पहाड़ के पीछे तुम्हारे दुश्मनों का एक लश्कर आ रहा है,तो क्या तुम इस बात को मान लोगे ?
सब ने कहा, हां, बेशक, क्योंकि हमने आपको हमेशा सच बोलते देखा है । ।
आप स० ने फ़रमाया, तो मैं यह कहता हूं कि अगर तुमने अल्लाह के पैग़ाम को ना माना तो तुम्हारी क़ौम पर एक बहुत बड़ी आफ़त आएगी ।
यह सुनकर आपका चाचा अबु लहब बोला, क्या तुमने यही सुनाने के लिए हम को यहां बुलाया था ? यह कहकर ,उठा और चला गया । बाक़ी सरदार भी खफा होकर चले गए ।

लेकिन अल्लाह के रसूल ने इन सरदारों की नाराज़गी की परवाह न की और बुत परस्ती की बुराई खुल्लम-खुल्ला बयान करते रहे और लोगों को इस्लाम की दावत देते रहें । जिनके दिल अच्छे थे,वह आपकी बात को क़ुबूल करते थे , लेकिन जो दिल के नेक ना थे वह शरारत पर उतर आए और आपको तरह तरह से सताने लगे, रास्ते में कांटे डाल देते,आप नमाज़ पढ़ने खड़े होते तो छेड़ते, काबे का तवाफ करने जाते तो आवाज़ें कसते, लोगों में आपको शायर, जादूगर, पागल वगैरह मशहूर करते और जो नया आदमी आता

उसको पहले ही जाकर कह आते कि हमारे यहां एक शख़्स अपने बाप दादाओं के दीन से फिर गया है
,उसके पास ना जाना ।
आप स० उनकी यह तमाम सख़्तियां झेलते हुए, अपना काम करते रहते थे । क़ुरैश ने जब देखा कि यह किसी तरह बाज़ नहीं आता तो एक दिन वह इकट्ठे होकर, आपके चाचा अबू तालिब के पास गए और कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे बुतों को बुरा भला कहता है,हमारे बाप दादाओं को गुमराह बताता है और हमको नादान ठेराता है । अब या तो बीच से हट जाओ या तुम भी मैदान में आ जाओ, कि हम दोनों में से एक का फ़ैसला हो जाए । अबू तालिब ने देखा के वक्त अब नाजुक है, तो रसूलल्लाह को बुलाकर कहा, मुझ बूढ़े पर इतना बोझ ना डालो कि मैं ना उठाना सकूं । ज़ाहिर में अल्लाह के रसूल को अगर किसी की मदद का सहारा था तो यही चाचा थे, उनकी यह बात सुनकर आपकी आंखों में आंसू भर आए, फिर फ़रमाया, चाचा जान, अल्लाह की कसम ! ”अगर यह लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और दूसरे हाथ पर चांद रख दें, तब भी मैं अपने काम से बाज़ ना आऊंगा" आप की मज़बूती और पक्का इरादा देखकर और आपकी असर भरी बात को सुनकर अबू तालिब पर बड़ा असर हुआ, उन्होंने आपसे कहा, भतीजे जाओ, अपना काम किए जाओ, यह आपको कुछ नहीं कर सकते ।
चाचा का यह जवाब सुनकर, दिल को तसल्ली हुई और आपने अपना काम मज़ीद तेज़ी से करना शुरू किया ।

अक्सर क़बीलों के इक्का-दुक्का आदमी मुसलमान होने लगे थे । क़ुरैश के सरदारों ने देखा कि धमकी से काम नहीं चला, तो अब ज़रा फुसलाकर काम चलाएं । सबने मशवरा करके उत्बा नामक क़ुरैश के एक सरदार को समझा-बुझाकर आपके पास भेजा । उसने आपके पास पहुंचकर यह कहा, ए मुहम्मद ! क़ौम में फूट डालने से क्या फ़ायदा ?
अगर आप मक्के की सरदारी चाहते हैं तो वह हाज़िर है, अगर किसी बड़े घराने में शादी कराना चाहते हैं, तो हम उसके लिए भी तैयार हैं, अगर आपको माल दौलत चाहिए तो हम वह भी देने को तैयार हैं, मगर आप इस काम से बाज़ आ जाएं ।
सरदारों ने जो यह चाल चली थी, उन्हें उसकी कामयाबी में कोई शक नहीं था । उनका ख्याल था के मुहम्मद इन बातों में से किसी एक के लालच में आकर, ज़रूर हमसे सुलह कर लेंगे, लेकिन आपकी जबान से उत्बा ने वह जवाब सुना, जिसकी उसे ज़रा भी उम्मीद ना थी । आप स० ने उसको जवाब में, क़ुरआन की चंद आयते सुनाईं, उन आयतों को सुनकर, उसका दिल दहल गया । वापस आया तो क़ुरैश ने देखा कि उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है ।
उत्बा ने कहा, भाइयों ! मुहम्मद जो कलाम पढ़ते हैं, वह ना शायरी है ना जादूगरी, मेरी राय यह है कि तुम उनको उनके हाल पर छोड़ दो । अगर वह कामयाब होकर,अरब पर ग़ालिब आ गए तो यह हमारी इज़्ज़त है, वरना अरब के दूसरे क़बीले खुद उनका खात्मा कर देंगे । लेकिन क़ुरैश ने , उसकी

बात न मानी और अपनी ज़िद पर बराबर अड़े रहे ।
अब आपका यह काम था कि एक एक आदमी के पास जाते और उसको समझाते, कोई मान लेता, कोई चुप रहता, कोई झिड़क देता ।
इस हालत में जो लोग आप पर ईमान लाए और मुसलमान हुए, उनकी बड़ी तारीफ़ है और उनमें से बाज़ के मुसलमान होने का किस्सा बड़ा दिलचस्प है ।

हज़रत हमज़ा का मुसलमान होना

हज़रत हमज़ा आपके चाचा थे, और आपसे उम्र में कुछ ही बड़े थे । एक रिश्ते से आपकी खाला के बेटे और दूध शरीक भाई भी थे, इसलिए वह आपसे बड़ी मोहब्बत करते थे । वह बड़े पहलवान थे, ज़्यादातर घूमने फिरने और शिकार में मसरूफ़ रहते थे । एक दिन मक्का के एक बड़े सरदार अबू जहल (जो आपको बहुत सताया करता था) ने आपको बहुत बुरा भला कहा, एक बांदी खड़ी, ये बातें सुन रही थी । शाम को जब हज़रत हमज़ा शिकार से वापस आए तो इस बांदी ने जो कुछ देखा और सुना था,उनसे दोहरा दिया । हज़रत हमज़ा यह सुनकर गुस्से से लाल पीले हो गए और इसी हालत में काबे के सहन में, जहां क़ुरैश के बड़े-बड़े लोग चौकड़ी जमा कर बैठे थे, आए और अबू जहल के पास आकर कमान उसके सर पर मारी और कहा, लो मैं मुसलमान हो गया हूं, तुम्हारा जो जी चाहे मेरे साथ कर लों । वहां बैठे सब लोगों को जैसे सांप सूंघ गया । किसी में हजरत

हमज़ा जैसे पहलवान से मुक़ाबला करना तो दूर,मुंह पर उनकी मुखालफत करने की भी ताक़त नहीं थी ।

हज़रत उमर का मुसलमान होना

हज़रत हमज़ा ही की तरह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब भी क़ुरैश के ख़ानदान के एक नौजवान,बहादुर पहलवान थे ।
मिज़ाज में सख्ती थी, इसलिए जो बात करते थे, सख़्ती से करते थे । यह भी उस वक्त इस्लाम के बड़े दुश्मन थे । मुसलमानों को छेड़ा और सताया करते थे ।

एक दफ़ा किसी के भड़काने पर हज़रत उमर दिल में यह सोचकर चल पड़े , के आज मुहम्मद का सर क़लम कर दूंगा, ताकि रोज़ का झगड़ा खत्म हो । तलवार लेकर घर से निकले ही थे, के रास्ते में एक मुसलमान से उनकी मुलाकात हुई । उसने पूछा के, उमर ! किधर का इरादा है ? उन्होंने कहा, मुहम्मद का काम तमाम करने जा रहा हूं । उसने कहा, पहले अपने बहन और बहनोई की तो खबर लो ।
(उनकी बहन फ़ातिमा और बहनोई हजरत सईद बिन ज़ैद मुसलमान हो चुके थे)
इस कटाश भरी बात से वह बेताब हो गए, पलट कर अपनी बहन के घर का रास्ता लिया, वहां पहुंचे तो क़ुरआन पढ़ने की आवाज सुनी, क्रोध वश बहन

और बहनोई को जी खोलकर मारा । जब क्रोध शांत हुआ तो कहा कि अच्छा जो सूरत तुम पढ़ रहे थे, वह मुझे भी दिखाओ । उन्होंने वह वर्क़ लाकर हाथ पर रख दिया, हज़रत उमर जैसे-जैसे उसको पढ़ते जाते थे, उनका दिल कांपता जाता था, आख़िर वह चिल्ला उठे :-

اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله

मैं गवाही देता हूं इस बात की अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं और मैं गवाही देता हूं इस बात की के मोहम्मद अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं ।

उस वक्त आप स० हजरत अरक़म के घर में थे । हज़रत उमर सीधे वहां पहुंचे, दरवाज़ा बन्द था । आवाज़ दी तो जो मुसलमान वहां थे, हज़रत उमर को तलवार लिए देखकर डर गए ।
हज़रत हमज़ा ने कहा, आने दो, अगर अच्छी नियत से आया है तो बेहतर है,वरना उसी की तलवार से उसका सर क़लम कर दिया जाएगा ।
दरवाज़ा खुला और हज़रत उमर ने अंदर क़दम रखा तो रसूल अल्लाह खुद आगे बढ़े और उनका दामन पकड़ कर, फ़रमाया, क्यों उमर ! किस इरादे से आए हो ?
उन्होंने कहा, ईमान लाने के लिए ।
यह सुनकर मुसलमानों ने इस ज़ोर से अल्लाह हू अकबर (अल्लाह सबसे बड़ा है) का नारा मारा के मक्के की पहाड़ियां गूंज उठीं ।

हज़रत उमर के इस्लाम लाने से मुसलमानों की हिम्मत बढ़ गई । अब तक मुसलमान काफ़िरों के डर से काबे में जाकर नमाज नहीं पढ़ते थे । हज़रत उमर मुसलमान हुए तो सब मुसलमानों को साथ लेकर निकले और लड़कर, काबे के सहन में जाकर नमाज़ पढ़ी ।

मुसलमानों पर काफ़िरों के अत्याचार

क़ुरैश ने जब देखा कि मुसलमानों की तादाद रोज़ ब रोज़ बढ़ती जा रही है , और यह सैलाब रोके नहीं रुकता,तो उन्होंने ज़ुल्म और अत्याचार करने की ठानी ।
जिस ग़रीब मुसलमान पर, जिस काफ़िर का कब बस चला, वह उसको तरह-तरह से सताने लगा ।

तपती दोपहर में रेगिस्तानी और पथरीली ज़मीन पर, दो मुसलमान गुलामों,हज़रत बिलाल और हजरत सुहेब को पकड़कर, लिटाते और सीनों पर भारी पत्थर रख देते, फिर आग पर तपे भाले-बर्छियों से, उनके जिस्मों को दागते थे ।

इससे भी तसल्ली ना होती तो हज़रत बिलाल के गले में रस्सी बांध कर, लड़कों के हवाले कर देते और वे उनको गलियों में घसीटते फिरते, लेकिन उनका यह हाल था के इस हालत में भी ज़बान पर , "अल्लाह एक है ,अल्लाह एक है " होता था ।

हज़रत सुहेब को पकड़कर, इतना मारते कि वह बेहोश हो जाया करते, होश में आते, फिर मार मार कर अधमरा कर देते । हज़रत ख़ब्बाब को गर्म कोयलों पर चित लिटा दिया, और उस वक्त तक ना छोड़ा, जब तक कोयले ठंडे ना हो गए ।
हज़रत यासिर और उनके बेटे अम्मार और बीवी सुमैया, यह तीनों मक्का के गरीबों में से थे और शुरुआत के इस्लाम लाने वालों मैं से हैं । यासिर तो काफ़िरों के हाथों से तकलीफ़ उठाते उठाते शहीद हो गए । हज़रत सुमैया को अबू जहल ने ऐसी बरछी मारी, के उनके प्राण पखेरू उड़ गए । हज़रत अम्मार को तपती हुई जमीन पर लिटा कर इतना मारते कि वह बेहोश हो जाते ।
हज़रत अबू बकर ने हज़रत बिलाल और इन जैसे और कई मुसलमान गुलामों और बांदियों को उनके ज़ालिम और बेरहम मालिकों से खरीद कर, आज़ाद किया ।

यह तो गरीब मुसलमानों का हाल था । जो इज़्ज़त और दौलत वाले थे, वे अपने बुज़ुर्ग रिश्तेदारों के पंजों में थे ।
हज़रत उस्मान जब मुसलमान हुए तो उनके चाचा ने उनको रस्सी में बांधकर मारा, हज़रत ज़ुबैर मुसलमान हुए तो उनके चाचा उनको चटाई में लपेट कर, उनकी नाक में धुंआ देते थे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद मुसलमान हुए तो काबे में जाकर, सूरह रहमान पढ़ना शुरू की, तो हर तरफ़ से काफ़िर उन पर टूट पड़े और उनको बुरी तरह मारा ।

मुसलमान आकर, रसूल अल्लाह से काफ़िरों की शिकायत करते, और अर्ज करते के , अल्लाह के रसूल ! दुआ कीजिए कि मुसलमानों को अमन मिले । आप उनको तसल्ली देते और पिछले पैगंबरओं का हाल सुनाते,और उन्होंने अल्लाह के दीन के लिए जो तकलीफ़ें उठाई, उनको बयान करते , और फरमाते के सत्य का सूर्य ज़्यादा देर बादल में छुपा नहीं रह सकता, एक ज़माना आएगा जब अल्लाह तुमको इन पर ग़ल्बा (शासन) देगा ।

मुल्क हब्श की ओर हिजरत (पलायन)

जैसा कि बताया जा चुका है कि अरब का मुल्क लाल सागर के एक किनारे पर है । लाल सागर के दूसरे किनारे पर अफ़्रीका में हब्श का मुल्क है । वहां का इसाई बादशाह बहुत नेक था, उसको नजाशी कहते थे ।

जब मुसलमानों की तकलीफ़ है बढ़ गई तो नुबुव्वत के पांचवे साल रसूल अल्लाह की इजाज़त से,11 मर्द और 4 औरतें, कश्ती में बैठकर हब्श रवाना हो गए । नजाशी ने इन मुसलमानों को अपने यहां बड़े अमन व अमान में रखा ।
क़ुरैश को जब इसकी खबर हुई तो उन्होंने नजाशी के पास, अपने दो सफ़ीर भेजे कि यह हमारे मुजरिम हैं, इनको हमारे हवाले कर दीजिए । बादशाह ने मुसलमानों को बुलाकर हाल पूछा ।

हज़रत अली के भाई हज़रत जाफ़र ने मुसलमानों की तरफ़ से यह तक़रीर की :-

"ए बादशाह ! हम जाहिल थे, बुतों की पूजा करते थे, मुर्दार (मरा हुआ जानवर) खाते थे, बदकारी करते थे, पड़ोसियों को सताते थे, भाई भाई पर ज़ुल्म करता था, ताक़तवर कमज़ोरों को खा जाता था,ऐसे में हम में से एक शख़्स पैदा हुआ, जिसकी बुज़ुर्गी की सच्चाई और ईमानदारी से हम वाक़िफ़ थे , उसने हमको सच्चे दीन की दावत दी और कहा कि हम बुतों को पूजना छोड़ दें , सच बोलें, किसी पर अत्याचार ना करें, यतीमों का माल ना खाएं , पड़ोसियों को आराम दें, पवित्र महिलाओं पर लांछन ना लगाएं, नमाज पढ़ें, रोज़े रख़ें, दान दक्षिणा करे, हमने उस शख्स को अल्लाह का पैगंबर माना और उसकी बातों पर अमल किया । इस जुर्म पर हमारी क़ौम हमारी जान की दुश्मन हो गई और हम को मजबूर करती है कि हम इस दिन को छोड़ कर उसी पहली गुमराही में रहें ।"

नजाशी ने कहा,तुम्हारे पैगंबर पर जो कलाम उतरा है, उसमें से कुछ पढ़ कर सुनाओ ।
हज़रत जाफ़र ने सूरह मरियम की चंद आयते पढ़ीं ।
नजाशी पर उनका यह असर हुआ कि उसकी आंखों से आंसू जारी हो गए , उसने फिर कहा, यह कलाम और बाइबल दोनों एक तरह के मालूम होते हैं । यह कहकर क़ुरैश के आदमियों से कहा कि तुम वापस जाओ, मैं इन मज़लूमों

को तुम्हारे हवाले नहीं करूंगा ।
क़ुरैश के सफ़ीर वहां से नाकाम लौट गए । मुसलमानों ने जब नजाशी कि यह मेहरबानी देखी तो बाद में और भी बहुत से मुसलमान छुपकर मुल्क हब्श पहुंच गए , यहां तक कि उनकी तादाद वहां 83 हो गई । इन हिजरत करने वालों में आप स० की बेटी हज़रत रुक़य्या और उनके शौहर हज़रत उस्मान भी थे ।

घाटी में नज़रबंदी

जब क़ूरैश ने देखा कि कोई तदबीर काम नहीं कर रही तो क़ुरैश के सब खानदानों ने मिलकर , नुबुव्वत के सातवे साल में, यह मुआहिदा किया कि कोई शख़्स मुहम्मद के खानदान (बनू हाशिम) से कोई ताल्लुक नहीं रखेगा, ना उन में कोई शादी करेगा, ना कोई उनके साथ खरीद-फरोख्त (व्यापार) करेगा , और ना ही उनको खाने-पीने का कोई सामान देगा । जबतक कि वह मुहम्मद को हमारे हवाले ना कर दें ।
यह मुआहिदा लिखकर,काबे के दरवाज़े पर लटका दिया गया ।
अबू तालिब खानदान के सब लोगों को लेकर,एक दर्रे पर चले गए, जो अबू तालिब की घाटी के नाम से जाना जाता था । यहीं दूसरे मुसलमानों ने भी आकर, शरण ली और बहुत तकलीफ़ के साथ यहां रहने लगे । दरख़्तों के पत्ते खाकर गुजर-बसर करते, अगर सूखा चमड़ा मिलता तो उसको भूनकर खा लेते । बच्चे भूख से बिलबिलाते रहते थे ।

काफिर मुसलमानों की हालत देख कर खुश होते थे ।
आप स० और मुसलमानों ने बड़े सब्र के साथ 3 साल तक उस घाटी में रहकर दिन काटे ।
फिर क़ुरैश के ही कुछ लोगों ने इस मुआहिदे की मुखालफत की , और साथ ही अल्लाह के हुक्म से उस मुआहिदे के पर्चे को दीमक ने खाकर साफ़ कर दिया, सिर्फ उसमें अल्लाह का नाम बाक़ी रहा । इस मोजज़े (करिश्मा) को देखकर, और क़ुरैश के कुछ लोगों की मुखालफत के कारण, यह मुआहिदा तोड़ दिया गया ।

अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा की वफ़ात

मुसलमानों को घाटी से निकलकर अपने घरों में आए हुए, कुछ ही दिन गुजरे थे के रसूल अल्लाह के प्यारे चाचा अबू तालिब ने वफ़ात पाई और उनके चंद रोज बाद ही आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा का भी इंतकाल हो गया । इस साल को आपने आमुल हुज़्न (ग़म का साल) क़रार दिया ।

आप स० पर मुसीबतें

इस्लाम के दुश्मनों को अब तक अबू तालिब के रोब व दाब और हज़रत ख़दीजा के लिहाज़ के कारण, खुद रसूलल्लाह पर हाथ उठाने की हिम्मत नहीं होती थी ।

लेकिन इन दोनों के दुनिया से चले जाने के बाद,अब वे खुल्लम खुल्ला रसूल अल्लाह के साथ बुरा सुलूक करने लगे ।
एक दफ़ा आप कहीं जा रहे थे कि किसी ज़ालिम ने सर मुबारक पर मिट्टी डाल दी, आप इसी तरह घर आए , आपकी साहबज़ादी (पुत्री) पानी लेकर आईं , वह सर मुबारक को धोती जातीं और बाप की सूरत देखकर रोती जातीं । आपने फरमाया , बाबा की जान ! रो मत, अल्लाह तेरे बाप की मदद ज़रूर करेगा ।
एक दफ़ा आप स० काबे के सहन में नमाज पढ़ रहे थे,क़ुरैश के सरदार भी वहां चौकड़ी जमाए बैठे थे । नमाज़ पढ़ते देख कर कहने लगे कि कोई ऊंट की ओझड़ी ला कर , इस की गर्दन पर रख दे, एक ख़बीस ने ये काम किया , उस बोझ से आपकी पीठ दब गई । किसी ने रसूल अल्लाह की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा से जाकर, इसकी खबर दी तो वह आईं और किसी तरह उस गंदगी को हटाकर, दूर किया ।
ऐसे ही एक दफ़ा एक ज़ालिम ने, आपकी गर्दन में चादर का फंदा डालकर, चाहा के गला घोंट दे , हज़रत अबू बकर ने दौड़कर,आपको बचा लिया और उससे कहा, क्या एक शख्स की जान सिर्फ़ इतनी बात पर लेना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा ईश्वर अल्लाह है ?

ताइफ़ का सफर

आप स० ने मक्का वालों के बुरे सुलूक को देखते हुए, सोचा के ताइफ़ जाकर वहां के लोगों को इस्लाम की दावत दें ।
ताइफ़ मक्का से 40 मील दूर दो पहाड़ों के बीच स्थित एक हरा-भरा शहर था । आप हज़रत ज़ैद को लेकर वहां पहुंचे , और लोगों को अल्लाह का दीन और संदेश सुनाया, लेकिन अफ़सोस मक्का वालों की तरह उन्होंने भी इस्लाम क़ुबूल नहीं किया, बल्के आप पर पत्थर बरसाए, जिससे आपके पैरों की जूतियां खून से भर गईं । आप दर्द के मारे, कहीं बैठ जाते तो उठा देते, और पत्थर मारते रहते, आपने किसी तरह जान बचाकर एक बाग़ में पनाह ली ।

वहां पर अल्लाह का एक फरिश्ता आया और उसने आपसे कहा , अगर आप हुक्म दें तो इन दोनों पहाड़ों को मिलाकर, पूरे ताइफ़ को तबाह बर्बाद कर दिया जाए ।
लेकिन आप स० ने फ़रमाया , नहीं , यह लोग ईमान नहीं लाते लेकिन शायद, इन की औलादें ईमान ले आएं, इसलिए इनको छोड़ दो ।

मैराज का वाक़िआ

13 साल तक आप स० ने , लोगों को अल्लाह का दीन और संदेश पेश किया , जिसके बदले में, लोगों ने आपको बुरा भला कहा और बेइंतेहा तकलीफ़ें पहुंचाईं , इसलिए अल्लाह ने आपकी दिल जोई (दिल खुश करना) , और

अपने इनामात (उपहार) से नवाज़ने के लिए,आपको आसमान पर बुलाया । इसी क़िस्से को मैराज कहते हैं । मैराज अरबी शब्द है, जिसका अर्थ ऊपर चढ़ना होता है ।

हुआ यूं के ताइफ़ से लौटने के बाद, एक रात आप स० चाचा अबू तालिब की बेटी उम्मे हानी के घर थे ।
हज़रत जिब्राइल आए, और आपको नींद से जगा कर ,अर्ज़ किया के अल्लाह ने आपको मुलाक़ात के लिए बुलाया है ।
फिर आपको काबे में ज़मज़म के कुएं के पास ले जाकर, आपका सीना मुबारक चाक किया, और आपका दिल निकाल कर सोने के एक तश्त में रखकर, ज़मज़म से धोया और फिर दिल को उसकी जगह रखकर,सीने को बंद कर दिया ।
फिर बुराक़ नामक एक जानवर पर आपको सवार करा कर, बेतुल मुकद्दस (मस्जिदे अक़्सा जो फ़लस्तीन में स्थित है) ले गए । वहां अल्लाह के हुक्म से पिछले तमाम नबियों की रूहें मौजूद थीं । आपने उन सब नबियों को इमाम बनकर, नमाज़ पढ़ाई । फिर आप स० वहां से रफ़ रफ़ (लिफ्ट जैसी कोई चीज़)नामक चीज़ के ज़रिए ऊपर पहले आसमान पर, फिर दूसरे,तीसरे ,चौथे ,पांचवें, छठे और आख़िर में सातवें आसमान तक पहुंच गए । सातवें आसमान की आख़िरी हद में एक बेरी का पेड़ है,जिस को सिदरतुल मुंतहा कहा जाता है । यहां आकर हज़रत जिब्राइल ने आपसे कहा के यहां से आगे आप अकेले जाएंगे, क्योंकि मुझे यही तक इजाज़त थी,अगर मैं इस बेरी के

पेड़ से आगे बढूंगा तो मेरे पर जल जाएंगे और मेरा अस्तित्व ही मिट जाएगा ।
फिर आपने आगे जाकर अल्लाह से मुलाकात की , और अल्लाह को अपनी आँखों से देखा । फिर अल्लाह ने आपको सृष्टि का अगला पिछला समस्त ज्ञान दिया और मुसलमानों पर दिन में 5 वक़्त नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ फ़रमाया ।
उसके बाद आप फिर हज़रत जिब्राइल के पास आए और उन्होंने आपको स्वर्ग और नर्क का भ्रमण कराया, और फिर बुराक़ पर सवार करा के आपको उम्मे हानी के घर लाकर छोड़ दिया ।
रास्ते में आपको क़ुरैश के तीन व्यापारिक क़ाफ़िले मिले, जिनमें से बाज़ को आपने सलाम किया और उन्होंने आपकी आवाज़ पहचानी, और मक्का वापस लौटने के बाद इस बात का इक़रार भी किया ।
सुबह उठकर जब आपने लोगों को यह किस्सा सुनाया तो वे हंसने लगे और आप का मज़ाक उड़ाने लगे, उनमें से कुछ जो बैतुल मुकद्दस होकर आए हुए थे, उन्होंने आपसे ऐसी ऐसी चीज़ें पूछीं, जिन्हें कोई आम हालत में याद नहीं रख सकता, जैसे वहां कितनी खिड़कियां,कितने रोशनदान, कितने दरवाजे हैं ? अल्लाह के रसूल ने हज़रत जिब्राइल के ज़रिए उन सबके ठीक-ठीक जवाब दिए, लेकिन वह लोग फिर भी आपकी बात को झूठ ही कहते रहे ।
किसी ने हज़रत अबू बकर से कहा कि तुम्हारा दोस्त ऐसा किस्सा बयान कर रहा है । तो उन्होंने फ़रमाया कि अगर अल्लाह के रसूल ने ऐसा कहा है तो सच ही कहा होगा ।

जब यह बात आप स० को पता चली तो आपने हज़रत अबू बकर को सिद्दीक़ (सत्यवादी, वफ़ादार दोस्त) की उपाधि प्रदान की ।

मदीने में इस्लाम का आगमन

जेसा के बताया जा चुका है कि अरब वाले काबे की बड़ी इज़्ज़त करते थे । और हर साल उसके दर्शन हेतु अरब के अलग-अलग इलाकों और क़बीलों से लोग मक्का में आकर जमा हुआ करते थे । इस मौक़े पर बड़े बड़े मेले और मजमे लगा करते थे । आप स० उन मेलों और मजमों मैं जाकर अल्लाह का संदेश और कलाम आम लोगों को सुनाते और बुत परस्ती एवं झूठे ख़ुदाओं की पूजा से बचने की नसीहत करते थे ।
इन आने वालों में यसरब (मदीना का पुराना नाम)शहर के दो मशहूर कबीलों ओस और ख़ज़रज के लोग भी हुआ करते थे ।
इन दोनों क़बीलों के लोग काश्तकार थे । उनके आसपास यहूदियों की आबादी थी जो सौदागर और महाजन थे, वे लोगों को सूद और पैदावार पर कर्ज़ दीया करते थे और बड़ी सख़्ती से वसूल करते थे । जिहालत की वजह से ये दोनों क़बीले आपस में लड़ते रहते थे और उन पर यह महाजन यहूदी गोया एक तरह की हुकूमत करते थे । एक तो आपस में लड़ लड़ कर और दूसरे यहूदियों के फंदे में फंस कर यह क़बीले तबाह हो गए थे ।
यहूदियों की किताब में एक पैगंबर के आने की खबर थी और उनकी अक्सर महफिलों में उसके बारे में बात होती रहती थी । यह बातें ओस और ख़ज़रज

वालों के कानों में भी पडा करती थीं । नुबुवव्त के दसवें साल इन दोनों कबीलों के 6 लोग मक्का आए । आप स० उनसे उक़बा नामक जगह पर मिले और इनको अल्लाह का कलाम सुनाया ।
आपसे मिलकर और आपकी बातें सुनकर, उन्होंने एक-दूसरे से कहा कि यह तो वही पैगंबर मालूम होते हैं जिनके बारे में यहूदी बात करते रहते हैं । कहीं ऐसा ना हो कि यहूदी हमसे बाज़ी ले जाएं, ये कहकर सबने एक साथ इस्लाम कुबूल कर लिया ।
दूसरे साल मदीना से 12 आदमी आकर मुसलमान हुए । साथ ही उन्होंने यह प्रार्थना भी की के हमारे साथ कोई ऐसा आदमी भेज दीजिए जो हमें इस्लाम की बातें सिखाए और हमारे शहर में जाकर प्रवचन करें । आपने इस काम के लिए हजरत मूसब बिन उमैर को चुना । यह अब्द मुनाफ़ के पोते और पुराने मुसलमानों में से थे । वह इन लोगों के साथ गए और वहां जाकर लोगों के घरों में फिर फिर कर, इस्लाम का प्रचार किया । इस प्रचार के असर से लोग मुसलमान होने लगे और 1 साल के अंदर अंदर मदीना के अक्सर घराने मुसलमान हो गए ।

मदीना वालों की बेअत (वचनबद्धता)

अगले साल जब हज का ज़माना आया तो मदीने से 72 आदमी रसूल अल्लाह से मिलने आए । और उन्होंने आपके हाथ पर आपके लिए अपनी जान माल और औलाद तक कुर्बान कर देने और आपकी सहायता हेतु हर

हद से गुज़र जाने की बैअत की ।
उस वक्त आपके साथ आपके चाचा हज़रत अब्बास भी थे, जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे, मगर आपसे बहुत मोहब्बत रखते थे ।
उन्होंने उन लोगों से कहा के मोहम्मद अपने खानदान में बड़ी इज़्ज़त रखते हैं । दुश्मनों के मुक़ाबले में हम हमेशा उनका साथ देते रहे, अब यह तुम्हारे पास जाना चाहते हैं अगर तुम मरते दम तक इनका साथ दे सको तो बेहतर , वरना अभी से जवाब दे दो ।
इस पर उन लोगों ने कसम ख़ा कर, कहा के वे आप की हिफाज़त और आपके हुकुम को पूरा करने के लिए अपनी जाने तक लुटा देंगे ।
फिर उन लोगों ने आपसे भी एक वादा लिया के जब इस्लाम को बल और शक्ति प्राप्त हो जाएगी तो आप हमें छोड़कर नहीं जाएंगे ।
आपने मुस्कुराकर फ़रमाया, "तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून है,तुम मेरे हो और मैं तुम्हारा हूं" ।
फिर आपने उनमें से 12 सरदार चुने, जिनके नाम उन्हीं लोगों ने बताए थे । उन 12 में से 9 ख़ज़रज के और 2 ओस के थे ।

मदीना की ओर हिजरत

क़ुरैश को जब इस बात की खबर हुई तो उनके क्रोध की कोई सीमा न रही और वे मुसलमानों को अब और ज़्यादा तकलीफ़ पहुंचाने लगे । उस वक्त आप स० ने सहाबा (अनुयाई) को मदीना की ओर पलायन करने का मशवरा

दिया , सहाबा ने धीरे धीरे क़ुरैश से छुपकर, एक एक दो दो करके मक्का से मदीना की ओर पलायन करना शुरू कर दिया । यहां तक के मक्का में आप स० , हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ , हज़रत अली और थोड़े से वह मुसलमान जो यात्रा के लिए धन ना होने के कारण नहीं जा सकते थे, रह गए ।
हज़रत अबू बकर ने भी हिजरत का इरादा किया था लेकिन आप स० उनको फ़रमाया कि अभी रुक जाओ, यहां तक कि अल्लाह मुझे भी हिजरत की इजाज़त दे दे । अबू बकर इंतज़ार में रहे और दो ऊंटनीयां, इस सफ़र के लिए तैयार की , एक अपने लिए और दूसरी अल्लाह के रसूल के लिए ।

काफ़िरों को जब मुसलमानों के पलायन का पता चला तो उन्होंने मशवरे के लिए मीटिंग की, कि आप स० के साथ क्या मामला किया जाए । किसी ने क़ैद में डालने की राय दी, और किसी ने देश निकाले की , मगर उनके चालाक लोगों ने कहा कि यह मुनासिब नहीं, क़ैद में डालने की सूरत में, उनक हमदर्द और सहायक हम पर हमला बोल देंगे और उन्हें हमसे छुड़ा लेंगे। और जिला वतन करने की सूरत में, सरासर हमारे लिए नुक़सान है,क्योंकि उनके अच्छे स्वभाव, और अल्लाह के संदेशों को सुनकर,दूसरे लोग उनकें साथ हो जाएंगे और फिर वह उनकी मदद से हम पर हमला बोल देंगे ।
अबू जहल ने यह राय दी, के आपको कत्ल कर दिया जाए और कत्ल में हर खानदान का एक एक आदमी शरीक हो, ताकि आप स० का खानदान सब से लड़ कर, बदला लेने की हिम्मत न कर पाए । सब ने इस राय को पसंद किया

और हर खानदान का एक जवान इस काम के लिए तैयार हो गया कि फ़लां रात में, यह काम किया जाएगा ।
इधर अल्लाह ने आपको उनके मशवरे की इत्तला दे दी और आपको हिजरत का हुकुम फ़रमाया ।
मक्का वालों को अल्लाह के रसूल के मज़हब से तो सख्त मुखालफत थी लेकिन फिर भी सबको आपकी अमानत और सच्चाई पर बड़ा भरोसा था, तो बहुत से लोगों की अमानतें आपके पास थीं । आपने यह अमानतें हज़रत अली के सुपुर्द कर के फ़रमाया कि आज रात तुम मेरे बिस्तर पर आराम करना और सुबह लोगों को उनकी अमानते देकर, तुम भी मदीना चले आना ।
उसके बाद आप स० घर से बाहर तशरीफ लाए तो दरवाज़े पर काफीरों का एक मेला लगा हुआ था । आप सूरह यासीन पढ़ते हुए बाहर निकले, अल्लाह के हुक्म से उन काफिरों की आंखों पर पर्दा सा पड़ गया और वह आपको ना देख सके ।
आप हज़रत अबू बकर के घर पहुंचे, वह पहले से तैयार थे । आप उनके साथ मक्का के पास ही सूर नामक एक पहाड़ के दर्रे में जाकर, छुप गए ।
उधर उन काफिरों ने, सुबह तक, आपके बाहर आने का इंतज़ार किया , लेकिन जब सुबह मालूम हुआ कि आप की जगह हज़रत अली हैं । तो परेशान हो गए और चारों तरफ़, आप की तलाश में अपने आदमी दौड़ा दिये , आपको पकड़कर लाने पर , 100 ऊंट का इनाम घोषित कर दिया ।

बहुत सारे आदमी आप की तलाश में निकल खड़े हुए । कुछ लोग पैरों के निशान पर तलाश करते हुए, ठीक उस ग़ार के किनारे पर पहुंच भी गए, उस वक्त हज़रत अबू बकर घबराने लगे , अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि घबराओ नहीं अल्लाह हमारे साथ है ।

अल्लाह के हुकुम से रात रात में, दर्रे के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया था और जंगली कबूतर ने घोंसला बना लिया था । यह देखकर वह तलाश करने वाले वहां से चले गए ।

आप स० और हज़रत अबू बकर 3 रात तक उसी दर्रे में छुपे रहे , यहां तक के तलाश करने वाले मायूस होकर बैठ गए ।

इन 3 दिनों में हजरत अबू बकर के बेटे अब्दुल्लाह रात को छुपकर, आपके पास आते और फिर सुबह से पहले ही मक्का पहुंच जाते थे । दिनभर क़ुरैश की खबरें सुनकर, रात को आपके सामने बयान करते थे । और उनकी बहन अस्मा हर रात खाना, आपके पास पहुंचाती थीं ।

अरब के लोग पैरों के निशान की बहुत पहचान रखते थे । इसलिए अब्दुल्लाह ने अपने गुलाम से कह रखा था कि रोजाना बकरियां चराने के लिए उधर तक ले जाया करें, ताकि वहां से कदमों के निशान मिट जाएं ।

तीसरे दिन हज़रत अबू बकर के आज़ाद किए हुए, गुलाम आमिर बिन फ़हीरा वह दोनों ऊंटनीयां लेकर, पहुंचे, जो इसी सफ़र के लिए हज़रत अबू बकर ने तैयार कर रखी थी और उनके साथ अब्दुल्लाह बिन अरीक़ेत पहुंचे,जिनको रास्ता बतलाने के लिए, दाम देकर साथ लिया था ।

नबी ए पाक स० अपनी ऊंटनी जदआ पर सवार हो गए और हज़रत अबू बकर दूसरी ऊंटनी पर, हज़रत अबू बकर ने अपने साथ आमिर बिन फ़हीरा को भी खिदमत के लिए बिठा लिया। अब्दुल्लाह बिन अरीक़ेत आगे आगे रास्ता दिखाने के लिए चले।
रास्ते में, एक औरत उम्मे माबद बिनते खालिद के घर पर आपका गुज़र हुआ। उनकी बकरी जो बिल्कुल दूध नहीं देती थी, आपने उसके थनों पर हाथ फेर दिया तो वह दूध से भर गए। फिर आपने और आपके साथियों ने उस बकरी का दूध पिया।
आपके यहां से चले जाने के बाद, जब उम्मे माबद के शौहर आए और उस मरियल सी बकरी के भरे थनों को देखा , तो हैरान रह गए। पूछने पर उनकी बीवी ने बताया के आज एक निहायत शरीफ़ और खानदानी जवान हमारे यहां थोड़ी देर के लिए मेहमान हुए थे। यह सब उनके हाथ की बरकत है। शौहर ने सुन कर कहा, कि खुदा की कसम यह तो वही मक्का वाले पैगंबर मालूम होते हैं। फिर बाद में इन दोनों ने भी हिजरत की और मदीना पहुंचकर मुसलमान हो गए।

बहरहाल उम्मे माबद के यहां से रवाना होकर, आप मदीने के निकट क़ाबा नामी जगह पर पहुंचे।
यहां पर आपके इंतज़ार के शौक़ में मदीने के कुछ अंसारी साहाबा भी ठहरे हुए थे।
अल्लाह के रसूल और आपके साथियों ने क़बा में 14 दिन क़याम किया।

यहीं पर हज़रत अली मक्का के लोगों की अमानतें उनको देकर, आपसे आ मिले ।
यहां आपने एक मस्जिद की बुनियाद डाली, यह इस्लाम की सबसे पहली मस्जिद थी ।

इस्लामिक सन की शुरुआत

उस वक्त आपके हुकुम से इस्लामिक सन की शुरुआत हिजरत से की गई । और कुछ इतिहासकारों के अनुसार इस्लामिक सन की शुरुआत हज़रत उमर ने की है ।

आप स० का मदीने में प्रवेश

जुमा के दिन आप स० क़बा से रुखसत होकर मदीना की तरफ रवाना हुए । मदीने के अनसार प्रसन्नता से आप की सवारी के इर्द-गिर्द चल रहे थे । कोई पैदल,कोई सवार, आपकी ऊंटनी की लगाम थामने को हर शख्स आगे बढ़ा जा रहा था । हर शख्स की दिली तमन्ना थी कि आप उसके अतिथि बनें, औरतें और बच्चे प्रसन्नता के गीत गा रहे थे ।
यह जुमा का दिन था, इसलिए बनी सालिम बिन औफ़ के मकानों के करीब जुमा का वक्त हो गया तो आप सवारी से उतरे और जुमा अदा करने के बाद फिर सवार हो गए ।

अब जिस अंसारी सहाबी का मकान रास्ते में पड़ता, वह आपसे प्रार्थना करता कि मेरे ग़रीब ख़ाने पर क़याम कीजिए । परंतु आप स० ने फ़रमाया कि तुम ऊंटनी को उसके हाल पर छोड़ दो, ये अल्लाह के हुक्म से चलेगी और जहां अल्लाह की तरफ से क़याम का हुक्म होगा, यह वहां ठहर जाएगी ।

ऊंटनी चलती हुई आपके ननिहाल बनी अदि बिन नज्जार में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के मकान के सामने बैठ गई ।

तो यूं आप अबू अय्यूब के मकान पर अतिथि हुए,और आप 1 महीने तक उनके ही मकान पर रहे ।

मस्जिद-ए-नबवी की तामीर

अबू अयूब के मकान के सामने जिस जगह ऊंटनी बैठी थी, वह बनी नज्जार के दो लडकों सहल और सुहेल की थी ।

आपने उस जगह को खरीद कर उसमें मस्जिद-ए-नबवी बनाई । आप स० ने ख़ुद सहाबा के साथ मिलकर इस मस्जिद की तामीर में हिस्सा लिया था । इस मस्जिद की दीवारें कच्ची ईंटों की, सुतून ख़ुजूर के दरख़्त की लकड़ी के और छत ख़ुजूर की शाख़ों से बनाई गई थी । और क़िब्ले का रुख बैतूल मुकद्दस की ओर रखा गया था । क्योंकि वही उस वक्त मुसलमानों का क़िब्ला था , फिर 1 साल बाद अल्लाह के हुक्म से मक्का को क़िब्ला घोषित कर दिया गया । और मुसलमान उसकी ओर रुख करके नमाज़ पढ़ने लगे ।

मस्जिद के 3 दरवाज़े थे । बाबुल रहमत , बाबुल नबी , एक दरवाजा पीछे की तरफ़ । मस्जिद के पूरबी हिस्से में दो हुजरे (छोटे कमरे) बनाए गए । जिनमें हज़रत आयशा और हज़रत सौदा मक्का से आकर, रहीं ।

सन 1 हिजरी

मदीने की व्यवस्था संबंधित कार्य

वह सहाबा जो मक्का से मदीना हिजरत करके आए थे , वे मदीने में बिल्कुल अजनबी और मुसाफिराना हालत में थे । उनमें से ज़्यादातर अपने साथ सामान भी नहीं लाए थे । और ना उनका कोई रहने का ढिकाना था । इसलिए पहले आप स० ने 1 दिन, जब हज़रत अनस बिन मालिक के मकान में 90 मुसलमान जमा थे । जिनमें से आधे मुहाजिर और आधे अंसार सहाबा थे । आपने दो दो व्यक्तियों के दरमियान भाईचारा कराया । यानी ये मुआहिदा कराया के एक मुहाजिर और एक अंसारी अब से बिल्कुल सगे भाई हैं। यहां तक के एक दूसरे की जायदाद में भी हक़दार होंगे ।

इस भाईचारे को अंसारी सहाबा ने बड़े दिल से निभाया । अपने बीवी बच्चों से पहले वे लोग अपने मुहाजिर भाई के खाने और ज़रूरत की फ़िक्र करते थे ।

एक वाक़िआ उदाहरण हेतु पेश है, एक बार एक अंसारी सहाबा के घर खाना कम था तो उन्होंने खाने के समय अंधेरा कर दिया और अंधेरे में वह और

उनकी बीवी बच्चे मुंह चलाकर आवाज़ निकालते रहे ताकि मुहाजिर सहाबी यह समझें के वे लोग भी खा रहे हैं और मुहाजिर सहाबी ने वह खाना पूरा खा लिया । अंसारी सहाबी और उनके घर वाले भूखे रह गए ।
अंसार का आपके इस आदेश और मक्का में की गई बैअत पर पालन का ऐसा प्रदर्शन रहा जो स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है ।

फिर क्योंकि मुसलमानों की तादाद ज़्यादा ना थी और इस छोटी सी जमात का तमाम अरब दुश्मन बना बैठा था । इसलिए हुज़ूर स० ने मदीने और मदीने के आसपास के सभी क़बीलों से शांति संधियां की । जिसके अनुसार क़बीले एक दूसरों पर हमले नहीं करेंगे और बाहर से हमला करने वाले दुश्मन से सब मिलकर मुक़ाबला करेंगे और मदीना की रक्षा करेंगे ।

ये दोनों बातें मदीने की व्यवस्था में सुधार तथा मुसलमानों के यहां पर शांति से रहने के लिए आवश्यक थीं ।

इस्लामिक युद्ध

किसी भी धर्म की पूर्णता इस बात से सिद्ध होती है कि वह धर्म जीवन के हर क्षेत्र में अपने अनुयायियों को मार्गदर्शन देने में सक्षम हो ।
किसी भी सभ्य समाज की रचना हेतु शासन शास्त्र के सबसे अहम भाग राजनीति का ज्ञान अत्यंत आवश्यक होता है । और राजनीति में युद्ध की एक अहम भूमिका है ।

दुनिया में किसी भी धर्म की धार्मिक किताबें युद्ध के विचार से और उसकी आवश्यकता के वर्णन से वंचित नहीं है ।
परंतु इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जिसने युद्ध में भी ऐसे उसूल और शर्तें बताईं हैं जो किसी दूसरे धर्म में नहीं मिलती हैं ।
सभी धर्मों में युद्ध सिर्फ़ शौर्य प्रदर्शन और धन अर्जित करने का नाम हैं । जिसके लिए वे किसी भी हद तक गुज़र जाते हैं । इतिहास की किताबें ऐसे युद्धों के वर्णन से भरी पड़ी हैं जो सिर्फ धन अथवा ज़मीनों के लिए लड़े गए । किन्तु इस्लाम युद्ध की इजाज़त सिर्फ़ आख़री रास्ते के तौर पर देता है । और साथ ही युद्ध में महिलाओं,बच्चों, बूढ़ों, कमज़ोरो और दूसरे धर्म के धार्मिक गुरुओं को हानि पहुंचाने की बिल्कुल अनुमति नहीं देता ।

मक्का में आप स० 13 साल तक लोगों के बुरे व्यवहार को और उनकी तरफ़ से दी जाने वाली हर तकलीफ़ को बर्दाश्त करते हुए इस्लाम का संदेश देते रहे । हद यह के उन की वजह से आपको अपना घर बार छोड़कर मदीना आकर बसना पड़ा । अल्लाह ने मक्का में आपको सिर्फ़ प्रवचन करने का हुक्म दिया था । अगर आप या आपके सहाबा को कोई तकलीफ पहुंचाता तो उसको पलट कर जवाब देने और लड़ने से मना किया गया था । लेकिन मदीना में आ जाने के बाद आपको काफ़िरों से लड़ने और अपनी हिफाज़त के लिए उन से जंग करने की इजाज़त मिल गई । तो इस इजाज़त के बाद आपने सियासी दबाव बनाने के लिए मदीने के पास से गुजर कर शाम जाने वाले क़ुरैश के काफिलों को रोकना शुरू कर दिया ।

नोट : इस्लामिक युद्ध का विषय बहुत ही अहम है । इस पर बहुत सी किताबें लिखी गई हैं,जिनमें दूसरे धर्मों और इस्लामिक युद्धों का आंकलन करके, इस्लामिक युद्ध की विशेषताओं को साबित किया गया है ।

परंतु इस पुस्तक में इतनी लंबी और बड़ी बहस बयान कर पाना संभव नहीं । उदाहरण के लिए दो वाक़ियात पेश करता हूं । एक मर्तबा एक जंग में, एक सहाबी एक दुश्मन से लड़ कर , उस पर हावी हो गए और जब बिल्कुल तलवार से उसकी गर्दन उतारने को हुए तो , उसने कहा " कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया ", लेकिन उन सहाबी ने फिर भी उसे कत्ल कर दिया । आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम को जब ये बात मालूम हुई , तो आप बहुत नाराज हुए और उन सहाबी से कहा, तुमने ऐसा क्यों किया ? उन्होंने कहा , ऐ अल्लाह के रसूल , वह अपनी जान बचाने के लिए झूठ बोल रहा था । इरशाद फरमाया , क्या तुमने उसके दिल में झांक कर देखा था, के वह सच बोल रहा था या झूठ । इसी तरह एक मर्तबा हजरत अली दुश्मन से जंग कर रहे थे । आप उसे पछाड़कर , उसके सीने पर सवार हो गए । जब वह शख्स सारे दांव आजमा कर भी उनके शिकंजे से न निकल पाया तो उसने गुस्से से हज़रत अली के मुंह पर थूक दिया । हजरत अली उसे फ़ौरन छोड़कर अलग हो गए । उस आदमी को बड़ा ताज्जुब हुआ और उसने कहा , " अली क्या बात है कि तुम मुझे बिल्कुल मारने पर तैयार थे और फिर जब कि मैंने तुम्हारे मुंह पर थूक भी दिया था , तो तुम मुझे मारने से पीछे क्यों हट गए ? " हज़रत अली ने फरमाया कि मै तुमसे इसलिए लड़ रहा था के तुम

अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मन बनकर अल्लाह के दीन को नुकसान पहुंचाने के लिए आए थे । लेकिन जब तुमने मेरे मुंह पर थूका तो मुझे गुस्सा आ गया । अब अगर मैं तुम्हारा क़त्ल कर देता तो यह अल्लाह की रज़ा और उसके दीन के लिए ना होता बल्कि यह मेरे गुस्से को ठंडा करने के लिए होता । बहरहाल बात समझने के लिए ये दो वाक़ियात ही काफ़ी हैं ।

बाकी आगे जब युद्धों का बयान आएगा , तो उन्हें पढ़कर आप इस्लामिक युद्ध की विशेषताओं से भलीभांति परिचित हो जाएंगे, और ये जान जाएँगे के इस्लाम किन परिस्थितियों में और किन शर्तों पे युद्ध की अनुमति देता है ।

सन 1 हिजरी के अहम वाक़िआत

जिस युद्ध में आप स० ख़ुद तशरीफ़ ले गए उसको गज़वा और जिस लश्कर को आपने ख़ास ख़ास सहाबा की निगरानी में रवाना किया, उसको सरिय्या कहते हैं ।
इस साल आपने दो सरिय्ये रवाना किये ।

1: सरिय्या हज़रत हमज़ा : हिजरत से 7 महीने बाद रमज़ान में नबी ए करीम ने हज़रत हमजा को 30 मुहाजिरीन पर कमांडर बनाकर एक सफेद झंडा दिया और क़ुरैश के एक काफिले की तरफ़ रवाना किया, लेकिन जब ये हज़रात दरिया के किनारे पर पहुंचे और मुकाबला होने ही को था । तो मजदी बिन अम्र जहनी ने दरमियान में पड़कर जंग को रोक दिया ।

2 : सरिय्या हज़रत उबैदा: फिर शव्वाल में हज़रत उबैदा बिन अल हारिस को 60 आदमियों पर कमांडर बनाकर, बतने राबी नामी जगह , अबू सुफियान के मुक़ाबले के लिए रवाना फ़रमाया । वहां पहुंचे तो 200 क़ुरैश अबू सुफियान के साथ थे । कोई लड़ाई नहीं हुई लेकिन साद इब्न अबी वक़्क़ास ने काफिरों पर तीर फेंका और यह पहला तीर था जो मुसलमानों की तरफ़ से काफिरों पर फेंका गया था ।

3 : इसी साल नमाज़ के लिए वक़्त पर मुसलमानों को बुलाने के लिए अज़ान की शुरुआत हुई ।

सन 2 हिजरी

सरिय्या अब्दुल्लाह बिन जहश : इस साल आप स० ने 12 मुहाजिरीन पर हज़रत अब्दुल्ला बिन जहश को अमीर (कमांडर)बना कर नख़ला नामक जगह में एक क़ुरैशी काफिले के मुकाबले के लिए रवाना किया । मुकाबला हुआ तो काफिरों का सरदार मारा गया और 2 आदमी गिरफ्तार हुए । बाक़ी भाग गए और मुसलमानों को बहुत सा माल हाथ आया ।

गज़वा ए बदर

मदीना से तक़रीबन 80 मील के फासले पर एक कुएं का नाम है बदर और इसी नाम से एक गांव की आबादी भी है । इस्लाम का सबसे बड़ा और पहला

युद्ध यहीं पर हुआ । जिसमें मुसलमानों के पास हथियारों की कमी और काफिरों से तादाद में बहुत कम होने के बावजूद जबरदस्त विजय प्राप्त हुई ।

हुआ यूं कि एक मर्तबा क़ुरैश का एक बड़ा तिजारती काफिला शाम से आ रहा था । और जैसा के मालूम हो चुका है कि काफिरों के ज़ोर को दबाने और सियासी दबाव बनाए रखने के लिए आप स० उनके तिजारती काफिलों को रोकने लगे थे इसलिए जब आपको इस काफिले की इत्तला हुई तो 12 रमज़ान को 313 सहाबा के साथ मुकाबले के लिए खुद तशरीफ ले गए । मदीने से 40 मील के फासले पर रोहा नामी जगह पर पड़ाव डाला । उधर क़ुरैश के काफिले के सरदार को इसकी इत्तला मिल गई इसलिए वह रास्ता छोड़कर दरिया के किनारे किनारे काफिले को लेकर चला और साथ ही एक सवार को मक्का की तरफ दौड़ा दिया कि कुरैशी अपनी पूरी ताकत के साथ जल्दी पहुंचे और अपने तिजारती काफिले की हिफाज़त करें। इस खबर का मक्का में पहुंचना था कि फौरन 950 नौजवानों का एक बड़ा लश्कर जिनमें 100 घोड़े और 700 ऊंट थे । आप के मुकाबले के लिए रवाना हो गए । इस लश्कर में क़ुरैश के बड़े-बड़े सरदार और अमीर लोग शामिल थे ।

अल्लाह के रसूल को जब मक्के के लश्कर के आने की ख़बर पहुंची तो आपने सहाबा से मशवरा किया । फिर सबके मशवरे से आपने आगे बढ़ने का हुकुम फ़रमाया । बदर के क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ कि अबू सुफियान अपने काफिले को लेकर निकल गया और क़ुरैश का एक बड़ा लश्कर इसी

मैदान के उस दूसरे किनारे पर है जहां पानी वगैरह हर तरह का आराम है ।
और मुसलमानों को पड़ाव की लिए रेतीली जमीन हिस्से में आई जिसमें
चलना दोभर होने के अलावा पानी का नाम तक नहीं था ।
लेकिन अल्लाह ने मुसलमानों से मदद का वादा कर लिया था । इसलिए
उसी वक्त बारिश हुई जिससे ज़मीन का रेत जम गया और मुसलमानों ने
अपने बर्तन पानी से भर लिए और एक होज़ सा बनाकर बनाकर उसमें पानी
इकट्ठा कर लिया । दूसरी तरफ इसी बारिश ने काफिरों की जमीन पर इस
कदर कीचड़ पैदा कर दिया कि उनके लिए चलना मुश्किल हो गया ।

बहरहाल दोनों फ़ौज आमने-सामने हो गई । एक तरफ़ 314 मुसलमान थे ।
जिनके पास सिर्फ़ दो घोड़े , 70 ऊंट और चंद तलवारे थी । यानी हर एक के
पास तमाम हथियार तो क्या होते हैं तलवारे भी सबके पास नहीं थी ।
और दूसरी तरफ़ 950 काफिर जिनके पास 700 ऊंट,100 घोड़े और वे
तमाम हथियारों से लैस थे ।
पहले क़ुरैश के 3 बहादुर निकले । मुसलमानों में से हज़रत अली, हज़रत
हमज़ा और हज़रत उबैदा बिन अल हारिस ने उनका मुकाबला किया, और
तीनों काफिरों को कत्ल कर दिया ।

फिर आम लड़ाई हुई । मुसलमानों को बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई । 70
काफिर मारे गए जिनमें मुसलमानों का सबसे बड़ा दुश्मन और काफिरों का
सबसे बड़ा सरदार अबू जहल भी अंसार के दो लडकों माज़ और मुअव्वज़

के हाथों मारा गया । और 11 वह लोग भी मारे गए जिन्होंने हिजरत के वक्त आप स० क़त्ल के मशवरे में शिरकत की थी और 70 काफिर गिरफ्तार हुए ।

313 मुसलमानों में से 86 मुहाजिर ,अंसार में से कबीला औस के 61 और क़बीला ख़ज़रज के 166 थे ।
जिनमें से सिर्फ़ 8 अंसारी सहाबा, 6 कबीला ख़ज़रज और कबीला औस के 2 और 6 मुहाजिर
, कुल 14 मुसलमान शहीद हुए ।

बंदियों के साथ मुसलमानों का सुलूक

जंगी क़ैदी जब मदीना पहुंचे तो आप स० ने 2,2 4,4 कर के सहाबा में बांट दिए, और सबको हुकुम दिया के इन्हें आराम के साथ रखें । जिसका असर ये था के सहाबा उनको खाना खिलाते थे और खुद सिर्फ़ खजूरों पे गुज़र करते थे ।

हज़रत मूसब बिन उमैर के भाई अबु अज़ीज़ भी उन क़ैदियों में से थे उनका बयान है के मुझे जिन अंसार के सुपुर्द किया गया था जब वह खाना लाते तो रोटी मेरे सामने रख देते थे और खुद सिर्फ़ खजूर खाया करते थे ।

क़ैदियों के बारे में सहाबा के मशवरे के बाद ये तै हुआ के फिदया (कुछ माल वगेरा) ले कर छोड़ दिया जाए , चुनाँचे 4,4 हज़ार दिरहम लेकर छोड़ दिया गया ।
कैदियों में से जो लोग फिदया नही दे सकते थे उन में से जो लिखना पढ़ना जानते थे उनको कहा गया के तुम 10,10 बच्चों को लिखना पढ़ना सिखा दो , यही तुम्हारा फिदया है । हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० ने इसी तरह लिखना सीखा था ।

इन जंगी क़ैदियों में आप स० के चचा हज़रत अब्बास भी थी (जो बाद में मुसलमान हुए) , जिस तरह सबसे फिदया लिया गया उनसे भी उसी तरह वुसूल किया गया । बल्कि आम आदमियों के मुकाबले में कुछ ज़्यादा क्योंकि आम कैदियों से 4 हज़ार और मालदारों से कुछ ज़्यादा लिया गया था । हज़रत अब्बास भी सेठ आदमी थे उनको भी 4 हज़ार से ज़्यादा देने पड़े थे । अंसार सहाबा ने कहा भी के अब्बास से फिदया माफ़ कर दिया जाए क्योंकि नबी ए पाक के चचा हैं लेकिन इस्लाम में अज़ीज़ रिश्तेदार दोस्त दुश्मन सब बराबर थे, इसलिए अंसार के कहने पर भी ये क़ुबूल ना किया गया ।
इसी तरह आपके दामाद अबुल आस भी क़ैदी बन कर आये थे उनके पास फिदये के लिए माल ना था ,इसलिए उनकी बीवी यानी आप स० की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० जो अभी तक मक्का में थी कहलवा दिया गया के फिदये की रक़म भेज दें , उनके गले में एक हार था जो उनकी वालिदा हज़रत ख़दीजा ने उनके जहेज़ में दिया था , वही उतार कर भेज दिया । जब आप

स० ने ये हार देखा तो आपकी आँखों में आँसू आ गए और सहाबा से फ़रमाया के अगर तुम सब राज़ी हो तो ये ज़ैनब के पास उसकी वालिदा की यादगार है इसको वापिस करदो । सहाबा ने बखुशी क़ुबूल कर के वापिस कर दिया और आप स० ने अबुल आस से कह दिया के हज़रत ज़ैनब को मदीना भेज दें । अबुल आस आज़ाद हो के मक्का पहुँचे और शर्त के मुताबिक़ हज़रत ज़ैनब को मदीना भेज दिया ।
अबुल आस एक बड़े व्यपारी थे इत्तेफाक से दूसरी मर्तबा फिर मुल्क शाम से माल लाते हुए पकड़े गए , और फिर इसी तरह छोड़ दिये गए । इस बार रिहा हो कर मक्का वापिस आये तो तमाम लोगों का हिसाब चुकता किया और इस्लाम ले आये । और लोगों से कह दिया के यहाँ आ कर इसलिए मुसलमान हुआ के यूँ ना कह दो के हमारा माल दबाने के चक्कर में मुसलमान हो गया या मुझे ज़बरदस्ती मुसलमान किया गया है ।

इस साल के बड़े वाकियात

1 इसी साल जब इतवार के रोज़ आप स० गज़वा ए बदर से वापिस लौट कर आये तो लोग आपकी साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ि० को दफ़न कर के हाथ झाड़ रहे थे ।

2 इसी साल गज़वे से वापिसी के बाद पहली बार ईद उल फितर की नमाज़ पढ़ी गयी ।

3 रमज़ान के रोज़े और सदक़ा तुल फितर (ईद का दान) और ज़कात भी इसी साल वाजिब हुए ।

4 ईद उल अज़हा की नमाज़ और क़ुरबानी भी इसी साल वाजिब हुई ।

5 इसी साल ज़िल हिज के महीने में हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी हज़रत अली से हुई ।

सन 3 हिजरी

ग़ज़वा ए ग़तफ़ान

सन 3 हिजरी में 4 सौ 50 आदमीयो को लेकर दासूर इब्न अल हारिस मुहारबी मदीना तैयबा पर हमला करने के लिए चला,आप स० मुकाबले के लिए तशरीफ लाए तो सबने भाग भागकर पहाड़ों में छुप गए , नबी ए पाक मुतमईन होकर मैदान से वापस आए , उस वक़्त इत्तेफाकन बारिश से आपके कपड़े भीग गए , आपने उनको सुखाने के लिए निकाल कर एक दरख्त पर फैला दिया और खुद उस के साए में लेट गए ।
उधर पहाड़ के ऊपर से दासूर देख रहा था जब उसने देखा कि आप स० मुतमईन होकर लेट गए , तो सीधा आपके सिरहाने पहुंचा और तलवार खींच कर सामने आया , और कहा " अब बतलाओ, अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचाएगा " मगर मुकाबले में खुदा के रसूल था ।

आप स० ने बगैर किसी भय के जवाब दिया , "अल्लाह बचाएगा " इस कलमे का सुनना था कि दासूर के बदन पर मानो राशा पड़ गया और तलवार हाथ से गिर गई अब नबी ए करीम सल्लल्लाहो वाले वसल्लम ने तलवार उठा कर फरमाया कि " तुम बोलो, अब तुम को कौन बचाएगा" उसके पास इसके सिवा क्या जवाब था, "कोई नहीं " नबी करीम को उसकी बेचारगी पर रहम आ गया और उसको माफ फरमा कर छोड़ दिया ।
दासूर पर इस बात का यह असर हुआ कि ना सिर्फ़ वो खुद मुसलमान हो गया बल्कि अपनी क़ौम में जाकर इस्लाम का जबरदस्त प्रचारक बन गया ।

यह और इस जैसे सैकड़ों वाकियात उन लोगों के मुंह पर तमाचा है, जो कहते हैं कि इस्लाम तलवार के जोर से फैला है ।

हज़रत हफ़सा और हज़रत ज़ैनब से निकाह

शाबान 3 हिजरी में उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा और रमज़ान 3 हिजरी में हज़रत ज़ैनब बिन्ते खोजेमा आपके निकाह में आईं ।

गज़वा ए उहुद

उहुद मदीना के करीब एक पहाड़ है , जिस जगह यह जिहाद हुआ । यह जिहाद सात शव्वाल सन 3 हिजरी को बार के दिन पेश आया । इसका किस्सा यूँ हुआ के बदर की जंग में हारे हुए काफ़िरों ने साल भर के बाद जब

कुछ होश संभाला तो उनके दिलों में इंतकाम की आग भड़कने लगी और इस बार तगड़े इंतिज़ाम से मदीना पर चढ़ाई का इरादा किया । इसके लिए 3000 जवानों का लशकर पूरे साज़ो सामान के साथ मदीना की तरफ बढ़ा । जिनमें 700 ज़िरहे बकतर सिपाही , 200 घोड़े 3000 ऊंट थे । और 14 औरतें भी इस वास्ते साथ लेकर चले के मर्दों को गैरत दिलाएं और अगर भागे तो उन्हें लानत मलामत से शर्म दिलाएं ।
उधर आप स० के चाचा हजरत अब्बास जो उस वक्त इस्लाम ला चुके थे , मगर अभी तक मक्का में ही रह रहे थे । उन्होंने फौरन तमाम हालात लिखकर एक तेज क़ासिद (संदेश पहुचाने वाला) के हाथ आप स० के पास भेज दिए , आपको जब ये पता चला तो फौरन दो आदमी हालात ह की जांच के लिए भेज दिए , उन्होंने आकर खबर दी के क़ुरैश का लश्कर मदीना पर आ पहुंचा । क्योंकि शहर पर हमले का अंदेशा था । हर तरफ पहरे बिठा दिए गए और सुबह आप सहाबा से मशवरा करने के बाद 1000 सहाबा की तादाद के साथ मदीना से बाहर तशरीफ लाए । जिनमें अब्दुल्लाह इब्ने उबई मुनाफिक और उसके तीन सौ हम ख्याल मुनाफ़िक़ (दिखावे के लिए मुसलमान बनने वाले) भी शामिल थे । मगर यह सब के सब रास्ते ही से वापस हो गए और अब मुसलमानों का लश्कर सिर्फ़ 700 सौ रह गया । मदीना से निकल कर जब फौज का जायजा लिया गया तो कमसिन बच्चे वापस कर दिए गए । मगर बच्चों में जिहाद के शौक का यह आलम था के जब राफ़े बिन खुदैज से कहा गया कि तुम्हारी उम्र कम है , तुम वापस हो

जाओ । तो पंजों के बल तन कर खड़े हो गए, ताके ऊंचे मालूम होने लगे । इस पर वह जिहाद में ले लिए गए । सुमरा इब्ने जंदुब इनके ही हम उम्र थे । जब उन्होंने यह देखा तो अर्ज किया, मैं तो राफ़ै को लड़ाई में पछाड़ देता हूं । अगर यह जिहाद में लिए जा सकते हैं तो मुझे मुझे भी लेना चाहिए । उनके कहने के मुताबिक दोनों में मुकाबला कर दिया गया । सुमरा ने राफ़ै को पछाड़ दिया तो उनको भी जिहाद में ले लिया गया ।

बाहर हाल मुकाबले की जगह पहुंचकर , नबी ए करीम ने फ़ौज की सफ़बंदी की । उहुद पहाड़ पीछे की तरफ था । इसलिए उस तरफ से दुश्मन के आने का अंदेशा था । तो आपने 50 आदमी पहाड़ पर पहरे के लिए खड़े कर दिए । और इरशाद फरमाया के "मुसलमानों को फतेह हो या शिकस्त मगर तुम अपनी जगह से ना हिलना " ।

लड़ाई शुरू हुई और देर तक घमासान लड़ाई के बाद जब फ़ौजें हटी तो मुसलमानों का पल्ला भारी था । क़ुरैश बदहवास होकर तितर-बितर हो गए । मुसलमानों ने माले गनीमत (जंग में मिलने वाला समान) जमा करना शुरू कर दिया । यह देखते कि वह लोग भी अपनी जगह छोड़ कर यहां आ गए , जिनको पीछे की तरफ पहाड़ पर निगरानी के लिए मुकर्रर फरमाया दिया था । उनके अमीर अब्दुल्लाह बिन जुबेर ने बहुत मना किया मगर वे ना रुके और यहां उनके साथ सिर्फ चंद सहाबा रह गए ।

यह देखकर खालिद बिन वलीद ने (जो अभी तक मुसलमान ना हुए थे और काफ़िरों की तरफ से लड़ रहे थे) पीछे की जानिब से अचानक हमला कर

दिया । अब्दुल्लाह बिन जुबेर और उनके बाकी बचे चंद साथियों ने निहायत जांबाज़ी के साथ उनका मुकाबला किया । लेकिन आखिरकार सबके सब शहीद हो गए । अब रास्ता साफ हो गया तो खालिद अपने फौजी दस्ते के साथ मुसलमानों पर टूट पड़े और दोनों फौजें इस तरह मिल गई कि खुद मुसलमान मुसलमानों के हाथों मारे गए ।
जब एक सहाबी मूसब बिन उमैर शहीद हुए तो क्योंकि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जैसे दिखते थे । इनकी शहादत से ये मशहूर हो गया के आप सल्लल्लाहो वसल्लम शहीद हो गए । इस खबर का मशहूर होना था कि मुसलमानों की फौज में मायूसी छा गई । बड़े-बड़े बहादुरों के पांव उखड़ गए । लेकिन बहुत से जानिसार लोग उस वक्त भी बराबर जी जान से लड़ रहे थे । मगर सबकी निगाहें आपको ही ढूंढ रही थी सबसे पहले हजरत काब इब्न मालिक की आप पर नजर पड़ी तो उन्होंने खुशी से पुकारा के मुबारक हो अल्लाह के रसूल यहां बख़ैर व आफियत मौजूद है । यह सुनते ही सहाबा आपकी तरफ दौड़े ,मगर साथ ही कुफ़्फ़ार ने भी सब तरफ से हटकर , उसी तरफ रुख कर लिया । कई मर्तबा आप पर हमला हुआ , मगर आप महफूज रहे ।
एक मर्तबा जब कुफ़्फ़ार ने हमला किया तो आप ने इरशाद फरमाया " कौन मुझ पर जान देता है " हज़रत जियाद अपने चार साथियों के साथ आगे बढ़े , सब के सब निहायत बहादुरी और जांबाज़ी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए । जब ज़ियाद ज़ख़्मी होकर गिरे तो आप स० ने इरशाद फरमाया , इन्हें मेरे

पास लाओ । लोग उठा लाए , उस वक्त कुछ जान बाकी थी , हजरत जियाद ने आपके कदमों पर मुंह रख दिया और इसी हालत में जान दे दी । सुबहान अल्लाह

क़ुरैश का मशहूर बहादुर अब्दुल्लाह इब्ने क़ुमैया सफ़ों को चीरता हुआ आगे बढ़ा, और आप स० के चेहरे मुबारक पर तलवार मारी , जिससे खूद की दो कड़ियां टूट कर चेहरा ए मुबारक में घुस गई और एक दांत मुबारक शहीद हो गया । आप एक गड्ढे में गिर पड़े जो इसी लिए बनाया गया था कि मुसलमान उसमें गिरे ।
यह देखकर तमाम सहाबा आप स० पर छा गए । तीरों और तलवारों की बारिश हो रही थी , मगर यह सब सहाबा अपने ऊपर लेते रहे, हजरत अबू दजाना झुककर आपकी ढाल बन गए जो तीर आता वह उनकी पुश्त पर लगता था । हजरत तलहा ने तलवारों को हाथ पर रोका , जिससे हाथ कट कर गिर गया । उनके वालिद अबु तल्हा ढाल के जरिए आप की हिफाजत कर रहे थे । जब आप गर्दन उठाकर फौज की तरफ देखते तो अबू तलहा कहते थे, ऐ अल्लाह के रसूल आप सर ना उठाइए, खुदा ना करे कोई तीर लग जाए , इसके लिए आपसे पहले मेरा सीना मौजूद है ।
एक सहाबी ने अर्ज किया , या रसूल अल्लाह , अगर में कत्ल हो गया तो मेरा ठिकाना कहां होगा ? आपने फरमाया कि जन्नत में । उनके हाथ में कुछ खजूरे थीं, जो खा रहे थे । यह सुनते ही उन्हें फेंक कर , सीधे लड़ाई में कूद पड़े और लड़ते लड़ते शहीद हो गए ।

बदबख्त कुफ़्फ़ार बेरहमी के साथ आप पर पीर तलवारे बरसा रहे थे । मगर आपकी ज़बान मुबारक पर यह अल्फाज थे

اللهم اغفر لقومى فانهم لا يعلمون .

ए मेरे परवरदिगार मेरी क़ौम को माफ़ कर दे क्योंकि वह जानते नहीं हैं ।

चेहरा ए अनवर से खून जारी था और आप स० उसको किसी कपड़े वगैरह से पोछते जाते और फरमाया अगर इस ख़ून का एक कतरा भी ज़मीन पर गिर जाता तो सब पर खुदा का अज़ाब नाजिल हो जाता ।
इस ग़ज़वे में कुफ़्फ़ार के सिर्फ 22 या 23 आदमी मारे गए और मुसलमानों में से 70 आदमी शहीद हुए । हुजूर के चाचा हजरत हमजा भी इसी जंग में शहीद हुए ।

इस जंग में हार की वजह ये बनी के सहाबा ने आपकी बात को नही माना था और अपनी जगह से हट गए थे । इसलिए अल्लाह और नबी के हुक्म से कभी ना हटना चाहिए वरना अंजाम बुरा ही होता है , भले ही सहाबा इतने जांनिसार और सच्चे पक्के ईमान वाले थे लेकिन नबी की बात नज़र अंदाज़ की तो नुकसान उठाना पड़ा । लेकिन इसके बाद भी अल्लाह ने मुसलमानो की ये मदद भी की के काफ़िरों के दिमाग़ फेर दिए के काफ़िर थोड़ी देर में खुद भाग गए । जब क़ाफी दूर आ गए तो कहने लगे के हमे क्या हुआ , हमे तो आज सारे के मुसलमानों को निमटा देना चाहिए था , हम जीतते जीतते भाग

क्यों आये । लेकिन फिर पलट कर जाने की हिम्मत ना कर सके और मक्का लौट गए ।

सन 4 हिजरी

सरिय्या मुनज़िर : इस साल सफर के महीने में , आपने 70 सहाबा का एक दस्ता , नजद वालों की तरफ , इस्लाम की तबलीग के लिए भेजा । जिन में बड़े बड़े आलिम सहाबा मौजूद थे । वहां पहुंचे तो आमिर , राअल, ज़कवान असिय्या उनके मुकाबले के लिए खड़े हो गए । आख़िरकार जंग हुई और इत्तेफाकन सब सहाबा शहीद हो गए । जब आप सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम को इसका इल्म हुआ तो बहुत दुख हुआ , यहां तक कि आपने उन लोगों के कातिलों के लिए चंद रोज़ तक सुबह की नमाज़ में बद्दुआ भी की ।

2 . इसी साल शव्वाल के महीने में आपके नवासे हज़रत हसन रज़ि० की विलादत हुई और उम्मे सलमा हुज़ूर ए पाक के निकाह में आई ।

सन 5 हिजरी

मदीने के यहूदी कबीले

जब नबी ए करीम स० मदीना तशरीफ लाए , तो मुसलमानों की तादाद ज्यादा ना थी और दुश्मनों के दरमियान उनको एहतियात से रहना था । क्योंकि इस छोटी सी जमात का तमाम अरब दश्मन था । तो आप स० ने

मदीना और मदीना के आसपास के सभी क़बीलों से संध्यां की क्योंकि हिफाजत का सिर्फ यही तरीका था । उन्हीं क़बीलों में यहूदियों के 3 बड़े क़बीले थे । जो मदीना के आस-पास रहते थे । बनु क़ैनुक़ा , बनू नज़ीर और बनु क़ुरैज़ा । आप और तमाम मुसलमान हमेशा इन संधियों का पालन करते रहे लेकिन क्योंकि यहूदी मदीना तैयबा के रईस और और बड़े माने जाते थे । और आप स० के तशरीफ लाने के बाद उनकी वह साख ना रही और इस्लाम की रोज ब रोज बढ़ती लोकप्रियता को देखकर वह द्वेष की आग में जल उठते थे इसीलिए हमेशा आप स० और मुसलमानों को तकलीफ पहुंचाने की ताक में रहते थे ।

गज़वा ए बदर में जब मुसलमानों को आश्चर्यजनक तौर से विजय प्राप्त हुई तो उनके क्रोध की कोई सीमा न रही , चुनाचे सन 2 हिजरी में उनके कबीले बनी क़ैनुक़ा ने ने एलान-ए-जंग किया और फिर बनी नज़ीर ने बगावत शुरू की । ये हालात देखकर आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम ने भी जंग की तैयारी शुरू कर दी । मुकाबला हुआ तो वह सब किले में बंद हो गए , कुछ अरसे तक इसी तरह बंद रहने के बाद आखिर जिला वतन होकर , क़ैनुक़ा शाम के इलाके में और बनू नज़ीर खैबर वगैरह में चले गए ।

उधर मक्का के काफ़िर पहले से यहां के यहूदी और मुनाफिकीन को खत लिख लिख कर , ना सिर्फ मुखालफत पर उकसा रहे थे बल्कि धमकी भी साथ थी के अगर तुम मुहम्मद को वहां से ना निकाल दोगे तो हम तुम्हारे साथ भी जंग करेंगे । यह सारी बातें उनकी एकजुटता का बहाना बन गई ।

मक्का के काफ़िर, मदीने के यहूदी और मुनाफ़िक़ सब एक शक्ति बनकर , इस्लाम के खिलाफ खड़े हो गए । मक्का से मदीना तक तमाम कबीलों में एक आग लग गई ।
चुनाँचे गज़वा ज़ात उर रीक़ा 10 मोहर्रम सन 5 हिजरी इसी साजिश का नतीजा था । और फिर गज़वा दोमतुल जनदल जो रबी उल अव्वल सन 5 हिजरी में हुआ , वह भी इसी सिलसिले की कड़ी थी ।
ऐसे ही गज़वा बनी अल मुस्तालिक जो दो शाबान सन 5 हिजरी में पेश आया , इसी साजिश का नतीजा था ।
ये साज़िशें एक अरसे तक इसी तरह मुख्तलिफ सूरतों में जाहिर हो होकर बढ़ती रही ।

गज़वा ए अहज़ाब

आखिरकार सन् 5 हिजरी ज़ीकायदा के महीने में सब ने अपनी पूरी पूरी ताक़तें जमा करके , एक साथ मदीना पर हमला करने का षड्यंत्र रचा । और 10000 आदमियों का लश्कर मुसलमानों को मिटाने के लिए मदीने की तरफ बढ़ा । नबी ए करीम को जब यह खबर पहुंची तो आप स० ने सहाबा को जमा करके मशवरा किया । हजरत सलमान फारसी ने राय दी कि खुले मैदान में निकलकर जंग करना मुनासिब नहीं बल्कि जिस तरफ से मदीना के अंदर उनके घुसने की आशंका है , उस तरफ ख़नदक खोद दी जाए । चुनांचे आप स० 3000 सहाबा को साथ लेकर ख़नदक खोदने के लिए चल पड़े , 6

दिन में यह 5 गज गहरी ख़नदक इस तरह तैयार हुई कि इसके खोदने में खुद आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के हाथ मुबारक ने बड़ा हिस्सा लिया था । एक मर्तबा ख़नदक खोदते हुए एक पत्थर की चट्टान निकल आई , जिसकी वजह से सब के सब आजिज हो गए । आप स० ने अपने हाथ से एक फावड़ा मारा तो उसके टुकड़े-टुकड़े उड़ गए । बहरहाल अंदर तैयार हो गई । उधर काफिरों का लश्कर भी आ पहुंचा और मदीने का घेराव कर लिया । तकरीबन 15 दिन तक मुसलमान मदीने में बंद रहे । इसी अरसै में बाकी बचे यहूदी क़बीले बनु क़ुरैज़ा ने भी संधि तोड़ दी और काफ़िरों के लश्कर में आ कर मिल गए ।
घेराव की वजह से मदीने में सख्त बेचैनी फैल गई ।
खाने पीने की किल्लत की वजह से 3,3 वक्त ऐसे गुजरे के सहाबा को कुछ भी खाने को ना मिला ।
एक रोज बेकरार होकर सहाबा ने अपने पेट खोलकर आप सल्लल्लाहो असलम को दिखलाए कि सबने पेट से पत्थर बांध रखे थे । आपने भी अपना पेट मुबारक खोल कर दिखाया, जिस पर दो पत्थर बंधे हुए थे । इससे सहाबा को हिम्मत हुई ।
उधर घेराव करने वालों को जब ख़नदक पर करने का कोई रास्ता ना मिला तो उन्होंने वहीं से तीर और पत्थर बरसाने शुरू कर दिए । दोनों तरफ से मुसलसल तीरअंदाजी हो रही थी । इसी सिलसिले में आप स० की 4 नमाज़ें क़ज़ा हो गई । आखिरकार अल्लाह को मुसलमानों पर रहम आ गया और

अल्लाह ने मुसलमानों की मदद फरमाई के काफ़िरों के लश्कर पर एक ऐसा तूफान भेजा के उनके खैमों कि चौबे तक उखड़ गई । जिसने उनकी फौज के होश उड़ा दिए । और क्योंके उनका भी खाने पीने का सामान खत्म हो चुका था । और उधर हजरत ए नईम इब्ने मसूद ने एक ऐसी तरकीब लड़ाई के जिससे काफ़िरों के लश्कर में फूट पड़ गई । बहरहाल यह सब ऐसी चीजें जमा हुई कि काफ़िरों के पैर उखड़ गए और वह थोड़े ही दिन में मैदान से भाग गए ।

इस साल के दूसरे ख़ास वाक़यात

इसी साल जुमादलओला के महीने में आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के नवासे अब्दुल्लाह इब्ने उस्मान यानी हजरत रूक़य्या के साहबजादे का इंतकाल हुआ । और शव्वाल के महीने के आखिर में हज़रत आयशा की वालिदा की वफात हुई ।
8 जुमादस सानिया में हजरत उम्मे सलमा और ज़ी क़ायदा के महीने में में हज़रत ज़ैनब बिनते जहश आपके विवाह में आई । इसी साल मदीने में जलजला आया और चांद ग्रहण लगा ।

सन 6 हिजरी

सुलह हुदैबिया

सन 6 हिजरी ज़ीक़ायदा के शुरू में , नबी ए करीम ने मक्के का इरादा फरमाया , और उमरे का आहराम बांधा । सहाबा की भी एक बड़ी जमात जिसकी तादाद 14 या 15 सौ बयान की जाती है, आपके साथ चल पड़ी । हुदैबिया मक्का से 1 मंजिल के फासले पर एक कुआं है, और उसी के नाम से गांव का नाम भी हुदैबिया मशहूर है । आप स० ने वहां पहुंच कर पड़ाव डाला । यह कुआं बिल्कुल सूखा था । नबी ए करीम की दुआ से इसमें कितना पानी आ गया के सबको काफी हो गया । यहां पहुंचकर आपने हजरत उस्मान को मक्का भेजा के मक्का वालों को इत्तला दे दें कि आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम इस वक्त सिर्फ काबे के दर्शन और उमरे के लिए तशरीफ लाए हैं और कोई द राजनैतिक कारण नहीं है । हजरत उस्मान मक्का पहुंचे तो काफिरों ने उनको रोक लिया । इधर यह बात मशहूर हो गई कि काफिरों ने हजरत उस्मान को कत्ल कर दिया । नबी ए करीम को जब यह खबर पहुंची तो आपने एक बबूल के पेड़ के नीचे बैठकर सहाबा से जिहाद पर बेअत ली । जिसका जिक्र कुरान ए मजीद में है और जिसको बेअत ए रिज़वान कहा जाता है । बाद में मालूम हुआ की खबर गलत थी । बलके मक्का वालों ने सहल बिन अम्र को संधि की शर्तें तय करने हेतु भेजा । निम्नलिखित शर्तों पर संधि नामा लिखा गया और 10 साल के लिए यह संधि तय हो गई ।

मुसलमान इस वक्त वापस जाएंगे । अगले साल आएंगे और सिर्फ़ 3 दिन रुक कर चले जाएंगे । हथियार लगाकर नहीं आएंगे , तलवार साथ हो तो

वह मयान में रखेंगे । मक्का से किसी मुसलमान को अपने साथ नहीं ले जाएंगे । अगर कोई मुसलमान मक्का में रहना चाहे तो उसे मना नहीं करेंगे । अगर कोई शख्स मक्का से मदीना चला जाए तो आप वापस कर देंगे और अगर मदीना से कोई आ जाए तो काफिर उसे वापस नहीं करेंगे ।
यह सारी शर्तें अगरचे मुसलमानों के खिलाफ थी और यह संधि देखने में काफिरों के लिए बेहतर और मुसलमानों के लिए बेकार थी । लेकिन अल्लाह ने इसका नाम फतेह (विजय) रखा । इसी सफर में सूरह फतह नाजिल हुई । सहाबा को इस तरह दबकर संधि करना सख्त बुरा लग रहा था । बलके हजरत उमर ने जोर देकर आपसे अर्ज़ भी किया के हमे ऐसी संधि ना करनी चाहिए । लेकिन आपने फरमाया कि मुझे खुदा का यही हुकुम है । और इसी में हमारे भविष्य की भलाई छुपी है । चुनाचे बाद में आपकी ये बात सच साबित हुई क्योंकि इस सुलह की बदौलत इत्मीनान के साथ मक्का और मदीना के दरमियान आना-जाना शुरू हो गया । काफिर आप की खिदमत में और मुसलमानों के पास आने जाने लगे । जिससे उन्हें इस्लाम की तालीम सुनने को मिलती रही । इतिहासकारों का बयान है इस अरसे में इस कदर ज्यादा तादाद में लोग इस्लाम में दाखिल हुए के इतने कभी नहीं हुए थे । और हकीकत में ये संधि इस्लाम की विजय साबित हुई ।

दुनिया के बादशाहो के नाम दावती पत्र

इस संधि की वजह से रास्ते महफूज हो गए थे । आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम ने इरादा किया के इस्लाम की तालीम और हक की आवाज तमाम दुनिया के बादशाहो तक भी पहुंचा दी जाए । चुनांचे अम्र बिन उमय्या को असहमा नामक हब्शा के बादशाह की तरफ़ भेजा , उसने आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के पत्र को आंखों से लगाया और अपने तख़्त से उतर कर नीचे जमीन पर बैठ गया और अत्यंत प्रेम से इस्लाम कबूल कर लिया । वहीया कलबी को हरक़ल नामक रोम के बादशाह के पास भेजा , क्योंकि उसको भी अपनी पुरानी किताबों की शहादत से ये साबित हो चुका था कि आप सच्चे नबी हैं तो फ़ौरन इस्लाम लाने का इरादा कर लिया । मगर उस पर उसकी तमाम प्रजा बिफर गई और उसको यह डर हुआ के अगर मै मुसलमान हो गया तो यह लोग मुझे बादशाहत से हटा देंगे । इसलिए इस्लाम लाने से रुक गया ।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने हुज़ाफा को ईरान के बादशाह खुसरो परवेज की तरफ रवाना फरमाया । उस बदबख्त ने पत्र का अपमान करते हुए फाड़ कर फेंक दिया । जब आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम को इसकी इत्तला हुई तो आप ने फरमाया कि अल्लाह ताला उसकी सल्तनत को इसी तरह टुकड़े-टुकड़े करें , जिस तरह उसने हमारे पत्र को किया है । नबी ए करीम की दुआ कैसे खा ली जाती । थोड़े ही अरसे बाद खुसरो परवेज अपने बेटे के हाथों निहायत बेदर्दी के साथ मारा गया । और उसकी सल्तनत के टुकड़े टुकड़े हो गए ।

हातिब बिन अबी बिलता को मिस्र असकंदरिया के बादशाह की तरफ भेजा
।
उसके दिल में भी अल्लाह ने इस्लाम की सच्चाई और उसका प्रेम डाल दिया । चुनाचे हजरत हातिब के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया और आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम के लिए उपहार भी भेजे । जिनमें एक कनीज मारिया क़ीबतिया थीं और एक ऊंटनी जिसका नाम दुलदुल था । एक रिवायत में है 1000 दिनार और 20 जोड़े भी उपहार स्वरूप भेजे थे ।
हज़रत अम्र बिन आस को ओमान के बादशाहो यानी हेफर और अब्दुल्ला के पास भेजा । उन दोनों को भी पुरानी किताबों के जरिए से आपके सच्चे होने का यकीन हो चुका था । और वह दोनों मुसलमान हो गए ।
आप स० ने तकरीबन पूरी दुनिया में इस्लाम की तालीम के यह पत्र भेजे । यहां तक कि चीन में भी आप आपके भेजे गए पत्र का सबूत मिलता है ।

हजरत खालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस का इस्लाम लाना

खालिद बिन वलीद अभी तक हर जंग में मुसलमानों के खिलाफ लड़ते थे । अक्सर ग़ज़वात में और खासतौर से उहुद में इन्हीं के जरिए मुसलमानों को काफी नुकसान उठाना पड़ा था । लेकिन सुलह हुदेबिया के बाद खुद-ब-खुद मक्का से मुसलमान होने के लिए सफर करते हैं । रास्ते में अम्र बिन आस से

मुलाकात हुई तो मालूम हुआ कि वह भी इसी मकसद से जा रहे हैं । तो दोनों साथ मदीना पहुंचकर इस्लाम ले आए ।

सन 7 हिजरी

गज़वा ए ख़ैबर

मदीने के यहूदियों में से बनु नज़ीर जब खैबर में जाकर आबाद हुए तो खैबर यहूदियों का मरकज बन गया । यहाँ से यह लोग आसपास के अरब क़बीलों को इस्लाम के खिलाफ भड़काते थे ।जुमादल ऊला सन 7 हिजरी को इनसे जिहाद हुआ । क़त्ल व किताल (मार काट) के बाद अल्लाह ने मुसलमानों को विजय प्रदान की और यहूदियों के तमाम किले मुसलमानों के कब्जे में आ गए । हजरत अली ने खैबर का दरवाजा अकेले ही हाथ से उखाड़ दिया । हालाके 70 आदमी भी उसे हिला नहीं पाते थे ।

फतेह फ़िदक

खैदर की विजय के बाद आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने फ़िदक के यहूदियों की तरफ एक फौजी दस्ता भेजा । उन्होंने संधि कर ली ।

उमरे की क़ज़ा

सुलह हुदैबिया में जो उमरा छोड़ दिया गया था और मक्का के काफ़िरों से यह वायदा हुआ था कि आइंदा साल उम्र करेंगे और 3 दिन से ज्यादा कयाम नहीं करेंगे । इस साल वादे के मुताबिक आप तमाम साथियों के साथ की तशरीफ़ ले गए और संधि की शर्तों की पाबंदी के साथ उमरा अदा फरमा कर वापिस मदीना तशरीफ़ ले आये ।

सन 8 हिजरी

सरिय्या मोतिता

यह मुसलमानों और रोम वालों के दरमियान पहली जंग है । इसका कारण यह बना था के अम्र बिन शरजील ने जो रूम के बादशाह की तरफ से बसरा का गवर्नर था । आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के क़ासिद हारिस बिन उमैर को कत्ल कर दिया था । नबी ए करीम ने 8 हिजरी के बीच में 3000 सहाबा का लश्कर उसकी तरफ रवाना किया । जब लश्कर मोतिता (एक जगह का नाम) के करीब पहुंचा तो रोमियो ख़बर हुई । वह डेढ़ लाख का लश्कर लेकर मुकाबले के लिए निकले । चंद रोज़ तक जंग होने के बाद अल्लाह ताला ने डेढ़ लाख काफिरों पर 3000 मुसलमानों का ऐसा रोब डाल दिया के उनके पास पराजित होकर भाग जाने के अलावा कोई रास्ता ना दिखा ।

फतेह मक्का

हुदैबिया में जो संधि पत्र लिखा गया था । मुसलमान अपनी आदत के मुताबिक पूरी पाबंदी के साथ उस पर अमल करते थे । लेकिन 8 हिजरी में क़ुरैश ने संधि का उल्लंघन किया । हुआ यह कि संधि के मुताबिक एक कबीला कुरैश का और एक कबीला मुसलमानों का हलीफ बना था । कुरेश के हलीफ क़बीले ने मुसलमानों के हलीफ़ कबीले पर हमला कर दिया और उनके आदमियों को मार कर समान लूट लिया । जो के संधि का खुला उल्लंघन था । आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने एक क़ासिद भेज कर क़ुरैश के सामने नई संधि की चंद शर्तें पेश फरमाई के कातिलों से बदला लिया जाए और लूटपाट का सामान वापस किया जाए । साथ ही यह भी फरमा दिया अगर यह शर्त मंजूर ना हो तो हुदैबिया की संधि निष्क्रिय हो जाये गी । क़बीला क़ुरैश ने शर्तें नही मानी और संधि को तोड़ दिया ।

आखिरकार आपने जिहाद की पूरी तैयारी शुरू कर दी और 10 रमज़ान सन 8 हिजरी बुध के दिन असर के बाद 10000 सहाबा की तादाद के साथ आप मदीना से निकले । कदिदीर नामक जगह में मगरिब का वक्त हो गया तो रोज़ा इफ़्तार फ़रमाया । मक्का पहुंचकर हजरत खालिद बिन वलीद को लश्कर के एक हिस्से के साथ रवाना किया के ऊपर की तरफ से मक्का में दाखिल हों । और उनसे फरमा दिया कि जो शख्स तुमसे ना लड़े तुम भी उससे ना लड़ना। उधर दूसरी जानिब से खुद नबी ए करीम दाखिल हुए ।

और आम ऐलान करा दिया के जो मस्जिद में दाखिल हो जाए वह महफूज है, और मक्का के सरदार अबु सुफ़ियान के घर में दाखिल हो जाए वह महफूज है , और जो अपने घर का दरवाजा बंद कर ले वह भी । सिर्फ़ 11 मर्द और 4 औरतों का खून माफ नहीं फरमाया जिनका वजूद हर प्रकार के फ़ितने ने का केंद्र था । लेकिन इनमें से अक्सर आदमी मक्का की फतेह के बाद मदीना पहुंचकर मुसलमान हो गए ।
हद तो यह कि आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के चाचा हज़रत हमजा को पीछे से भाला मारकर शहीद करने वाले हब्शी गुलाम को भी माफ कर दिया क्योंकि वो ईमान ले आए थे । इसी तरह हजरत हिंदा जिन्होंने हजरत हमजा का कलेजा निकाल कर चबाया था । उन्हें भी इस्लाम लाने की वजह से माफ फरमा दिया ।
20 रमज़ान को जुमा के दिन नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने काबे का तवाफ किया । उस वक्त काबे के इर्द-गिर्द 360 बुत रखे हुए थे । आपके हाथ में एक छड़ी थी । जब आप किसी बुत के पास से गुजरते तो उससे इशारा कर देते और वह बुत मुंह के बल गिर पड़ता और यह आयत आपकी जबान पर जारी थी ,

جاء الحق و زهق الباطل إن الباطل كان زهوقا .

सच आ गया , और झूठ मिट गया और झूठ तो मिटने वाला ही है ।

काबे के तवाफ़ के बाद, काबे की चाबी उस्मान बिन तल्हा शेबी से ले ली और अंदर तशरीफ ले गए । वहां से बाहर तशरीफ लाने के बाद मक़ाम ए इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ी । नमाज स फ़ारिगे होकर आप मस्जिद में बैठ गए । लोग इस बात के मुन्तज़िर थे के क़ुरैश के हक़ में आपका क्या फैसला होता है । लेकिन रहमते आलम ने क़ुरैश को संबोधित करते हुए कहा कि तुम हर तरह आजाद और महफ़ूज़ हो । और फिर काबे की चाबी भी उस्मान बिन तल्हा को देदी ।
अबू सुफियान जो अब तक क़ुरैश की तमाम शरारतों और मुखालफ़तों का केन्द्र थे । तकरीबन क़ुरैश की तमाम जंगो में उनकी फौज के अफसर भी यही थे । मक्का की फतेह से पहले इस्लामी लश्कर की खबर लेने के लिए मक्का से बाहर निकले थे । सहाबा ने इनको गिरफ्तार कर लिया । लेकिन जब गिरफ्तार होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने तशरीफ लाए तो आपकी तरफ़ से माफी का हुकुम हो गया और उसका यह असर हुआ कि अबू सुफियान फ़ौरन इस्लाम ले आए और अब हम उनको हजरत अबू सुफियान रजि अल्लाहु अन्हु कहते हैं ।
फतेह मक्का के दिन एक व्यक्ति हांपता काँपता आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ । आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम ने इरशाद फरमाया के डरो मत , मुत्मइन रहो , मै कोई बादशाह नहीं , बल्कि एक मामूली औरत का बेटा हूं ।
फतेह मक्का के बाद आप 15 दिन मक्का में ठहरे रहे । उस वक्त अनसार को

यह ख्याल होकर रंज (दुख) हुआ के आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम यही रह जाएंगे और हम आपसे दूर हो जाएंगे । मगर जब आपको उनके ख्याल की ख़बर हुई तो फरमाया , नहीं ,अब तो हमारी मौत और जिंदगी तुम्हारे साथ है । फिर हज़रत उताब इब्ने उसैद को मक्का अमीर बना कर, खुद मदीना की तरफ रवाना हो गए ।

गज़वा ए हुनैन

मक्का की विजय के बाद लगभग सारा अरब ही इस्लाम ला चुका था । क्योंकि इनमें ज़्यादातर वह लोग थे जो इस्लाम की सच्चाई का पूरा यकीन रखने के बावजूद सिर्फ़ क़ुरैश जैसे बड़े क़बीले की मुखलाफत के डर से मुसलमान होने में देरी और मक्का की फतेह का इंतजार कर रहे थे । इसलिए फतेह के बाद सब के सब फ़ौज की सूरत में इस्लाम में दाखिल हो गए । इससे बाकी बचे हुए अरब की भी हिम्मत ना रही के अब इस्लाम के मुकाबले में खड़े हो जाएं ।
लेकिन दो कबीले हवाज़िन और सकीफ़ जाहिलाना ऐंठ की वजह से मक्का की तरफ मुसलमानों से जंग करने के लिए बढे । जब रसूल अल्लाह को खबर मिली तो आपने 12000 का लश्कर मुकाबले के लिए जमा किया । जिनमें 10000 तो वह मुहाजिरीन और अनसार थे जो मदीना से साथ आए थे । और 2000 नए मुसलमान थे जो मक्का की फतेह में मुसलमान हुए थे । इस्लामी लशकरों मैं यह अब तक का सबसे बड़ा लश्कर था । 6 शव्वाल 8

हिजरी को ये लश्कर रवाना हुआ
और जब ये वादी ए हुनैन में पहुंचा तो दुश्मन पहाड़ की घाटियों में छुपे हुए थे । फौरन मुसलमानों पर टूट पड़े । चूंकि अभी तक फौज की सफ़बन्दी नहीं हुई थी । इसलिए इस्लामी लश्कर का अगला हिस्सा पराजित होने लगा । दिखने में इस पराजय का कारण सफ़बंदी का ना होना लगता था । लेकिन हकीकत यह है जिसकी तरफ अल्लाह ने क़ुरान में इशारा किया यानी मुसलमान उस वक्त आदत के खिलाफ अपनी कसरत (बहुत तादाद) और साजो सामान को देखकर खुश हो रहे थे . और बाज़ सहाबा यहां तक के हजरत अबू बकर सिद्दीक की जबान पर भी ये बात आ गई थी कि आज तो हम हार ही नहीं सकते । इसलिए अल्लाह ने उनको खबरदार करने के लिए यह सूरत जाहिर फरमाई के मुसलमान समझ लें के हमारी विजय और पराजय हमारे हाथों , तीरों और तलवारों का खेल नहीं बल्कि ये सिर्फ अल्लाह की तरफ से होती है ।
बदर में सामान की कमी के साथ इतनी बड़ी फतेह और हुनैन में इतना समान और तादाद होने के बावजूद परास्त हो जाने का यही राज़ था ।
आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम उस वक़्त दो जीरह पहने हुए , एक सफेद खिच्चर पर सवार थे । मुसलमानो को पराजित होते हुए देखा तो आपके इरशाद से हजरत अब्बास ने एक दलेर नारा मारा , जिससे लोगों के उखड़े हुए पावँ जम गए । और दोनों तरफ से क़त्ल व किताल शुरू हो गया । उधर आपने जमीन से एक मुट्ठी मिट्टी उठाकर दुश्मन लश्कर की तरफ फेंकी

जिसको अल्लाह की कुदरत ने हर दुश्मन की सिपाही की आंखों में इस तरह पहुंचा दिया के कोई एक आंख उस से ना बच सकी ।आखिर दुश्मन डर कर और पराजित होकर भाग गए । मुसलमानों में से सिर्फ चार आदमी और काफिरों के 70 से ज्यादा आदमी मारे गए । मुसलमानों ने इंतकाम के जोश में बच्चों और औरतों की तरफ हाथ बढ़ाया तो आपने इससे मना फ़रमा दिया ।

गज़वा ए ताइफ़

इसके बाद आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ताइफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए । जहाँ बनी सकीफ़ और हवाज़िन का केंद्र था । लगभग 18 दिन तक उनका घेराव किया लेकिन फतेह ना हुई । जब आप वहां से तशरीफ लाए तो अभी रास्ते में ही थे के मक़ाम ए जाइरर्राना में ताइफ़ से हवाज़िन क़बीले के लोग आप की खिदमत में हाजिर हुए और दरख्वास्त की के हुनैन के मौके पर उनके जो लोग मुसलमानों के हाथों कैद हुए थे उनको वापस कर दें । नबी ए पाक ने मंजूर फ़रमा कर उनके क़ैदी वापस फरमा दिए । जब आप ताइफ़ से वापस आकर मदीना में मुक़ीम हो गए तो ताइफ़ वालों की एक जमात हाजिर होकर खुद दरख्वास्त करके इस्लाम में दाखिल हो गई ।

उमरा ए जाइर्राना

इसके बाद नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने जाइर्राना से ही उमरे का इरादा फरमाया और अहराम बांधकर मक्का तशरीफ ले गए और उमरे की अदायगी के बाद फिर मदीना को वापसी हुई । 6 ज़ीक़ायदा सन 8 हिजरी को मदीना में दाखिल हुए ।

सन 9 हिजरी

गज़वा ए तबूक

ताइफ़ से वापसी के बाद सन 9 हिजरी के दरमियान तक मदीना में मुक़ीम रहे । फिर आपको इत्तला हुई के गज़वा ए मोतिता के हारे हुए रोमियो ने मुसलमानों से जंग करने के लिए तबूक नामक जगह (जो मदीना से 14 मंज़िल के फासले पर है) बहुत कुछ तैयारियां कर रखी है । रसूल सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम ने भी जिहाद की तैयारी शुरू की । लेकिन उस वक्त मुसलमान क़हत साली (सूखा पड़ना) की वजह से निहायत खराब हालात से गुजर रहे थे और दूसरे गर्मी सख्त पड़ रही थी । लेकिन जान निसारो की जमात ने इसके बावजूद भी जिहाद की तैयारियां शुरू कर दी । चंदा किया गया तो हजरत अबू बकर सिद्दीक ने अपने घर का सारा सामान लाकर रख दिया । हजरत उमर ने भी अपने घर का आधा सामान लाकर रख दिया । और हजरत उस्मान ने 900 ऊँटो और 100 घोड़ों से लश्कर की मदद की , और इसी तरह दूसरे सहाबा ने भी अपनी हिम्मतों से बढ़ कर

समान से लश्कर की मदद की । जुम्मेरात के रोज रजब के महीने में 3000 सहाबा को लेकर आप सल्लल्लाहु अलेह वसल्लम तबूक की तरफ तशरीफ ले गए । जब वहाँ पहुंचे तो उस जगह कोई ना था । हमस का बादशाह हरक़ल मुसलमानो के आने की ख़बर सुन कर भाग गया था । आपने हजरत खालिद को अकेदर नसरानी की तरफ भेजा और भविष्य वाणी के तौर पर फरमाया कि तुम रात के वक्त उससे मिल सकोगे जबकि वह शिकार कर रहा होगा । हजरत खालिद पहुंचे तो ठीक यही बात वाकिया पेश आया और वह उसको गिरफ्तार कर के ले आए । बरहाल आप स० 15, 20 रोज तकरीबन यहीं रहे । लेकिन कोई मुकाबले पर नहीं आया । तो वापसी का इरादा हुआ और आप वापस मदीना पहुंचे । वापसी के बाद आपने उस जगह को आग लगाने का हुकुम फरमाया जो मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों के खिलाफ मशवरे करने के लिए मस्जिद के नाम से बनाई थी ।

लोगों का बड़ी बड़ी संख्या में इस्लाम क़ुबूल करना

जैसा कि पिछले सफआत पढ़ कर मालूम हो चुका के सुलह हुदैबिया के बाद जब रास्ते महफूज हो गए थे तो इस्लाम एक बहुत बड़े पैमाने पर फेला लेकिन फिर भी कुछ लोग क़ुरैश के दबाव की वजह से इस्लाम में दाखिल ना हो सकते थे । लेकिन फिर फतेह मक्का के बाद यह रुकावट ख़त्म हो गई और इस्लाम की तालीम ने तमाम अरब के घर-घर में पहुंचकर सबके दिलों पर अपना सिक्का बैठा दिया । जिसका नतीजा यह हुआ कि वह लोग जो

किसी तरह इस्लाम और मुसलमान की सूरत देखना ना चाहते थे । आज दूरदराज के सफर तय करते हुए जमातों की शक्ल में आप सल्लल्लाहो वाले वसल्लम की ख़िदमत में पहुंचते और अपनी मर्जी से इस्लाम में दाखिल हो कर अपना जान माल तक इस्लाम पर लुटा देने के लिए तैयार हो जाते ।
यह जमाते अकसर 9 हिजरी में आप की खिदमत में हाजिर हुई । जिनकी तादाद 70 तक बताई जाती जाती है । यहां तक के सन 8 में आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम के साथ हज में एक लाख से ज्यादा मुसलमान थे । और जो लोग इस हज में हाजिर नहीं थे । उनकी तादाद भी इससे कई गुनी थी ।
गज़वा ए तबुक के बाद ज़ीक़ायदा सन 9 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरत अबु बकर सिद्दीक को अमीरे हज बनाकर मक्का रवाना फरमाया ।

सन 10 हिजरी

आपका आखरी हज

25 ज़िकयदा पीर के दिन हुजूर सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम अपने आखरी हज के लिए रवाना हुए । सहाबा की भी बहुत बड़ी तादाद जिस की तादाद एक लाख से ज्यादा बताई जाती है , आपके साथ थी । मदीना मुनव्वरा से 6 मील पर ज़ुल हलीफ़ा नामक जगह पर अहराम बांधा । 4 ज़िल हिज्जा बार

के दिन मक्का में दाखिल हुए और शरीयत के क़ायदों के मुताबिक हज अदा फरमाया ।

आपका आखरी खुतबा

9 तारीख को अरफात के मैदान में तशरीफ़ ले जा कर आपने एक खुतबा (उपदेश) दिया । ये ख़ुत्बा इस्लाम के मानने वालों के साथ-साथ संपूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायक है। इस अंतिम उपदेश में मानवजाति के ऊंचे सिद्धांत दृष्टिगोचर होते हैं ।ख़ुत्बे का एक-एक शब्द मानवता और समानता के उपदेश से परिपूर्ण है।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: प्यारे भाइयो! मैं जो कुछ कहूँ, ध्यान से सुनो । क्या पता अगले साल फिर आपसे मिल सकूँ या नही । ऐ इंसानो! तुम्हारा रब एक है।

अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत को मजबूती से पकड़े रहना।

लोगों की जान-माल और इज़्ज़त का ख़याल रखना, ना तुम लोगो पर ज़ुल्म करो, ना क़यामत में तुम्हारे साथ ज़ुल्म किया जायगा।

कोई अमानत रखे तो उसमें ख़यानत न करना। ब्याज के क़रीब न भटकना।

किसी अरबी को किसी अजमी (ग़ैर अरबी) पर कोई बड़ाई नहीं, न किसी अजमी को किसी अरबी पर, न गोरे को काले पर, न काले को गोरे पर, प्रमुखता अगर किसी को है तो सिर्फ तक़वा(धर्मपरायणता) व परहेज़गारी से है अर्थात् रंग, जाति, नस्ल, देश, क्षेत्र किसी की श्रेष्ठता का आधार नहीं है। बड़ाई का आधार अगर कोई है तो ईमान और चरित्र है।

तुम्हारे ग़ुलाम, जो कुछ ख़ुद खाओ, वही उनको खिलाओ और जो ख़ुद पहनो, वही उनको पहनाओ।

अज्ञानता के तमाम विधान और नियम मेरे पाँव के नीचे हैं।

इस्लाम आने से पहले के तमाम ख़ून खत्म कर दिए गए। (अब किसी को किसी से पुराने ख़ून का बदला लेने का हक़ नहीं) और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ख़ून–रबीआ इब्न हारिस का ख़ून– ख़त्म करता हूँ (यानि उनके कातिलों को क्षमा करता हूँ)|

अज्ञानकाल के सभी ब्याज ख़त्म किए जाते हैं और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान में से अब्बास इब्न मुत्तलिब का ब्याज ख़त्म करता हूँ।

औरतों के मामले में अल्लाह से डरो। तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर अधिकार समान अधिकार है ।

औरतों के मामले में मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि उनके साथ भलाई का रवैया अपनाओ।

लोगो! याद रखो, मेरे बाद कोई नबी नहीं और तुम्हारे बाद कोई उम्मत (समुदाय) नहीं।

अत: अपने रब की इबादत करना, प्रतिदिन पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ना। रमज़ान के रोज़े रखना, खुशी-खुशी अपने माल की ज़कात देना, अपने पालनहार के घर का हज करना और अपने हाकिमों का आज्ञापालन करना। ऐसा करोगे तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल होगे।

ऐ लोगो! क्या मैंने अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिया! (लोगों की भारी भीड़ एक साथ बोल उठी–) हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल! (तब हजरत मुहम्मद स. ने तीन बार कहा) ऐ अल्लाह, तू गवाह रहना , और ए सुनने वालों अपने आगे आने वालों तक मेरी बात पहुँचा देना ।

(उसके बाद क़ुरआन की यह आखिरी आयत उतरी)

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا

"आज मैंने तुम्हारे लिए दीन (सत्य धर्म) को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत (कृपा) पूरी कर दी".

हज से फ़ारिग होकर आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम 10 रोज़ तक मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम रहे और फिर मदीना वापिस आ गए

सन 11 हिजरी

सरिय्या उसामा

मक्का से वापसी के बाद 26 सफ़र उल मुज़फ़्फ़र 11 हिजरी पीर के दिन एक लश्कर रोम के जिहाद के लिए रवाना फरमाया । जिसमे हजरत अबू बकर सिद्दीक, हजरत उमर फारूक और हजरत अबू उबैदा जैसे बड़े सहाबी शामिल थे । मगर इस लश्कर के अमीर हजरत उसामा बिन ज़ैद मुक़र्रर हुए जिनकी उम्र उस वक़्त महज़ 18 या 20 साल थी । और यह आखिरी लशकर था जिस की रवानगी का आप स० ने खुद इंतजाम फरमाया । अभी ये लश्कर रवाना भी नही हुआ था । कि नबी ए पाक को बुखार शुरू हो गया ।

आपकी बीमारी और वफ़ात

28 सफ़र उल मुज़फ़्फ़र बुध की रात आपने कब्रिस्तान में तशरीफ ले जाकर , कब्र वालों के लिए मगफिरत की दुआ की और फरमाया , " ऐ कब्र वालो तुम्हें अपना ये हाल और कब्रों में रहना मुबारक हो , क्योंकि अब दुनिया में काले फ़ितने टूट पड़े हैं " । वहां से तशरीफ लाए तो सर में दर्द था और बुखार हो गया । और सही रिवायतों के मुताबिक 13 रोज तक यह बुखार

रहा और इसी में आपकी वफात हुई ।
इस अरसे में भी आप अपने दस्तूर के मुताबिक हर रोज अलग तय किये हुए दिन अपनी बीवियों के पास रहते रहे । जब आपका मर्ज़ बढ़ गया तो तमाम बीवियों की इजाजत ली के बीमारी के दिनों में हजरत आयशा के घर में रहे । सब ने इजाजत दे दी ।
आहिस्ता आहिस्ता मर्ज़ इतना बढ़ गया के आप मस्जिद तक भी तशरीफ़ ना ला सके । तो इरशाद फरमाया के अबू बकर सिद्दीक से कहो कि नमाज पढ़ाएं । हजरत अबू बकर ने तकरीबन 17 नमाजे पढ़ाई ।
एक रोज कितने इत्तेफाक से हजरत अबू बकर और हजरत अब्बास अंसारी सहाबा की एक मजलिस के पास से गुजरे , वो सबत रो रहे थे । कारण पूछा तो कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस को याद करके रो रहे हैं । हजरत अब्बास ने यह खबर आपको भी पहुंचा दी । आप यह सुनकर हजरत अली और हजरत फ़ज़ल के कंधों पर टेक लगाए हुए बाहर तशरीफ लाए और हजरत अब्बास आपके आगे आगे थे । आप मेंबर की नीचे वाली सीढ़ी पे बैठ गए और एक खुतबा बयान किया जिसके शब्द ये थे ।
" ऐ लोगों मुझे मालूम हुआ है कि तुम अपने नबी की मौत से डर रहे हो । क्या मुझसे पहले कोई नबी हमेशा रहा है , जो मैं रहता । हां मैं अपने परवरदिगार से मिलने वाला हूं । और तुम मुझसे मिलने वाले हो । हां तुम्हारे मिलने की जगह हौज़ ए कौसर है । अब जो व्यक्ति यह पसंद करे के कयामत के दिन

उस हौज़ से पानी पिये तो उसको चाहिए अपने हाथ और जबान को फ़ुज़ूल और बेकार बातों से रोके । अंसार मै तुम्हें मुहाजिरीन के साथ अच्छा सलूक करने की वसीयत करता हूं । और मुहाजिरीन को आपस में अच्छा सुलूक और एकता बनाए रखने की वसीयत करता हूं । फिर इरशाद फ़रमाया कि जब लोग अल्लाह की इताअत करते हैं तो उनके बादशाह उनके साथ इंसाफ करते हैं । जब वह लोग अपने परवरदिगार की नाफरमानी करते हैं उनके साथ बादशाह बेरहमी करते हैं " ।

उसके बाद मकान में तशरीफ ले गए और वफात से 5 या 3 दिन पहले एक मर्तबा बाहर तशरीफ लाए । सर बंधा हुआ था । हजरत अबू बकर नमाज पढ़ा रहे थे । वह पीछे हटने लगे , आपने हाथ के इशारे से मना फ़रमाया और खुद हजरत अबू बकर के बाएं तरफ बैठ गए । नमाज के बाद एक छोटा सा खुतबा दिया जिसके दौरान फरमाया "अबू बकर सबसे ज्यादा मेरे मोहसिन (काम आने वाले) हैं और मैं खुदा के सिवा किसी को खलील (जिगरी दोस्त) बनाता लेकिन चूंके खलील सियाव खुदा के और कोई नहीं । इसलिए अबू बकर मेरे भाई और दोस्त हैं । और फरमाया कि मस्जिद में जितने लोगों के दरवाजे हैं वह सब सिवाय अबू बकर के दरवाजे के बंद कर दिए जाएं । इस हदीस से साफ इशारा मिलता है कि आप के बाद हजरत अबू बकर ही आपके खलीफा (जांनशीन)होंगे ।

उसके बाद 2 रबि उल अव्वल पीर के दिन लोग सुबह की नमाज हजरत अबू बकर के पीछे पढ़ रहे थे । आपने हजरत आयशा के हुजरे का पर्दा खोल कर

लोगों की तरफ देखा और मुस्कुराए । हजरत अबू बकर सिद्दीक पीछे हटने लगे और खुशी की वजह से सहाबा के दिल नमाज में इधर-उधर होने लगे तो आपने उनको हाथ से इशारा फरमाया कि नमाज पूरी करो और खुद अंदर तशरीफ ले गए । और पर्दा छोड़ दिया । इसके बाद फिर बाहर तशरीफ नहीं लाए । उसी रोज ज़ौहर के बाद आप सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमा गए । म्रत्यु के समय आपकी उम्र 63 साल थी ।

आप की वफात की खबर जब सहाबा को हुई तो गोया सबकी अक़्ल ने काम करना बंद कर दिया । हजरत उमर जैसे बड़े सहाबी अत्यंत दुख के कारण आप की मौत ही का इनकार करने लगे । हजरत अबू बकर उस वक्त तशरीफ़ लाए और एक छोटा सा दिया । जिसमें लोगों को धैर्य बनाए रखने की बात कही और फरमाया के जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत करता था वो जान ले के आप वफात पा गए और जो अल्लाह की इबादत करता था तो समझ ले कि वह हमेशा से जिंदा है और हमेशा जिंदा रहेगा । यह सुनकर सहाबा को कुछ होश आया ।

क्योंकि आप के बाद आपके उत्तराधिकारी और खलीफा का होना जरूरी था । इस काम के होने होने में कुछ देर हुई , इसलिए पीर के बाक़ी दिन से बुध की रात तक रुका गया । बुध की रात में हजरत अली और हजरत अब्बास वगैरह ने आपको ग़ुस्ल और कफ़न दिया । फिर बगैर इमाम के 10 , 10 आदमियों ने खुद नमाजे जनाजा पढ़ी । फिर आपके इरशाद के मुताबिक

हजरत आयशा के हुजरे में उसी जगह क़ब्र खोदी गयी जहां वफात हुई थी । हज़रत अबु तल्हा ने कब्र खोदी और हजरत अली व अब्बास वगैरह ने क़ब्र में रखा । आप की क़ब्र एक बालिश्त ऊंची रखी गई ।

आप स० कैसे दिखते थे

रसूल पाक स० का सिर कमजोर और पतला नहीं था बल्कि भारी और बड़ा था (शरीर के लिए बहुत बड़ा ना था । बिल्कुल फिट था)। गर्दन लंबी थी (शरीर के लिए फिट)। बाल दोनों कानों के आधे हिस्से तक थे, और कभी-कभी कानों के नीचे भी और कभी-कभी दोनों कंधों को छूते हुए भी । आपके माथे पर कुछ बाल भी सफेद थे, सिर और दाढ़ी में कुल 20 बाल सफेद थे । आपके सिर के बाल थोड़े घुंघराले थे, आप अपने सिर और दाढ़ी में कंघी करते थे और सिर के बीच से मांग निकालते थे ।
रसूल ए पाक स० का चेहरा बहुत आकर्षक , साफ़ एवं गोरा हल्का केसरी पन लिए हुए , चौदहवीं रात के चाँद की तरह जगमगाता हुआ , जब आप स० खुश होते तो चेहरा चांद के टुकड़े की तरह दमक उठता था । धारियां चमकीले बादल की तरह चमकती थीं । और ऐसा लगता था कि सूरज आप स० के चेहरे पर चल रहा हो (यानी इतना प्रकाशमय चेहरा था) ।
आप स० के चेहरे पर पसीना मोती की तरह लगता था । आपका पसीना शुद्ध कस्तूरी से भी अधिक सुगंधित था । और जब पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) गुस्से में होते, तो चेहरा लाल हो जाता था मानो अंगूर

उनके आशीर्वादित चेहरे पर छलनी हो गया हो । आपके दोनों गाल हल्के और माथा चौड़ा , भौंहें पतली और परिपूर्ण थीं, और एक रिवायत के हिसाब से वे नहीं मिले हुए थीं और ये भी कहा जाता है कि भवें मिली हुई नही थीं । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आंखें बड़ी थीं, और उनकी सफेदी लाल रंग की थी, उनकी आंख की पुतली काली थी , पलकें लंबी और घनी थी । कोई देखता तो ऐसा लगता जैसे अपने सुरमा लगाया हुआ हो । इसके अलावा, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाक ऊंची थी ।दोनों कान भरे हुए थे और मुंह सुंदर और बड़ा था । दो सामने के दांतों के बीच थोड़ी दूरी थी, बाकी दांत भी अलग थे । आपकी की दाढ़ी बहुत खूबसूरत, घनी , कनपटी से कनपटी तक भरी हुई,पूरे सीने को भरी हुई , काली थी । सिर्फ़ कनपटीयो में कुछ बाल सफ़ेद थे बाकी पूरी दाढ़ी और बाल काले थे ।
आप स० की क़द काठी ऐसी थी थी के भीड़ में अलग नज़र आते थे । शरीर पूरी तरह से स्वस्थ और सुंदर था । कंधे, कोहनी और घुटने जिस्म के हिसाब से बड़ी और फिट थी । आपकी कलाई भी बड़ी थी और उनके जोड़ लंबे (शरीर के अनुसार) थे। इसके अलावा, उसकी हथेलियाँ और पैर चौड़े थे और उसका तलवा गहरा नहीं था। दोनों हाथ बर्फ की तुलना में नरम और ठंडे थे । और उनके हाथों की गंध कस्तूरी और अम्बर से अधिक थी । आपकी कोहनी के ऊपर और नीचे दोनों हाथ भारी थे और आपकी एड़ी और पिंडलियाँ हल्की थीं ।
आपके कंधों के बीच फासला था । छाती चौड़ी थी और उसके बाल खाली

थे, केवल उसके होंठों से लेकर उसकी नाभि तक बालों की एक हल्की रेखा थी । इसके अलावा, पेट और छाती पर बाल नहीं थे और आपका पेट और छाती बराबर थे । आपकी कांख का रंग मटियाला था और आपकी पीठ ढली हुई चाँदनी की तरह थी ।

47 लोग जिन पर अल्लाह और उस के रसूल की लानत है

1. माँ बाप को गाली देने वाले पर । [अहमद: 1779]
2. मोमीन को क़त्ल करने वाले पर । [सूरह अल निसा: 93]
3. बारीक कपड़ा पहनने वाली पर । [अहमद: 7063]
4. चोर पर । [बुखारी: 6783]
5. सूद खाने और खिलाने वाले पर । [मुस्लिम: 1598]
6. ज़कात न देने वाले पर । [अल तरग़ीब: 1408]
7. रिशवत लेने और देने वाले पर । [शरह सुन्ना: 2493]
8. शराब पिने और पिलाने वाले पर । [इब्न माजह: 1174]
9. तस्वीर बनाने वाले पर । [बुखारी: 2086]
10. नंगी तलवार लहराने वाले पर । [अहमद: 19533]

11. इबलीस मरदूद पर । [सूरह अल निसा: 118]

12. शिर्क करने वाले मर्दों और औरतों पर । [सूरह अल फतह: 6]

13. कुफ्र की हालत मे मरने वालों पर । [सूरह अल बक़रह: 161-162]

14. मुनाफिक़ो पर । [सूरह अल तौबा: 68]

15. काफिरो पर । [सूरह अल अहज़ाब: 64]

16 यहुदीयों और इसाईयों पर । [सूरह अल निसा: 52]

17. अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को तकलीफ देने वालों पर । [सूरह अल अहज़ाब: 57]

18. दीन से फिर जाने वालों पर । [सूरह अल इमरान: 86-87]

19. बग़ैर ज़रूरत अल्लाह के नाम पर मांगने वालों पर । [जामे सग़ीर: 5890]

20. अल्लाह के नाम पर न देने वालों पर । [जामे सग़ीर: 5890]

21. ख़ुशी के वक़्त गाने बजाने वालों पर । [सही अल तरग़ीब: 3527]

22. मुसीबत के वक़्त चीखने चिल्लाने वालों पर । [सही अल तरग़ीब: 3527]

23. झूठ बोलने वालों पर । [सूरह अल इमरान: 61]

24. ज़ालिमो पर । [सूरह अल हुद: 18]

25. अल्लाह से किये गए वादे को तोड़ने वाले पर । [सूरह अल रअद: 25]

26. रिशतेदारी तोड़ने वाले पर । [सूरह अल रअद: 25]

27. ज़मीन पर फसाद फैलाने वाले पर । [सूरह अल रअद: 25]

28. ग़ैरूल्लाह के नाम पर ज़बह करने वाले पर । [मुस्लिम: 3657]

29. क़ुरआन मे ज़ियादती करने वाले पर । [सही इब्न हब्बान: 5719]

30. तक़दीर को झुठलाने वाले पर । [सही इब्न हब्बान: 5719]

31. रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत छोड़ने वाले पर । [सही इब् हब्बान: 5719]

32. सहाबा को गाली देने वाले पर । [सहीहा: 2340]

33. ग़ैर की तरफ़ निस्बत करने वाले पर (यानी अपनी ज़ात गलत बताने वाले पर) । [मुस्लिम: 2433]

34. अंधे को गलत रास्ता बताने वाले पर । [अदाबुल मुफ़रद: 892]

35. क़ौम ए लूत का अमल करने वाले पर (लौंडेबाजी)। [हाकिम: 4/356]

36. जानवर से गलत काम करने वाले पर । [सहीहा: 3462]

37. लोगों के रास्ते पर गंदगी फेंकने वाले पर । [तबरानी औसत: 5422]

38. औरतों का तरीक़ा अपनाने वाले मर्द पर और मर्दों का तरीक़ा अपनाने वाली औरतों पर । [बुखारी: 5858]

39. नक़ली बाल लगाने वाली पर । [बुखारी: 5477]

40. जिस्म पर टेटू बनाने वाली पर । [बुखारी: 5477]

41. दीन मे नया काम निकालने वाले पर । [मुस्लिम: 3179]

42. नुहा और मातम करने वाली पर । [शुएबुल इमान: 10160]

43. दुनिया पर । [तिर्मिज़ी: 2322]

44. बीवी के साथ ग़ैर फित्री तरीक़े से जिमा करने वाले पर (अनलसेक्स)। [अबु दाऊद: 2162]

45. अहले बैत (आपकी औलाद और बीवियां) की इज़्ज़त को पामाल करने वाले पर । [सही इब्न हब्बान: 5719]

46. मर्दों का कपड़ा पहनने वाली औरत और औरतों का कपड़ा पहनने वाले मर्द पर । [अबु दाऊद: 4098]

47. पाक दामन औरतों पर इल्ज़ाम लगाने वालों पर । [सूरह अल नुर: 23]

हदीस क़ुदसी: अल्लाह पाक फरमाता है ... जब मैं किसी से नाराज़ होता हुँ तो मे उस पर लानत भेजता हुँ और मेरी लानत उसकी सातवीं औलाद तक पहुँचती है । [अहमद – ज़हद: 69]

अल्लाह हमे इन सब गुनाहों से महफूज़ रखे । आमीन

समाप्त

اللهم صلي على محمد وعلى اله واصحابه اجمعين

चालीस अहादीस

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख्स मेरी उम्मत के फायदे के लिए दीन के काम की 40 हदीसे सुना देगा और याद करेगा । अल्लाह उसको कयामत के दिन आलीमो और शहीदों की जमात में उठाएगा और फरमाएगा कि जिस दरवाजे से चाहो जन्नत में दाखिल हो जाओ (अल जामे सग़ीर) ।

इतने जबरदस्त सवाब को पाने के लिए सैकड़ों आलिमो ने अपने-अपने तर्ज में 40 हदीस लिख कर पेश की जो बहुत मशहूर और लोगों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हुई । मैं भी अल्लाह के रसूल के अल्फाजों को सच जानते हुए और अल्लाह की ज़ात पर यकीन रखते हुए इस सवाब को पाने के लिए 40 हदीस पेश कर रहा हूं । अल्लाह इस काम को कुबूल फरमाए और लोगों को फायदा पहुंचाएं । आमीन

हदीस 1 - उमर इब्न अल-खत्ताब बताते हैं: एक दिन हम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में थे, जब एक आदमी हमारे पास आया, जिसके कपड़े बहुत सफेद थे और उसके बाल बहुत काले थे । हम में से कोई भी उसे जानता नहीं था । वह घुटने टेक कर पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने बैठ गया और उसने अपने दोनों हाथ अपनी जाँघों पर रख दिए और कहा: मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में बताओ । पैगंबर ने कहा: “इस्लाम यह है कि तुम इस बात के गवाह हो जाओ कि अल्लाह के सिवा कोई भगवान नहीं है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं । नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात अदा करो । रमज़ान में उपवास करो और यदि आप कर सकते हो तो अल्लाह के घर (काबा) में हज करो ।
उन्होंने कहा: आपने सच बोला है । हमें आश्चर्य हुआ कि वह आपसे पूछते हैं और आपकी बात की भी पुष्टि करते हैं ।

उन्होंने कहा: ईमान (विश्वास) मुझे इसके बारे में बताएं, पैगंबर (शांति और अल्लाह का आशीर्वाद उस पर हो) ने कहा: "आप अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके दूतों और आखिरी दिन में विश्वास करते हों, और यह कि आप भाग्य के अच्छे और बुरे में विश्वास करते हों ।
उन्होंने कहा: आपने सच बोला है । फिर उन्होंने कहा, मुझे इहसान (नेकी) के बारे में बताएं। पैगंबर ने कहा: अल्लाह की इबादत करो जैसे कि तुम उसे देखते हो या ऐसे के वह तुम्हे देख रहा है । उन्होंने कहा, मुझे क़यामत के बारे में बताएं । पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: प्रभारी व्यक्ति इसके बारे में प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता है । उसने कहा , मुझे इसके संकेतों के बारे में बताएं । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: ' गुलाम लड़की अपने मालिक को जन्म देगी और आप नंगे पांव, नंगे शरीर वालो, और बकरियों के चरवाहों को ऊंची ऊंची इमारते बनाते और उन पर गर्व करते हुए देखोगे । उमर ने कहा: फिर वह आदमी चला गया । मैं थोड़ी देर रुका । तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मुझसे पूछा: “उमर! क्या आप जानते हैं कि प्रश्नकर्ता कौन था? ”मैंने कहा,“ अल्लाह और उसका रसूल सबसे अच्छा जानते हैं । नबी ने कहा:“ वह जिबरेल था, वह तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आया था ।

(मुस्लिम)

हदीस 2 - अपने बाप दादा के नाम की कसम ना खाओ अगर ज़रूरत पड़े तो अल्लाह की कसम खाओ वरना खामोश रहो ।

(मुस्लिम)

हदीस 3 - अल्लाह तआला अपनी मंशा से तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत फ़र्मा देता है, मगर वालदैन की नाफ़रमानी और ईज़ा रसानी (तकलीफ़ देना)करने वाले को इसी दुनिया में मरने से पहले सज़ा भुगतनी पड़ती है ।

(मिश्क़ात शरीफ़)

हदीस 4 - अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया, अल्लाह की दृष्टि में सबसे अधिक घृणात्मक वह व्यक्ति जो ज़्यादा सबसे झगड़ालू हो ।

(बुख़ारी)

हदीस 5 - पहलवान वह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे, बल्कि पहलवान वह है जो क्रोध के समय (अपने गुस्से को पछाड़ कर) अपने आप को वश में रखे ।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 6 - जब तुम सालन पकाओ तो उसमें पानी बढ़ा दो और अपने पड़ोसी का ध्यान रखो ।

(बुख़ारी)

हदीस 7 - सताए हुए की 'आह' से बचो क्यूंकि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रुकावट नहीं होती।

(बुख़ारी)

हदीस 8 - अल्लाह ने तुम्हारे लिए हराम कर दिया (अवैध ठहराया) कि तुम माँ का दिल दुखाओ, लड़कियों कि हत्या करो, कन्जूसी तथा फ़क़ीरी ग्रहण करो ।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 9 - अल्लाह उस पर दया नहीं करता जो लोगों पर दया नहीं करता ।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 10 - वह व्यक्ति हम में से नहीं जो लोगों को साम्प्रदायिकता की ओर बुलाए।

(अबू दाऊद)

हदीस 11 - हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया कि एक बार हज़रत मूसा (अ.) ने अल्लाह से पूछा कि प्रभु आप के बन्दों में से कौन आपको सबसे प्रिय है? अल्लाह ने फ़रमाया – "वह बन्दा जो सामर्थ्य होते हुए भी (बदला लेने के बजाए) क्षमा करे"।

(बेहक़ी)

हदीस 12 - तुम अपने मृतकों कि भलाइयां ही बयान किया करो और उनकी बुराईयों के वृतांत (बयान) से बचते रहो ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

हदीस 13 - अल्लाह के रसूल ने तीन बार अल्लाह की सौगन्ध ले कर कहा कि, "वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता" । पूछा गया कि "कौन, हे अल्लाह के रसूल " ? फ़रमाया, "जिसके पड़ोसी उसकी शरारत से सुरक्षित न हों" ।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हदीस 14 - वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जो भर पेट भोजन खाले जबकि उसका पड़ोसी भूखा हो।

(बेहक़ी)

हदीस 15 - निःसंदेह अल्लाह विनम्र व मेहरबान है और (अपने बन्दों में) विनम्रता व मेहरबानी को पसन्द करता है।

(मुस्लिम)

हदीस 16 - उत्तम नेकियों में से एक नेकी यह है कि कोई व्यक्ति अपने पिता के देहान्त के बाद या उसके पीछे उसके मित्रों से अच्छा व्यवहार करे ।

(मुस्लिम)

हदीस 17 - अल्लाह रफ़ीक़ (नरम) है, नरमी को पसंद करता है तथा नरमी बरतने पर वह जो कुछ देता है सख़्ती बरतने पर नहीं देता ।

(मुस्लिम)

हदीस 18 - वास्तव में, अल्लाह के लिए सबसे अच्छे लोग वे हैं जो शांति का अभिवादन शुरू करते हैं ।

(सुनन अबू दाऊद)

हदीस 19 - भलाई की राह बतलाने वाले को इतना ही सवाब मिलता है, जितना इस पर चलने वाले को मिलता है ।

(मुसनद-अहमद शरीफ़)

हदीस 20 - तुम में से कों कामिल मोमिन नहीं हो सकता यहाँ तक की अपने भाई के लिए भी वही पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है ।

(बुखारी)

हदीस 21 - जो शख्स मुझ पर एक बार दुरुद शरीफ पढ़ेगा, अल्लाह ता आला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाएगा” ।

(मुस्लिम)

हदीस 22 - नमाज़ दीन का सुतून है

(बैहकी)

हदीस 23 - जिसने ईमान की हालत में सवाब की नियत से रोज़े रखे तो उसके साबिका (पिछले) गुनाह बख्श दिए जाते हैं ।

(बुखारी)

हदीस 24 - तुम में सबसे बेहतर वो लोग हैं जिनके अखलाक सबसे अच्छे हैं ।

(बुखारी)

हदीस 25 - रिश्तेदारी तोड़ने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा ।

(बुखारी)

हदीस 26 - चुगलखोर जन्नत में दाखिल नहीं होगा

(मुस्लिम)

हदीस 27 - वो शख्स हम में से नहीं है जिसने छोटों पर रहम ना किया और बड़ों की इज्ज़त ना की ।

(तिरमिज़ी)

हदीस 28 - इल्म हांसिल करना हर मुसलमान (मर्द व औरत) पर फ़र्ज़ है ।

(मुस्लिम)

हदीस 29 - पाकीज़गी ईमान का हिस्सा है ।

(मुस्लिम)

हदीस 30 - कुरआन पढने वाले और उस पर अमल करने वाले की हर दुआ मकबूल हौती है ।

(शुअबुल ईमान)

हदीस 31 - तुम में से बेहतर वो शख्स है जो कुरआन करीम सीखे और सिखाए ।

(बुखारी)

हदीस 32 - मुसलमान वो है जिसने अपनी जुबान और अपने हाथ से दुसरे मुसलमानों को महफ़ूज़ रखा ।

(बुखारी)

हदीस 33 - हर मुसलमान पर दुसरे मुसलमान की इज्ज़त (की पामाली) उसका माल और उसका खून हराम है ।

(तिरमिज़ी)

हदीस 34 - एक मुसलमान दुसरे मुसलमान का भाई है वो न तो उस पर ज़ुल्म करता है न (मुश्किल हालात में) उसे बे यारो मदद गार छोड़ता है जो शख्स अपने (मुसलमान) भाई के काम आता रहता है अल्लाह ता आला उसके काम में (मदद करता) रहता है और जो शख्स किसी मुसलमान की दुनियावी मुश्किल हाल करता है अल्लाह ता आला उसकी उखरवी मुश्किलात में से कोई मुश्किल हाल फरमाएगा और जो शख्स किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करता है अल्लाह ता आला क़यामत के दिन उसकी पर्दा पोशी फरमाएगा ।

(बुखारी)

हदीस 35 - एक देहाती शख्स ने हुजुर नबिये अकरम स.अ.व. से दरयाफ्त किया या रसूलल्लाह क़यामत कब आएगी? आप स.अ.व. ने फ़रमाया तूने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है, उसने अर्ज़ किया अल्लाह ता आला और उसके रसूल स.अ.व. की मुहब्बत (यही मेरा सरमाया ए हयात है)आप स.अ.व. ने फ़रमाया तु उसी के साथ होगा जिससे तुझे मोहब्बत है ।

(बुखारी)

हदीस 36 - मेरी उम्मत में मुझसे सबसे ज्यादा मुहब्बत करने वाले वो लोग हैं जो मेरे बाद होंगे उनमे से हर एक शख्स की आरजू होगी की काश वो अपने तमाम अहलो अयाल और मालो दौलत को कुर्बान करके मेरी जियारत करे ।

(मुस्लिम)

हदीस 37 - कयामत के दिन लोगो में सबसे ज्यादा मेरे करीब वो शख्स होगा जिसने उनमे से सबसे ज्यादा मुझ पर दरूद भेजा होगा ।

(तिरमिज़ी)

हदीस 38 - सुबह के वक़्त तुम्हारा इल्म का कोई बाब सीखना, चाहे उस पर अमल हुआ या ना हुआ, वो तुम्हारे एक हज़ार रकात नाफिल अदा करने से बेहतर है ।

(इब्ने माजा)

हदीस 39 - तुम में से सबसे ज्यादा महबूब और क़यामत के दिन मेरे नज़दीक तरीन बैठने वाले वो लोग हैं जो तुम में से अखलाक में अच्छे हैं ।

(तिरमिज़ी)

यक़ीनन मोमिन हुस्ने अखलाक (अच्छे आचरण) के ज़रिए दिन को रोज़ा रखने वाले और रातों को इबादत करने वाले का दर्जा हांसिल कर लेता है ।

(सुनन अबू दाउद)

सय्यद सना उल्लाह काज़मी (सैदपुर कलां , मुज़फ़्फ़र नगर)